• जयपुर, रविवार 24 नवंबर 24 • वर्ष 14 • अंक 96 • पृष्ठ : 8 • मूल्य : 1 रुपये

www.chamaktarajasthan.in| Email : chamaktarajasthan8789@gmail.com

डाक पंजीयन संख्याः RJ/JPC/D19/2024-25

RNI. No. RAJHIND/2011/40950

दैनिक राज्य तथा केंद्र द्वारा मान्यता प्राप्त

सच के साथ मजबूती से बढ़ाये क़दम

चमकता राजस्थान

विज्ञापन के लिए : 93145 05000

जयपुर से प्रकाशित एवं प्रसारित

अजमेर, सीकर, झुंझनूं, सवाईमाधोपुर, चित्तौड़गढ़, बूँदी, धौलपुर, हिंडौन, भरतपुर, झालावाड़, जोधपुर, बीकानेर से प्रसारित

सुविचार

''सत्य को हज़ार तरीकों से बताया जा सकता है, फिर भी हर एक सत्य ही होगा।''

● **स्वामी विवेकानंद**

पेज @3 उर्स मेले के दौरान अज़मेर शहर में भी बनी रहे पर्याप्त जलापूर्ति, ड्रेनेज की योजना...

पेज @4 "ऑपरेशन भौकाल" के तहत बाड़मेर डीएसटी व थाना कोतवाली पुलिस की...

पेज @8 भजनलाल सरकार के जनहित विकास की भागीरथी की वजह से ही विधानसभा...

राजस्थान उपचुनाव में भाजपा ने मारी बाजी 7 में से 5 सीटों पर किया कब्जा

चमकता राजस्थान

झुंझुनूं, खींवसर, देवली-उनियारा, सलूंबर, रामगढ़ भाजपा का कब्जा

जयपुर। राजस्थान उपचुनाव की सातों सीटों का परिणाम आ गया है। इनमें से 5 सीटों (खींवसर, झुंझुनूं ,देवली उनियारा, सलूंबर, रामगढ़) पर बीजेपी जीती है। एक सीट (चौरासी) पर भारतीय आदिवासी पार्टी ने जीत दर्ज की है। उधर, दौसा में कांग्रेस के दीनदयाल बैरवा जीते हैं। यहां रिकाउंटिंग भी हुई, पर मतगणना में कोई अंतर नहीं आया। इस सीट पर भाजपा सरकार में मंत्री किरोड़ीलाल मीणा के भाई जगमोहन मीणा भाजपा प्रत्याशी थे । खींवसर से कांग्रेस प्रत्याशी डॉ. रतन चौधरी को जमानत जब्त हो गई। सलूंबर से भाजपा प्रत्याशी मीना ने अंतिम राउंड में जीत दर्ज की। शांता ने बाप प्रत्याशी जितेश कुमार कटारा को शिकस्त दी है। दौसा विधानसभा सीट से कृषि मंत्री किरोड़ीलाल मीणा के भाई जगमोहन मीणा हार गए हैं। झुंझुनूं विधानसभा सीट से बीजेपी प्रत्याशी राजेंद्र भांबू देवली- उनियारा में भाजपा के राजेंद्र गुर्जर, रामगढ़ से भाजपा प्रत्याशी सुखवंत सिंह ने जीत दर्ज की है। वहीं चौरासी विधानसभा सीट से भारतीय आदिवासी पार्टी प्रत्याशी अनिल कुमार कटारा ने बाजी मारी है। जिन 7 सीटों पर उपचुनाव हुए हैं, उनमें से एक भाजपा, एक बीएपी, एक हनुमान बेनीवाल की पार्टी आरएलपी और 4 कांग्रेस के पास थी। पांच सीटों पर विधायकों के सांसद बनने और दो पर विधायकों के निधन की वजह से उपचुनाव हुए हैं। खींवसर में हनुमान बेनीवाल की पत्नी कनिका बेनीवाल को भाजपा के रेवंतराम डांगा ने 13 हजार से ज्यादा वोटों से हराया है। इसी तरह, सलूंबर विधानसभा क्षेत्र के आखिरी राउंड में बाजी पलट गई और भाजपा की शांता देवी मीना ने बाजी मारी ।

1-1 सीट पर कांग्रेस व भारतीय आदीवासी पार्टी ने जीत दर्ज की

कांग्रेस की झूठ और भ्रम की राजनीति को वोट से मिला जवाब : मुख्यमंत्री शर्मा

भाई जगमोहन मीणा की हार पर किरोड़ी का दर्द

लिखा-मुझे अपनों ने मारा

दौसा सीट से भाई जगमोहन मीणा की हार के बाद मंत्री डॉ किरोड़ीलालमीणा का दर्द फूट पड़ा है। किरोड़ीलाल मीणा ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लगातार छह पोस्ट करके अपनी ही पार्टी के लोगों पर हरवाने का इशारा करते हुए भीतरपात के आरोप लगाए हैं। किरोड़ी ने बीजेपी के नेताओं पर भी इशारों में गंभीर आरोप लगाए हैं। किरोड़ी ने लिखा- मुझे तो सदा ही अपनों ने ही मारा है। मुझमें बस एक ही कमी है कि मैं चाटुकारिता नहीं करता। इसी प्रवृत्ति के चलते मैंने राजनीतिक जीवन में बहुत नुकसान उठाया है। भाई का कर्ज नहीं चुका पाया। किरोड़ी ने लिखा 45 साल हो गए। राजनीति के सफर के दौरान सभी वर्गों के लिए संघर्ष किया। जनहित में सैकड़ों आंदोलन किए। साहस से लड़ा। बदले में पुलिस के हाथों अनगिनत चोटें खाई। आज भी बदरा भिरते हैं तो समूचा बदन कराह उठता है।

मुख्यमंत्री की उपचुनाव परिणामों पर प्रतिक्रिया

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव और राजस्थान में 7 सीटों पर उपचुनाव में भारतीय जनता पार्टी को मिली प्रचंड जीत को ऐतिहासिक बताते हुए प्रसन्नता व्यक्त की है। शर्मा ने कहा कि इस जीत से देश के मतदाताओं ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी की नीतियों और हमारी सरकार के विकास कार्यों पर अपनी मोहर लगा दी है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि यह जीत भाजपा के कर्मठ कार्यकताओं के समर्पण का परिणाम है। उन्होंने कहा कि राजस्थान उपचुनावों में हमने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की नीतियों एवं 11 महीने में भाजपा सरकार के कार्यकाल में प्रदेश में हुए विकास कार्यों को मतदाताओं तक पहुंचाने का प्रयास किया। इसी का परिणाम है कि इस उपचुनाव में भाजपा को 2023 के विधानसभा चुनावों में मिले वेटी से 15 प्रतिशत अधिक वोट प्राप्त हुए है। उन्होंने कहा कि आज भारतीय जनता पार्टी एवं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पंडित दीनदयाल उपाध्याय के संकल्पित राजनीति को जनता ने अपने वोट से जवाब दिया है। शर्मा ने कहा कि हम राजस्थान के विकास के लिए कृत संकल्पित है। और इस जीत ने हमारे इस इरादे को और भी मजबूत कियाहै। उपचुनाव रिजल्ट से जुड़े बड़े अपडेट झुंझुनूं सीट कांग्रेस हार गई है। 21 साल बाद पार्टी ने यहां हार का स्वाद चखा है। इससे पहले 2003 में सुमित्रा सिंह यहां से जीती थी। इसके बाद से यह सीट कांग्रेस के कब्जे में है। राजनीतिक इतिहास की सबसे बड़ी जीत है ड्ड खींवसर में आरएलपी और भाजपा के बीच कड़ी टक्कर देखने को मिली । यहां आरएलपी से हनुमान बेनीवाल की पत्नी कनिका बैनीवाल चुनाव मैदान में थी । यह सीट आरएलपी हार गयी है अब तो उसके पास राजस्थान में एक भी विधायक नहीं बचा। भाजपा से मंत्री किरोड़ीलाल मीणा को तगड़ा झटका लगा है। यहांदौसा से उनके भाई जगमोहन मीणा हार गए हैं। किरोड़ी ने लोकसभा चुनाव में भी भाई को टिकट दिलाने की कोशिश की थी।उठा-पटक से चर्चा में आई देवली-उनियारा सीट पर निर्दलीय नरेश मीणा दूसरे और कांग्रेस के केसी मीणा तीसरे नंबर पर थे।देवली-उनियारा में भाजपा के राजेंद्र गुर्जर ने बाजी मारी। सलूंबर विधानसभा क्षेत्र में आखिरी राउंड से पहले तक इअढ के जितेश कुमार कतारा आगे चल रहे थे। आखिरी राउंड की गिनती के साथ ही भाजपा प्रत्याशी शांता देवी मीना के खाते में सीट आ गई।

संक्षिप्त खबरें

प्रियंका गांधी ने वायनाड लोकसभा सीट 4 लाख से अधिक वोटों से जीती

नई दिल्ली। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की महासचिव और पार्टी उम्मीदवार प्रियंका गांधी वाड्रा ने शनिवार को वायनाड लोकसभा सीट के उपचुनाव में 4,10,931 वोटों के भारी अंतर से पहली चुनावी जीत दर्ज की। प्रियंका ने अपने भाई राहुल गांधी की जीत के रिकॉर्ड अंतर को भी तोड़ दिया, जिन्होंने इसी साल अप्रैल में वायनाड लोकसभा क्षेत्र के लिए हुए चुनाव में 3,64,422 वोटों के अंतर से जीत हासिल की थी। हालांकि 2019 के लोकसभा चुनाव में राहुल गांधी ने वायनाड सीट 4.31 लाख वोटों के अंतर से जीती थी। चुनाव आयोग के अनुसार प्रियंका गांधी वाड्रा को 6,22,338 वोट मिले, जबकि उनके प्रतिद्वंद्वी भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के उम्मीदवार सत्यन मोकेरी को 2,11,407 वोट मिले और भारतीय जनता पार्टी उम्मीदवार नव्या हरिदास को 1,09,939 वोट मिले।

असम की सभी पांच विस सीटों पर एनडीए विजयी

गुवाहाटी। असम की पांच विधानसभा सीटों पर हुए उपचुनाव में एनडीए उम्मीदवारों ने जीत दर्ज की है। चुनाव परिणाम को लेकर एनडीए खेमा उत्साहित है। राजनीतिक विश्लेषक इस चुनाव परिणाम को 2026 के असम विधानसभा चुनाव परिणाम का ट्रेलर मान रहे हैं। इस चुनाव परिणाम के साथ ही कई मिथक टूट गए हैं। खासकर राज्य की सामागुरी सीट पर भाजपा उम्मीदवार दिप्लू रंजन शर्मा की जीत महत्वपूर्ण है, क्योंकि इस सीट पर मुस्लिम मतदाताओं ने भी भाजपा उम्मीदवार को वोट दिए हैं। इससे जाहिर होता है कि आने वाले चुनाव में भाजपा के प्रति राज्य के मुस्लिम मतदाताओं का रुझान बढ़ने वाला है।

बाउरी ने स्वीकारी हार

रांची। भाजपा के पूर्व विधायक सह नेता प्रतिपक्ष अमर कुमार बाउरी ने हार स्वीकार कर ली है। उन्होंने एक्स पर पोस्ट में लिखा है- क्या हार में, क्या जीत में किंचित नहीं भयभीत मैं, कर्त्तव्य पथ पर जो भी मिला ये भी सही, वो भी सही, वरदान नहीं मांगूंगा, हो कुछ पर हार नहीं मानूंगा और मजबूती से वापस आऊंगा। अमर बाउरी को झामुमो के उमाकांत रजक ने भारी अंतर से पराजित किया है।

महाराष्ट्र में महायुति को प्रचंड बहुमत

लगाई जीत की हैट्रिक, पहली बार पार किया 200 का आंकड़ा

एजेंसी

मुंबई। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में बीजेपी ने जीत की हैट्रिक लगाई है। महायुति ने महाराष्ट्र की सत्ता में बैठने के लिए बहुमत का आंकड़े 145 से भी अधिक 200 का आंकड़े को पार कर लिया है। बीजेपी 125 शिंदे की शिवसेना और अजित पवार भी पावरफुल बनकर उभरे। एनसीपी का स्ट्राइक रेट 70 फीसदी से अधिक रहा। वह चाचा शरद पवार पर विधानसभा में भारी पड़े। अघाड़ी महाराष्ट्र चुनाव में पूरी तरह धूल फांकती नजर आई। महाविकास अघाड़ी की कोई पार्टी 28 का आंकड़ा नहीं छू पाई, जो नेता प्रतिपक्ष की सीट के लिए जरूरी है। उद्धव ठाकरे ने इस जनादेश पर हैरानी जताई। महाराष्ट्र चुनाव में इस प्रचंड जीत का सबसे बड़ा कारण लोकसभा चुनाव में महायुति की हार है, जिसके बाद बीजेपी ने अचानक से रणनीति बदल दी। पूरे चुनाव में महायुति एकजुट नजर आई और सभी सहयोगी चुनावी एजेंडे पर एकजुट रहे। चुनाव से पहले सीएम के चेहरे को लेकर तनातनी और बयानबाजी ने भी अघाड़ी की गाड़ी पर ब्रेक लगा दिया।

लाडली बहनों ने दिया महायुति का साथ

महाराष्ट्र चुनाव से पहले शिंदे सरकार ने लाडली बहना योजना शुरू की, जिसमें महिलाओं के लिए 1500 रुपये हर महीने दिए गए। चुनाव प्रचार के दौरान महायुति ने इस राशि को 2100 रुपये हर महीने देने का वादा किया। इसके अलावा किसानों के लिए कर्जमाफी का वादा भी किया। महायुति के तीनों घटकों ने लाडली योजना को हर तरह से भुनाने की कोशिश की। रिपोर्टस के अनुसार, इसके प्रचार पर ही 200 करोड़ रुपये खर्च किए गए। 20 नवंबर को भी एक किस्त जारी की गई। चुनाव में इसका असर यह रहा कि महिलाएं वोट के लिए बाहर निकलीं। धुले में महिलाओं ने रात तक मतदान किया।

सीएम एकनाथ शिंदे बने तुरुप का पत्ता

उद्धव ठाकरे की सरकार गिराकर सीएम बनने वाले एकनाथ शिंदे इस चुनाव के तुरुप का पत्ता बनकर उभरे। उद्धव गुट से 'गद्दार' और 'धोखेबाज' जैसी आलोचना झेलने के बाद उन्होंने ढाई साल में विकास करने वाले और आम लोगों के बीच रहने वाले नेता की छवि बनाई। उन्होंने हमेशा बाल ठाकरे की तस्वीर रखकर यह जताने में सफल रहे कि उद्धव ठाकरे सत्ता के लिए उनके आदर्शों को भूल चुकी है। अनुभवी राजनेता की तरह शिंदे ने चुनाव से पहले ही तय कर दिया कि महायुति की सरकार के लिए वह अपनी कुर्सी का त्याग कर सकते हैं। लाडली बहन योजना, बेरोजगारों को भत्ता जैसे स्कीम के कारण वह देवेंद्र फडणवीस और उद्धव से भी ज्यादा लोकप्रिय सीएम साबित हुए। टिकट के बंटवारे के दौरान भी वह कहीं बीजेपी के सामने कमजोर नजर नहीं आए और सभी भरोसेमंद को टिकट दिया।

महाराष्ट्र में चल गया बंटेंगे तो कटेंगे का जादू

बीजेपी की ओर से योगी आदित्यनाथ और पीएम नरेंद्र मोदी ने चुनाव प्रचार में एक बड़ी लकीर खींच दी। योगी ने 'कटेंगे तो बंटेंगे' का नारा दिया। पीएम मोदी ने भी 'एक है तो सेफ हैं' जैसी अपील कर योगी के नारे को कल्ट बना दिया। चुनाव के बीच वक्फ बोर्ड की ओर से जिस तरह जमीन पर दावे किए गए, उससे आम वोटरों के बीच इस नैरेटिव को ताकत मिल गई। मुस्लिम संगठनों की ओर से महाविकास अघाड़ी के लिए वोटिंग करने का फतवा भी महायुति के लिए वरदान साबित हुआ। देवेंद्र फडणवीस और असदुद्दीन औवैसी के बीच राजनीतिक बहस, अकबरुद्दीन ओवैसी के चुनावी भाषण '15 मिनट अभी बाकी हैं' ने भी हिंदू वोटरों को एकजुट कर दिया। अब नतीजा सबके सामने हैं, बीजेपी अपने दम पर 2014 से भी बड़ी जीत हासिल कर चुकी है।

झारखंड में हेमंत सोरेन की बड़ी जीत

नईदिल्ली/एजेंसी। महाराष्ट्र और झारखंड का सियासी भविष्य आज सामने आ जाएगा. नतीजे सामने आने के बाद तय होगा कि महराष्ट्र में किसकी सरकार होगी.रुझानों में महायुति की महाराष्ट्र में दोबारा सरकार बन रही है. दूसरी ओर झारखंड में झामुमो गठबंधन बड़ी जीत की ओर बढ़ रही है. महराष्ट्र में अकेले भाजपा 131 सीट पर आगे हैं। वहीं कुल 221 सीटें पर महायुति आगे है। झारखंड की बात की जाए यहां पर झामुमो गठबंधन आगे चल रहा है। इस समय वह 49 सीटों पर आगे है। झारखंड की 81 विधानसभा सीटों पर दो चरणों पर मदतान होगा. पहले चरण में 13 नवंबर को था. इसमें 43 सीटों पर 66.65 मतदान हुआ. वहीं दूसरे चरण में 20 नवंबर को था.

उप चुनाव | उत्तर प्रदेश विधानसभा उप चुनाव में राजग को यूपी का साथ

नौ सीटों के उपचुनाव में सात सीटों पर कब्जा

एजेंसी

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में विधानसभा की नौ सीटों के उपचुनाव में भाजपा-नीत राजग ने सात सीटें जीती हैं। इसमें से छह पर भारतीय जनता पार्टी और एक सीट पर राजग के घटक दल रालोद ने जीत हासिल की। वहीं भारतीय जनता पार्टी ने समाजवादी पार्टी के हिस्से की कुंदरकी और कटेहरी सीट भी जीत ली। इन दोनों सीटों पर नया इतिहास लिखा गया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भाजपा व रालोद प्रत्याशी के पक्ष में पांच दिन में 15 चुनावी कार्यक्रम किए थे। योगी ने फूलपुर, मझवा, खैर व कटेहरी में दो-दो रैली कीं। गाजियाबाद में भी मुख्यमंत्री ने एक रैली व एक रोड शो कर कमल को फिर से खिलाने की अपील की। कुंदरकी व मीरापुर में भी योगी की रैली हुई। इसका असर यह हुआ कि कुंदरकी में भाजपा ने जीत हासिल की।

कटेहरी में तीन दशक बाद कमल का कमाल

कटेहरी में लगभग तीन दशक से अधिक समय से इस सीट पर भाजपा को जीत नहीं मिल पा रही थी, लेकिन इस बार उपचुनाव में योगी के नेतृत्व में कटेहरी में भी कमल ने कमाल कर दिखाया। भाजपा प्रत्याशी धर्मराज निषाद ने तीन दशक बाद यहां कमल खिलाया। निषाद ने न सिर्फ सपा से यह सीट छीनी, बल्कि सपा प्रत्याशी शोभावती वर्मा को 34,514 के बड़े अंतर से हराया।

कुंदरकी में भी खिला कमल

वर्ष 2022 विधानसभा चुनाव में कुंदरकी में सपा ने जीत हासिल की थी। इस सीट पर भी विधायक के सांसद चुने जाने के कारण यहां उपचुनाव हुआ। इस सीट पर काफी समय से सपा का कब्जा था, लेकिन 2024 में हुए उपचुनाव में आदित्यनाथ के नेतृत्व में यह सीट भाजपा के खाते में गई। भाजपा उम्मीदवार रामवीर सिंह ठाकुर ने सपा के मो. रिजवान को बड़े अंतर से पराजित किया।

मझवा, फूलपुर, गाजियाबाद, खैर व मीरापुर में भी भाजपा जीती

मझवा, फूलपुर, गाजियाबाद, खैर के साथ ही मीरापुर में भी रैलियों से चल रही योगी-योगी की गूंज शनिवार को जीत के बाद और तेज होती गई। मीरापुर में रालोद व अन्य सीटों पर भाजपा ने जीत हासिल की। मझवा में विनोद बिंद, फूलपुर से प्रवीण पटेल, गाजियाबाद से अतुल गर्ग, खैर से अनूप प्रधान वाल्मीकि व मीरापुर से चंदन चौहान के सांसद चुने जाने के बाद यहां उपचुनाव कराए गए। इन सीटों को बरकरार रखते हुए भाजपा ने अन्य सीटों पर जीत हासिल की।

महाराष्ट्र के नतीजों पर पीएम ने जताया आभार

यह विकास और सुशासन की ऐतिहासिक जीत : मोदी

एजेंसी

नई दिल्ली। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के निर्णायक नतीजों पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वहां की जनता का आभार जताया है। शनिवार को उन्होंने ट्वीट के माध्यम से कहा कि एनडीए को ऐतिहासिक जनादेश देने के लिए महाराष्ट्र के मेरे भाई-बहनों, खासकर राज्य के युवाओं और महिलाओं का हार्दिक आभार। यह स्नेह और गर्मजोशी अद्वितीय है। उन्होंने विश्वास जताया कि महायुति गठबंधन महाराष्ट्र की प्रगति के लिए काम करता रहेगा।

जमीन पर उनके प्रयासों के लिए प्रत्येक एनडीए कार्यकर्ता पर

गर्व व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि जमीनी स्तर पर काम करने वाले हर एक कार्यकताओं ने कड़ी मेहनत की, लोगों के बीच गए और हमारे सुशासन के एजेंडे पर विस्तार से बात की। इस ऐतिहासिक जीत को सुशासन और विकास की जीत बताते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि एकजुट होकर हम और भी ऊँचे उठेंगे।

साहित्य की तीन पीढ़ियां और 'ज्ञानरंजन 88 के हो गये'

कथाकार ज्ञानरंजन 88 के हो गए। नई पीढ़ी की डिजिटल समझ शायद यह पढ़कर उन्हें गूगल में सर्च करने लगेगी। पर जबलपुर और देश-विदेश में उनके समकालीन और आगे-पीछे की तीन पीढ़ियां उनके अवदानों से ज्यादा उनके करिश्माई व्यक्तित्व के प्रभामंडल से आज तक नहीं उबर पाई हैं। एक जीवन कितना सहेज सकता है, बांट सकता है, लिपिबद्ध कर सकता है ज्ञानरंजन इसके एक बेशकीमती उदाहरण हैं। एक गांधीवादी साहित्यसेवी परिवार की संतान हैं ज्ञानरंजन। बचपन में चंचल स्वाभाव के थे तो किशोर वय और युवा अवस्था में उनका स्वर विद्रोही रहा। विचारों में विद्रोह, सामाजिक पैमानों के प्रति विद्रोह, अंतरंग रिश्तों के प्रति दृष्टिगत विद्रोह। उनके सारे नजरिए बिलकुल अलहदा थे। उसी से निकलकर आया कथाकार ज्ञानरंजन। जिनकी रचनाधर्मिता ने पिछली सदी के साठ के दशक की कहानियों को क्रांतिकारी मोड़ दिया। काल्पनिक कहानियों के दौर में उनके कथानक की साफगोई लेखन में परिवर्तन के संकेत बन गए जो आज भी दिशासूचक यंत्र बने हुए हैं। वैसे उनके जीवन का बड़ा हिस्सा हिन्दी की प्रोफेसरी में गुजरा। शेष पत्रिका पहल के संकलन संयोजन और संपादन में। इन्हीं के समानांतर उनकी कलम साहित्य और पत्रकारिता में प्रयोगधर्मिता और बोधगम्यता के साथ चलती रही। उम्र के इस पड़ाव पर किसी भी व्यक्ति का आकलन बहुत आसान हो जाता है। जीवन को टुकड़ों में नही देखा जा सकता है। और ये कसौटी समय सापेक्ष खरी भी नहीं उतरेगी।

जीवन का समग्र आकलन ही व्यक्ति का सच्चा और निष्पक्ष आकलन होता है। ज्ञानरंजन का आरंभ एक अनगढ़ता और उनकी वैचारिक ऊहापोह के बीच होता है जो शनैः शनैः स्थिरता प्राप्त करता चला गया। स्वाध्याय के प्रति उनके आग्रह,उत्सुकता और प्रयासों से वे वैश्विक साहित्य के प्रति आर्कषित हुए वहीं पारिवारिक परिवेश और पिता रामनाथ "सुमन"का लेखकीय दृष्टिकोण उनका मार्गदर्शक बना रहा। अध्ययन और अध्यापन उनका प्रिय शगल है। अध्यापन की उनकी अपनी एक विशिष्ट शैली थी जो उन्हें अपने समकालीन शिक्षकों से इतर एक वैशिष्ट्य प्रदान करती है। बिना किताबी सहारा लिए धारा प्रवाही अभिव्यक्ति उस पीढ़ी के छात्रों को आज भी चमत्कृत करती है। अनुभवों का एक ठोस धरातल उन्होंने अपने सिनैमेटिक विजन से तैयार किया और यथार्थ की कसौटी पर कसा तभी उनके शब्द उनके विचार उनकी शैली लेखन और वाचन निराला और मर्मस्पर्शी होता है। कह सकते हैं ये रेयरेस्ट आफ रेयर के पास होता है। कभी कामरेड कहलाने वाले ज्ञानरंजन मार्क्सवादी चिंतन के थिंक टैंक थे। मार्क्स, लेनिन और अन्य रूसी लेखकों के अनुगामी भी थे। लेकिन आज वे समाजवादी जीवन शैली का हिस्सा प्रतीत होते हैं। पर ये यू टर्न नहीं है वरन उनके वैचारिक परिवर्तन का क्रमिक सोपान है। पिता सुमनजी देश के श्रेष्ठ अनुवादकों में एक थे। घर पर उनके समकालीन शब्द शिल्पियों का आना जाना लगा रहता था उन्हीं के सानिध्य में ज्ञानरंजन खुद को तराश रहे थे। निखर रहे थे प्रखर हो रहे थे। अकोला में वे पैदा हुए। इलाहाबाद (प्रयागराज) में परवरिश। फिर जबलपुर को कृतित्व और व्यक्तित्व से पहचान दी फिर इसी शहर की पहचान बन गए और अंततः यहीं के हो गए। पहल का संपादन उनकी स्वतः स्फूर्त पहल था जो आज संग्रहालयीन संपत्ति बन चुका है। उत्कृष्टता इस पत्रिका की पहचान है।

देश और काल की सीमाओं का अतिक्रमण, नव लेखकों की पड़ताल ज्ञानरंजन की एकाकी साधना से ही संभव हो सका। उनका श्रेष्ठतम जनसंपर्क भी इसके प्रकाशन में सहभागी बना। एक दौर उनकी पत्रकारिता का भी लोगों ने देखा जब शहर में ज्ञानयुग अखबार निकला तब सोशल मीडिया का दौर नहीं था कंधे पर थैली, जीन्स पर खड़े कॉलर वाला कुर्ता पैरों में सामान्य चप्पलें पहने ज्ञानरंजन आर्कषण का केन्द्र हुआ करते थे। मिलनसारिता, लोगों की हौसला अफजाई करना, उनके तार्किक ज्ञान से ऊपर नजर आता था। कुछ लोगों की बहस का विषय होता है ज्ञानरंजन कथाकार अच्छे हैं या संपादक। कथानक अनुभवों से बेहतर बनता है और संपादकत्व समीचीन हो तो अच्छा लगता है। उनके पास दोनों में महारत है। पर मुझे लगता है ज्ञानरंजन यदि आलोचक होते तो श्रेष्ठतम आलोचकों में उनका शुमार होता। पर आलोचक कभी भी प्रभावी लेखक नहीं हो सकता है। ऐसे में शायद हम सभी उनके लेखन, चिंतन, और वृक्तत्व प्रस्तुतियों से वंचित रह जाते। सोवियत लैंड पुरुस्कार, मैथलीशरण सम्मान, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय की मानद डाक्टरेट, गुलजार के हाथों प्रदत्त अमर उजाला का सम्मान और उनके लेखन पर हुए अनेकों प्रकाशन से दूर ज्ञानरंजन अपने चुम्बकीय आर्कषण से चीन्हें जाते हैं। साल दर साल उन्हें एक नए एंगल से देखा जा सकता है हर बार उनमें कुछ नया मिल जाता है, और कुछ बाकी रह जाता है। बहरहाल उनकी मौजूदगी और उम्र के नवमें दशक का ये जन्मदिवस (21 नवंबर) उनके चाहने वालों और आलोचकों के लिए उपहार है।

निशाने पर रहते हैं गौतम अडानी!

मनोज कुमार अग्रवाल

पिछले कुछ सालों में तेजी से उभरे भारतीय उद्योगपति गौतम अडानी अक्सर निशाने पर बने रहते हैं चाहे देश के विपक्षी दल के नेता हो या सरकार के विरोधी आरोप हमेशा अडानी पर लगाते हैं। हाल ही में अमेरिकी एजेंसियों द्वारा लगाए गए रिश्वतखोरी के आरोप से भारत सहित पूरी दुनिया में खलबली मचना स्वभाविक है, क्योंकि अडानी ग्रुप का कारोबार पूरी दुनिया भर में फैला हुआ है। अमेरिकी एजेंसियों के तरफ से आरोप लगाए गए है कि अमेरिकी निवेशकों से लिए पैसों का इस्तेमाल कथित तौर पर भारतीय अधिकारियों को रिश्वत देने के लिए किया गया था। अमेरिकी प्रोसिक्यूटर और प्रतिभूति एवं विनिमय आयोग (एसईसी) द्वारा दायर किए गए आरोपों में अडानी समूह के अध्यक्ष गौतम अडानी, उनके भतीजे सागर अडानी और अडानी ग्रीन एनर्जी के पूर्व सीईओ विनीत जैन पर सौर एनर्जी कॉन्ट्रैक्ट के लिए अपने हिसाब से शर्तों को लागू करने के लिए 2020 से 2024 तक एक योजना बनाने का आरोप लगाया गया है। आरोप है कि भारत में सोलर एनर्जी प्रोजेक्ट के ठेके हासिल करने के लिए उन्होंने भारतीय अधिकारियों को लगभग 2,250 करोड़ रुपये की रिश्वत खिलाई। अडानी ग्रुप ने इन प्रोजेक्ट के लिए अमेरिकी निवेशकों से फंड जुटाया था, यही वजह है कि अमेरिकी कोर्ट में उनके खिलाफ ये मामला आया है। इन प्रोजेक्ट से समूह को 20 वर्षों में करीब 2 अरब डॉलर के मुनाफे का अनुमान था। इस पूरे मामले में गौतम अडानी, अडानी ग्रीन एनर्जी के कार्यकारी निदेशक सागर अडानी, एज्योर पावर के सीईओ रहे रंजीत गुप्ता, एज्योर पावर में सलाहकार रूपेश अग्रवाल अमेरिकी इश्युअर हैं। मामले के केंद्र में अडानी ग्रीन एनर्जी और एक अन्य रिन्यूएबल एनर्जी कंपनी, एज्योर पावर द्वारा सरकारी स्वामित्व वाली सोलर एनर्जी कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया (एसईसीआई) को 12 गीगावाट सोलर एनर्जी सप्लाई करने का कॉन्ट्रैक्ट था। देखा जाए तो इससे पहले अडानी समूह पर हिंडनबर्ग ने आरोप लगाए थे। यथा संभव समूह ने हिंडनबर्ग के तीखे हमलों का मुकाबला बखूबी किया था, लेकिन इस बार उसे जटिल विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ रहा है। हालांकि, कारोबारी समूह ने रिश्वतखोरी और धोखाधड़ी के आरोपों को निराधार कहकर खारिज किया है। कंपनी ने अपने आधिकारिक बयान में कहा कि जैसा कि अमेरिकी न्याय विभाग ने खुद बताया है कि अभियोग में लगाए गए आरोप जब तक साबित नहीं हो जाते, तब तक प्रतिवादियों को निदर्दोष माना जाता है। सभी संभव कानूनी उपाय किए जाएंगे। अडानी घुष के तरफ से कहा कि

गया है कि कंपनी हमेशा शासन, पारदर्शिता और विनियामक अनुपालन के उच्चतम मानकों को बनाए रखने के लिए प्रतिबद्ध हैं। कंपनी अपने हितधारकों, भागीदारों और कर्मचारियों को आश्वस्त करते हैं कि ग्रुप एक कानून का पालन करने वाला संगठन हैं, जो सभी कानूनों का पूरी तरह से अनुपालन करता है। लेकिन देखा जाए तो जिस प्रकार से आरोप लगे हैं, अब अडानी समूह के पास लंबी कानूनी लड़ाई लड़ने के लिये खुद को तैयार करने के अलावा कोई विकल्प नजर नहीं आता। हालांकि आर्थिक जानकारों का मानना है कि अडानी पर आरोप साजिश के तहत लगाया जा रहा है। इसके कई कारण सामने आ रहे हैं। भारत सरकार और कारोबारी जगत हिंडनबर्ग रिसर्च की रिपोर्ट के समय को लेकर चिंतित हैं। रूसी मीडिया संस्थान स्युतनिक की भारतीय शाखा स्युतनिक इंडिया के मुताबिक, जानकार इसे 'डीप स्टेट' की साजिश मान रहे हैं। ऐसा माना जा रहा है कि 'डीप स्टेट' मोदी सरकार को अस्थिर करना चाहता है। बांग्लादेश में अमेरिका की भूमिका को लेकर भी चिंता जताई जा रही है। जानकार मानते हैं कि बाजार नियामक संस्थान भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड के खिलाफ अमेरिकी शॉर्ट सेलर हिंडनवर्ग रिसर्च की रिपोर्ट भी' डीप स्टेट' की चालों की ही एक कड़ी है। उद्योग सूत्रों ने स्पुतनिक इंडिया को बताया है कि इसका मकसद भारतीय संस्थानों में विश्वास कमजोर करना है। माना जा रहा है कि अफगानिस्तान, पाकिस्तान, श्रीलंका, नेपाल और बांग्लादेश में सफल मगर अमेरिका में नाकाम डीप स्टेट दोबारा अडानी के बहाने भारत पर बुरी नजर डाल रहा है। भारतीय अधिकारियों को हिंडनबर्ग रिसर्च की इस कोशिश के बारे में बताया गया है। उनका कहना है कि ये पश्चिमी ताकतों की तरफ से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार को अस्थिर करने के प्रयास हैं। कहा जा रहा है कि 'डीप स्टेट' भारत की जड़ें हिलाने के लिए मोदी सरकार को अस्थिर करना चाहता है। बाजार नियामक संस्थान भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड के खिलाफ अमेरिकी शॉर्ट सेलर हिंडनबर्ग रिसर्च की रिपोर्ट को भी 'डीप स्टेट' की चालों की ही एक कड़ी बताया जा रहा था। स्पुतनिक इंडिया ने वैश्विक उद्योग सूत्रों के हवाले से बताया है कि डीप स्टेट का मकसद भारतीय संस्थानों और कारोबारियों में जनता का विश्वास कमजोर करना है। बांग्लादेश समेत दक्षिण एशिया के कई देशों के अलावा खुद अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव के दौरान साफ तौर पर यूएस डीप स्टेट की भूमिका देखी गई थी। अमेरिका में दूसरी बार राष्ट्रपति बनने जा रहे डोनाल्ड ट्रंप ने प्रचार के दौरान जानलेवा हमले के बाद सार्वजनिक तौर पर इसको लेकर गंभीर चिंता जताई थी। डीप स्टेट किसी भी राज्य के राजनीतिक नेतृत्व से अलग स्वतंत्र रूप से अपने निजी एजेंडे और लक्ष्यों की खोज में काम करती है। पब्लिक स्फीयर में यह शब्द काफी ज्यादा नकारात्मक अर्थ रखता है और अक्सर इसका मकसद साजिश के सिद्धांतों से जुड़ा होता है। इससे साफ हो जाता है कि अडानी के खिलाफ यह पूरा मामला साजिश भी हो सकता है, क्योंकि पिछले दशक में गौतम अडानी समूह ने अंतर्राष्ट्रीय बंदरगाहों से लेकर पावर सेक्टर तक में तेजी से अपना कारोबार बढ़ाया है। इससे अमेरिका के साथ संबंधों पर भी असर पड़ने की संभाना है। दरअसल भारत के रूस से गहरे होते रिश्तों व चीन से सुधरते संबंधों के बीच अमेरिका व कनाडा समेत पश्चिमी देशों में भारत को लेकर वक्र दृष्टि देखी जा रही है। अडानी प्रकरण को भी अमेरिका व भारत के बीच तल्खी के आलोक में देखा जा रहा है। अमेरिका ने इससे पहले आरोप लगाया था कि भारत सरकार के एक कर्मचारी ने न्यूयॉर्क में एक अमेरिकी नागरिक व सिख अलगाववादी नेता गुरपतवंत सिंह पन्नू को मारने की साजिश रची थी। बहरहाल, अब देखना होगा कि ट्रंप की ताजपोशी के बाद दोनों देशों के रिश्ते कैसे रहते हैं। लेकिन इसमें कोई दोमत नहीं है कि इस मामले में पारदर्शी तरीके से जांच होनी चाहिए, ताकि वास्तविक सच्चाई सामने आ सकें। साथ ही जिस प्रकार से विपक्ष अडानी को घेरने में जुटा है, उसको इस प्रवृति से बाज आना चाहिए। विपक्ष को चाहिए कि वह इस मामले में अडानी और सरकार को घेरने के बजाए वास्तविकता को समझे। यह याद रखना जरूरी है कि अभियोग में लगे आरोप सिर्फ आरोपहैं, और जब तक किसी व्यक्ति को दोषी सिद्ध नहीं किया जाता, तब तक उसे अपराधी नही माना जाता है। भारत के विपक्षी राजनीतिक दलों के नेता भी पीएम मोदी और अडानी की दोस्ती का जिक्र कर तरह तरह के आरोप लगाते रहे हैं और यह सिलसिला चुनाव के दौर में बढ़ जाता है अब अमेरिका से इस तरह के विवाद को जन्म दिया जाना किसी साजिश का हिस्सा हो सकता है। जरूरत इस बात की है कि अडानी पर लगे आरोपों की गहराई से निष्पक्ष जांच की जाए और दूध का दूध पानी का पानी किया जाए।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।)

राष्ट्रीय अस्मिता, सभ्यता, संस्कृति का संवर्द्धन आवश्यक

हृदयनारायण दीक्षित

संविधान भारत का राजधर्म है। भारतीय संविधान सभा की आखिरी बैठक (26 नवंबर, 1949) में डॉक्टर आम्बेडकर के प्रस्ताव पर मतदान हुआ और संविधान पारित हो गया। संविधान ही राष्ट्र का धारक और राज्य व्यवस्था का धर्म बना। भारत में संविधान ही सर्वोत्तम सत्ता है। हम भारत के लोगों को वाक्स्वातंत्र्य और विधि के समक्ष समता सहित सभी मौलिक अधिकार संविधान से मिले। जन गण मन ने स्वाभाविक ही समता, समरसता और संपन्नता के रंगीन सपने देखे। जन गण मन का भाग्य विधाता संविधान है। नागरिक संविधान के प्रति श्रद्धालु हैं। संविधान 26 नवम्बर 1949 के दिन बनकर तैयार हुआ। कृतज्ञ राष्ट्र 26 नवम्बर को संविधान दिवस मनाता है। दो दिन बाद संविधान दिवस है। संविधान ही राष्ट्र जीवन का मुख्य धारक होता है। भूमि, जन और संप्रभु शासन से ही राष्ट्र नहीं बनते। इनसे नेशन बनते हैं और नेशन व राष्ट्र में बड़ा अंतर है। राष्ट्र का आधार संस्कृति है। संविधान निमार्ता सांस्कृतिक क्षमता से परिचित थे। इसलिए संविधान की हस्तलिखित प्रति में सांस्कृतिक राष्ट्रभाव वाले 23 चित्र हैं। मुख पृष्ठ पर राम और कृष्ण हैं। भाग 1 में सिन्धु सभ्यता की स्मृति वाले मोहनजोदड़ु काल की मोहरों के चित्र और भाग 2 नागरिकता वाले अंश में वैदिक काल के गुरुकुल आश्रम का दिव्य चित्र। भाग तीन मौलिक अधिकार वाले पृष्ठ पर श्रीराम की लंका विजय व भाग चार में राज्य के नीति निदेशक तत्वों वाले पन्नों पर कृष्ण अर्जुन उपदेश वाले चित्र थे। भाग 5 में महात्मा बुद्ध, भाग 6 में स्वामी महावीर और भाग 7 में सम्राट अशोक। भाग 8 में गुप्त काल, भाग 9 में विक्रमादित्य, भाग 10 में नालंदा विश्वविद्यालय, भाग 11 में उड़ीसा का स्थापत्य, भाग 12 में नटराज, भाग 13 में भागीरथ द्वारा गंगा अवतरण, भाग 14 में मुगलकालीन स्थापत्य, भाग 15 में शिवाजी और गुरु गोविन्द सिंह, भाग 16 में महारानी लक्ष्मीबाई, भाग 17 व 18 में क्रमशः गांधी जी की दांडी यात्रा व नोआखली दंगों में शांति मार्च, भाग 19 में नेताजी सुभाष, भाग 20 में हिमालय, भाग 21 में रेगिस्तानी क्षेत्र व भाग 23 में लहराते हिन्द महासागर की चित्रावली आनंदित करती है। संविधान पारण के बाद अध्यक्ष राजेन्द्र प्रसाद ने कहा, 'अब सदस्यों को संविधान की प्रतियों पर हस्ताक्षर करने हैं। एक हस्तलिखित अंग्रेजी की प्रति है, इस पर कलाकारों ने चित्र अंकित किए हैं, दूसरी छपी हुई अंग्रेजी व तीसरी हस्तलिखित हिंदी की।' (संविधान सभा कार्यवाही खण्ड 12, पृष्ठ 4261) चित्रमय प्रति दर्शनीय है। संस्कृति और इतिहास के छात्र संविधान की चित्रमय प्रति से प्रेरित

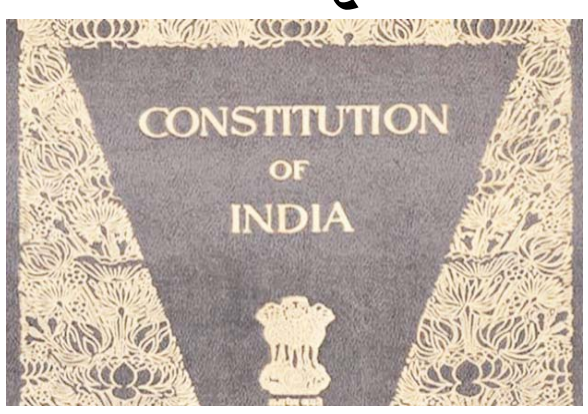

होते हैं। राजेन्द्र प्रसाद ने संविधान सभा के आखिरी भाषण (26.11.1949) में कहा, 'संविधान किसी बात के लिए उपबंध करे या न करे, देश का कल्याण उन व्यक्तियों पर निर्भर करेगा, जो देश पर शासन करेंगे।' आखिरी भाषण में डॉक्टर आम्बेडकर ने प्राचीन परंपरा की याद दिलाते हुए कहा, 'एक समय भारत गणराज्यों से सुसज्जित था। यह बात नहीं है कि भारत पहले संसदीय प्रक्रिया से अपरिचित था।' डॉ० आम्बेडकर ने राष्ट्र शब्द पर काफी जोर दिया। अमेरिकी कथा सुनाई, 'अमेरिकी प्रोटेस्टेंट गिरिजाघर ने पूरे देश के लिए प्रार्थना प्रस्तावित की कि 'हे ईश्वर हमारे राष्ट्र को आशीर्वाद दो'। अमेरिकी जनता ने आपत्तियां दर्ज की। अमेरिका राष्ट्र नहीं था। प्रार्थना संशोधित हुई, 'हे ईश्वर इन संयुक्त राज्यों को आशीर्वाद दो।' यहाँ (भारत) जातियां हैं। राष्ट्र के रूप में होने के लिए हमें इन पर विजय प्राप्त करना है। उन्होंने कहा, 'मेरा मस्तिष्क भविष्य चिन्ता से परिपूर्ण है। क्या भारत अपनी स्वतंत्रता बनाए रखने में कामयाब होगा? जाति और मत मतान्तर राजनैतिक पक्ष बन रहे हैं। क्या भारतीय मत मतान्तरों को राष्ट्र से श्रेष्ठ मानेंगे या राष्ट्र को मत मतान्तरों से ऊपर?' उन्होंने आर्य आक्रमण की कथा को झूठ बताया। दुनिया के अन्य विद्वानों की तरह उन्होंने भी ऋग्वेद को आधार बनाया। उपनिषद जांचे, ब्राह्मण ग्रन्थ पढ़े, महाभारत पढ़ा। कौटिल्य का 'अर्थशास्त्र' जांचा। आर्य-अनार्य और ब्राह्मण-शूद्र जैसे विभाजक शब्दों को जांचते हुए उन्होंने 'हू वर शूद्राज' (शूद्र कौन थे) लिखी। यूरोपीय विद्वान आर्यों को बाहर से आई नस्ल मानते थे। डॉ० आम्बेडकर ने ऋग्वेद के हवाले बताया, 'ये शब्द नस्ल के अर्थ में प्रयुक्त नहीं हुए। (डॉ० आम्बेडकर राइटिंग्स एन्ड स्पीचेज, खण्ड 7, पृष्ठ 70) फिर आर्यों के मूल स्थान के बारे में कहा, 'भारत से बाहर आर्यों के मूल स्थान का सिद्धांत वैदिक साहित्य से मेल नहीं खाता। वेदों में गंगा, यमुना, सरस्वती के प्रति आत्मीय भाव है। कोई विदेशी इस तरह नदियों के प्रति आत्मस्नेह संबोधन नहीं कर सकता। (वही) उन्होंने दासों और आर्यों को एक ही राष्ट्र परिवार का अंग बताते हुए ऋग्वेद के एक मंत्र का हवाला दिया, 'इन्द्र ने अपनी शक्ति से दासों को आर्य बनाया।' यहां वैदिक काल से ही एक परिपूर्ण गणव्यवस्था थी। गणेश गणपति थे। ऋग्वेद में 'गणानां त्वां गणपतिं' आया है। मार्क्सवादी चिन्तक डॉक्टर रामविलास शर्मा ने लिखा, 'गण पुराना शब्द है, यह पुरानी समाज व्यवस्था का द्योतक है। गण और जन ऋग्वेद में पारिभाषिक हो गए हैं।' महाभारत युद्ध के बाद युधिष्ठिर ने भीष्म से आदर्श गणतंत्र पूछा। भीष्म ने (शांति पर्व 107.14) बताया कि भेदभाव से ही गण नष्ट होते हैं। उन्हें संघबद्ध रहना चाहिए। गण के लिए बाहरी की तुलना में आंतरिक संकट बड़ा होता है। 'आभ्यन्तरं रक्ष्यम्सा बाह्यातो भयम' वाह्य उतना बड़ा नहीं। भारतीय गणतंत्र अमर है लेकिन राष्ट्रीय एकता के लिए खतरा है। न्यायपालिका संविधान की जिम्मेदार संरक्षक है। न्यायपीठ ने प्रशंसनीय फैसले किए हैं। अदालतों में लंबित लाखों मुकदमें 'न्याय में देरी से अन्याय के सिद्धांत' की गिरफ्त में हैं। अनुच्छेद 19 अभिव्यक्ति स्वातंत्र्य देता है। अनुच्छेद 20 अन्य बातों के अलावा, 'किसी अपराध के लिए किसी व्यक्ति को अपने ही विरुद्ध गवाही देने के लिए बाध्य करने से रोकता' है। अनुच्छेद 21 'जीवन का अधिकार' है। सर्वोच्च न्यायालय ने एक वाद में 'न्यूनतम जीविका एवं आश्रय के साथ-साथ मानवीय सम्मान, आदर को भी इस अधिकार का हिस्सा बताया है।' मौलिक अधिकारों पर भारत को गर्व है। संविधान दिवस स्मरणीय है। प्रेरक है। इसके बाद गणतंत्र दिवस 26 जनवरी का राष्ट्रीय महोत्सव। कृषि, विकास, गोवंश संवर्द्धन राज्य के नीति निदेशक संवैधानिक तत्व हैं। महाभारतकार ने गणतंत्र की सभा समिति (संसदीय व्यवस्था) के सदस्य की अनिवार्य योग्यता बताई, 'न नः स समितिं गच्छेत यश्च नो निर्वपेत्कृषिम' जो खेती नहीं करता वह सभा में प्रवेश न करे।' ऋग्वैदिक काल में ऋषि भी कृषि कार्य करते थे। धर्मांतरण के विरुद्ध सरकार सक्रिय है। कॉमन सिविल कोड नीति निदेशक तत्व है। इसे लागू कराना आवश्यक है। संविधान निमार्ताओं ने जम्मू-कश्मीर विषयक अनुच्छेद 370 को अस्थाई बनाया था। इसकी समाप्ति का तरीका भी उन्होंने लिख दिया था। मतदान पवित्र अनुष्ठान है। यह भारतीय नागरिक का अधिकार है। हिन्दुत्व इस देश का प्राणतत्व है, लेकिन सांप्रदायिक है। अलगाववादी और द्विराष्ट्रवादी देशतोड़क हैं तो भी सेकुलर हैं। अल्पसंख्यकवाद राष्ट्र के लिए क्षतिकारक है। संविधान और कानून में अल्पसंख्यक शब्द की परिभाषा नहीं है। राष्ट्रीय अस्मिता, सभ्यता, संस्कृति का संवर्द्धन आवश्यक है।

(लेखक, उत्तर प्रदेश विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष हैं।)

हमारी मातृभूमि : इंडिया क्यों, भारत क्यों नहीं?

ई0 प्रभात किशोर

हमारे संविधान के अनुच्छेद 1(1) में देश का नाम ''इंडिया, दैट इज भारत'' अंकित किया गया है । यानी देश का मूल प्राचीन नाम ''भारत'' सहायक या सहयोगी नाम के रूप में उल्लिखित किया गया है। परिणामस्वरूप ''भारत का संविधान'' ''इंडिया का संविधान '' बन गया और हर जगह ''इंडिया''शब्द का प्रयोग और प्रचार किया जाने लगा।

हमारी संस्कृति और सभ्यता विश्व की सबसे सबसे पुरानी है और देश का वास्तविक नाम भारतवर्ष है। पुराण और गीता जैसे प्राचीन ग्रंथों में इस देश को भारत कहा गया है। भारत नाम चक्रवर्ती सम्राट भरत के नाम पर पड़ा है, जो इस भूमि के प्राचीन बहादुर सम्राट तथा राजा दुष्यंत एवं रानी शकुंतला के सुपुत्र थे। विष्णु पुराण में अपने देश की क्षेत्रीय सीमाओं का उल्लेख इस प्रकार किया गया है - ''उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमदे शचैव दक्षिणाम, वर्षम तदु भारतं नाम भारतो यत्र संततिः।' (अर्थात समुद्र के उत्तर और बर्फीले पर्वतों के दक्षिण में जो देश है, उसे भारत कहते हैं)। महाकाव्य महाभारत में हमारी मातृभूमि का उल्लेख भारतवर्ष के रूप में किया गया है। राजा भरत द्वारा निर्मित और शासित साम्राज्य में न केवल वर्तमान आधुनिक देश के भूभाग सम्मिलित थे, बल्कि आसपास के अन्य देश जैसे पाकिस्तान, बंगला देश, बर्मा (ब्रह्म देश), नेपाल, तिब्बत, अफगानिस्तान, उज्बेकिस्तान, रूस, ईरान, चीन, मलेशिया, इंडोनेशिया और कुछ अन्य देश के भूभाग शामिल थे।

ऐसा कहा जाता है कि भारत का वर्तमान अंग्रेजी नाम उत्तर-पश्चिम की महान पवित्र नदी सिंधु से लिया गया है। फारसी में इस नदी को '' हिन्दू'' और यूनानी ''इंदु'' कहते थे। पुरानी अंग्रेजी में भारत के नाम का प्रथम संदर्भ राजा अल्फ्रेड के ओरोसियस के अनुवाद में प्रयोग में लाया गया है, जो 5वीं शताब्दी में लैटिन में लिखी गई विश्व घटनाओं का इतिहास है। इसके बाद हमें मुगल, फ्रेंच, स्पेनिश, पुर्तगाली के द्वारा अलग-अलग नामों से जाना जाने लगा। हमारी भूमि को मुगलों द्वारा हिंदुस्तान कहा जाता था, जिसे ईस्ट इंडिया कंपनी ने बदलकर इंडिया कर दिया क्योंकि वे हमें किंग अल्फ्रेड के समय से इसी नाम से जानते थे। अगस्त 1858 में, ब्रिटिश

संसद ने ईस्ट इंडिया कंपनी से क्राउन को सत्ता हस्तांतरित करने के लिए ''गवन्मेंट ऑफ इंडिया अधिनियम'' पारित किया और परिणामस्वरूप हमारा आधिकारिक नाम इंडिया हो गया, जिसे दुर्भाग्यवश स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी नहीं बदला गया है।

अंग्रेजी उपनिवेशकों द्वारा थोपा गया ''इंडिया'' नाम गुलामी का प्रतीक है और यह भारतीय लोगों की भावनाओं, स्वाभिमान, संस्कृति और सभ्यता को ठेस पहुँचाता है। आजादी के 75 साल बाद भी ''भारत'' के स्थान पर ''इंडिया'' नाम का चलन-प्रचलन जारी रहना न केवल शर्मनाक है, बल्कि अलोकतांत्रिक, जनविरोधी और राष्ट्रविरोधी भी है। क्या विश्व मानचित्र पर ''भारत'' नाम का कोई देश है? क्या किसी विदेशी को दुनिया में ''भारत'' नाम के किसी देश के अस्तित्व के बारे में पता है? क्या भारत यात्रा पर आनेवाला कोई परदेशी यह जानता भी है कि वह ''भारत'' देश में है? जाहिर है, भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम, 1947 के तहत ''इंडिया'' तो आजाद हो गया, लेकिन महान ''भारत'' न सिर्फ जंजीरों में जकड़ा रहा, बल्कि अपना अस्तित्व भी खो बैठा। हमें उन देशों से सबक लेना चाहिए जिन्होंने आजादी के समय या उसके बाद अपना मूल नाम पुनः स्थापित किया, जैसे ''सीलोन'' से ''श्रीलंका'', ''डच गुयाना'' से ''सूरीनाम'', गोल्ड कोस्ट से घाना, न्यासालैंड से मलावी, उत्तरी रोडेशिया से जाम्बिया, दक्षिणी रोडेशिया से जिम्बाब्वे, कांगो से जैरे, पूर्वी बंगाल (पूर्वी पाकिस्तान) से बंगला देश, जांजीबार से तंजानिया, फारस से ईरान, मेसोपोटामिया से इराक, फॉर्मोसा से ताइवान, स्याम से थाईलैंड, बर्मा से म्यांमार, हॉलैंड से नीदरलैंड , दक्षिण पश्चिम अफ्रीका से नामीबिया, बेचुआनालैंड से बोत्सवाना आदि। हालाँकि, संस्कृत साहित्य में बर्मा का नाम ब्रह्म देश है। हमारे देश में भी, सैकड़ों शहरों का पुनर्नामकरण किया गया है, विशेष रूप से बॉम्बे से मुंबई, कलकत्ता से कोलकाता, मद्रास से चेन्नई, बैंगलोर से बेंगलुरु, इलाहाबाद से प्रयाग, गुड़गांव से गुरुग्राम, बड़ौदा से वडोदरा, त्रिवेन्द्रम से तिरुवनंतपुरम, वाल्टेयर से विशाखापत्तनम, तंजौर से तंजावुर, कॉनपोर से कानपुर , कालीकट से कोझिकोड, केप कोमोरिन से कन्याकुमारी , मोंगयोर से मुंगेर, मुगलसराय से दीनदयालनगर, औरंगाबाद से शंभाजीनगर, उस्मानाबाद से धाराशिव, अहमदनगर से अहिल्यानगर, होशंगाबाद से नर्मदापुरम, नसरुल्लागंज से भैरुंद, करीमगंज से श्रीभूमि आदि। 2011 में, ''उड़ीसा'' राज्य का नाम का बदलकर ''ओडिशा'' कर दिया गया।

कई अन्य शहरों या स्थानों के पुनर्नामकरण की कार्रवाई या तो पाइपलाइन में है या सरकारों के भविष्य के एजेंडे में है। स्थलों या संस्थानों के पुनर्नामकरण की कार्रवाई एक पार्टी विशेष की सरकार ने नहीं, बल्कि कई परस्पर विरोधी विचारधारा वाली पार्टियों ने किया है। इसके अलावा, सरकारों के साथ-साथ नागरिको एवं समाज के द्वारा भी हजारों गांवों, जिलों, स्टेशनों, संस्थानों, कॉलेजों, विश्वविद्यालयों का नाम समय समय पर बदल दिया गया है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के 75 वर्ष पूरे होने पर ''आजादी का अमृत महोत्सव'' के रूप में मनाये जाने के पावन अवसर पर, संसद और केंद्र सरकार को संविधान के अनुच्छेद 1(1) में संशोधन करके देश का नाम ''इंडिया, दैट इज भारत'' के स्थान पर फिर से ''भारतवर्ष, दैट इज भारत'' या सिर्फ ''भारत'' किया जाना चाहिए ताकि इस महान देश को विभिन्न नामों के स्थान पर अपने मूल प्राचीन नाम से जाना जा सके।

(लेखक एक अभियंता और शिक्षाविद् हैं।)

संक्षिप्त समाचार

चुरू जिले में थाना सिद्धमुख पुलिस की कार्रवाई

रेलवे में सरकारी नौकरी लगाने के नाम पर लाखों की धोखाधड़ी के दो आरोपी किये गिरफ्तार

चमकता राजस्थान। जयपुर/चूरू!(खलील कुरैशी) 23 नवंबर। चूरु जिले की सिद्धमुख थाना पुलिस ने एक युवक से रेलवे में सरकारी नौकरी लगाने के नाम पर 300000 की धोखाधड़ी करने के मामले में आरोपी जोगेंद्र सिंह पुत्र शीशपाल (26) निवासी भठोड व कैलाश कुमार जाट पुत्र सुभाष (42) निवासी वार्ड नंबर 5 थाना सिद्धमुख को गिरफ्तार कर लिया है।एसपी जय यादव ने बताया कि 7 सितंबर को थाना सिद्धमुख के भठोड निवासी 22 वर्षीय युवक कर्मवीर जाट पुत्र धर्मवीर ने एक रिपोर्ट देते हुए बताया कि हमारे गांव के शीशपाल व जोगेंद्र एवं बुंगी निवासी कैलाश कुमार ने रेलवे में सरकारी नौकरी लगाने के नाम पर उससे 3 लाख रुपए नगद लिए थे। नौकरी नहीं लगने पर जब उसने पैसे मांगे तो वापस नहीं दे रहे हैं। रिपोर्ट पर मुकदमा दर्ज कर जांच एएसआई रामनारायण द्वारा शुरू की गई।एसपी यादव ने बताया कि आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक किशोरी लाल व सीओ निश्चय कुमार आईपीएस के सुपरविजन एवं एसएचओ रामकरण सिद्धू के नेतृत्व में गठित की गई टीम द्वारा आसूचना संकलन कर तकनीकी मदद से आरोपी जोगेंद्र सिंह व कैलाश कुमार को दस्तयाब कर पूछताछ के बाद गिरफ्तार कर लिया। दोनों आरोपियों को कोर्ट में पेश कर पुलिस रिमाण्ड पर लिया गया है, जिनसे पैसों की रिकवरी व अन्य सहयोगियों के संबंध में गहन पूछताछ की जा रही है।

जेडीए द्वारा जोन-10 बालाजी मोड़ तिराहा जगतपुरा में 01 कि.मी. तक रोड़ सीमा को करवाया कब्जा-अतिक्रमण मुक्त

चमकता राजस्थान। जयपुर (खलील कुरैशी) प्रवर्तन प्रकोष्ठद्वारादिनांकः23.11.2024 को जोन-10 के क्षेत्राधिकार में अवस्थित बालाजी मोड़ तिराहा जगतपुरा में करीब 01 कि.मी. तक रोड़ सीमा पर करीब 50 स्थानों पर कब्जा-अतिक्रमण कर अवैध रूप से अत्यधिक लम्बाई में बनाये गये चबुतरें, सीढ़ियां, लोहे के एंगल, टीनशेड, तिरपाल, थड़ी, ठेलें, होडिंग साइन बोर्ड इत्यादि लगाकर किये गये अतिक्रमणों के संबंध में अतिक्रमणकर्ताओं को अतिक्रमण हटाने हेतुपाबंदकियागयापरन्तुअतिक्रमणकर्ताओं द्वारा अतिक्रमण नहीं हटाने पर प्रवर्तन प्रकोष्ठ द्वारा दिनांकः 23.11.2024 को जोन-10 के राजस्व व तकनीकी स्टॉफ की निशादेही पर प्रवर्तन दस्ते द्वारा जेसीबी मशीन व मजदूरों की सहायता से ध्वस्त कर हटवाया जाकर रोड़ सीमा को अतिक्रमण मुक्त करवाया गया।उक्त कार्यवाही मुख्य नियंत्रक प्रवर्तन आदर्श चौधरी के पर्यवेक्षण में उपनियंत्रक प्रवर्तन- द्वितीय, प्रवर्तन अधिकारी जोन-10 तथा प्राधिकरण में उपलब्ध जाप्ते, लेबर गार्ड एवं जोन में पदस्थापित राजस्व व तकनीकी स्टॉफ की निशादेही पर प्रवर्तन दस्ते द्वारा सम्पादित की गई। उप महानिरीक्षक पुलिस, जविप्रा, जयपुर कैलाश चन्द्र बिश्नोई ने समस्त नागरिकों से अपील है कि प्रवर्तन संबंधित शिकायतों के संबंध में वे स्वंय उपस्थित होकर; कन्ट्रोल रूम हेल्पलाईन नं. 0141 2565800, 0141 2575252, 0141 2575151 पर24×7;हेल्पलाईन181राजस्थानसम्पर्कपोर्टलएव जरियेमेलcce.jda@rajasthan.gov.in&enforcement.jda@rajasthan.gov.in पर अवैध निर्माण/ कब्जा/अतिक्रमण इत्यादि की शिकायत/परिवाद प्रस्तुत व सम्पर्क कर अवैध अतिक्रमणों के विरूद्ध अभियान में अपना महत्वपूर्ण योगदान देवें।

उर्स मेले के दौरान अजमेर शहर में भी बनी रहे पर्याप्त जलापूर्ति, ड्रेनेज की योजना जल्द तैयार करें: विधानसभा अध्यक्ष

एडीए निगम को आदेशित करते हुए अतिक्रमण व अवैध कॉलोनियों के खिलाफ कार्यवाही के दिये आवश्यक दिशा-निर्देश

चमकता राजस्थान

जयपुर!(खलील कुरैशी) 23 नवम्बर। विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने जिला प्रशासन को निर्देश दिए है कि उर्स के दौरान शहर में भी पर्याप्त जलापूर्ति बनी रहे। अजमेर के ड्रेनेज सिस्टम को दुरुस्त करने के लिए रिपोर्ट शीघ्र तैयार की जाए। कचहरी रोड़ व अन्य सड़कों का काम 10 दिसम्बर तक पूर्ण कर लिया जाए। बजट घोषणाओं पर शीघ्र अमल हो। अतिक्रमण एवं अवैध कॉलोनियों के खिलाफ सख्त कार्यवाही हो। वासुदेव देवनानी ने शनिवार को अजमेर जिले के सर्किट हाउस में जिला प्रशासन, पुलिस, नगर निगम, एडीए एवं अन्य विभागों की बैठक ली। उन्होंने निर्देश दिए कि जिला प्रशासन, पुलिस, नगर निगम, एडीए एवं वन विभाग अवैध कब्जों, कॉलोनियों एवं अतिक्रमण के खिलाफ सख्त कार्यवाही करें। इस कार्य में जीरो टॉलरेंस की नीति अपनाई जाए। उन्होंने कहा कि आगामी दिनों में अजमेर में उर्स मेला आयोजित किया जाएगा। बाहर से आने वाले अतिथियों को पूरी सुविधा मिले लेकिन साथ ही अजमेर की नियमित जलापूर्ति व बिजली सप्लाई भी बाधित नहीं होनी चाहिए। उन्होंने नगर निगम से बजट घोषणाओं में स्वीकृत 20 करोड़ रूपये के सात नालों एवं इसके अतिरिक्त बनने वाले 5 नालों की प्रगति की जानकारी भी ली। उन्होंने कहा कि इन नालों की डीपीआर शीघ्र स्वीकृत कराई जाए।

उन्होंने नगर निगम को निर्देश दिए कि अजमेर के मास्टर ड्रेनेज प्लान की रिपोर्ट तैयार करने का काम शीघ्र पूरा किया जाए। जहां-जहां बगैर किसी बाधा के जल निकासी का रास्ता खोला जा सकता है, वहां तो शीघ्र काम शुरू करवा दिया जाए। इसी तरह कचहरी रोड़ एवं एलीवेटेड रोड़ के नीचे भी सड़कों का निर्माण आगामी 10 दिसम्बर से पूर्ण पूरा कर लिया जाए। आमजन लम्बे समय से परेशान है, अब उन्हें राहत मिलनी चाहिए। उन्होंने फव्वारा चौराहे से आगरा गेट तक सड़क चौड़ी करने के लिए संबंधित विभागों से सम्पर्क करने के निर्देश दिए।देवनानी ने कहा कि आनासागर व बांडी नदी में फिर से जलकुम्भी आ रही है। इसे तुरन्त साफ किया जाए। सीवरेज का कार्य तेज किया जाए। उन्होंने अजमेर विकास प्राधिकरण को निर्देश दिए कि अजमेर के प्रवेश वाले रास्तों एवं प्रमुख चौराहों का सौंदर्यीकरण किया जाए। फॉयसागर झील की बाउंड्री वॉल का कार्य जल्द स्वीकृत कर काम शुरू करवाया जाए। बजट घोषणाओं के लिए भूमि आवंटन का कार्य भी शीघ्र किया जाए उन्होंने जलदाय विभाग को निर्देश दिए कि बजट घोषणा में स्वीकृत नसीराबाद से नौसर घाटी तक पाइप लाइन एवं तीनों सर्विस रिजर्वायर का काम जल्द स्वीकृत करवा कर शुरू करवाया जाए। पेयजल आपूर्ति 48 घण्टे में सुनिश्चित हो। उन्होंने अन्य विभागों को भी बजट घोषणाओं पर जल्द अमल के निर्देश दिए। बैठक में पुलिसअधीक्षक वंदिता राणा, एडीए आयुक्त नित्या के.निगम आयुक्त देशलदान, डीएफओ सुगनाराम जाट, एडीएम गजेन्द्र सिंह राठौड़ सहित अन्य विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

प्रदेश सरकार के एक वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष में प्रदेशवासियों को मिलेंगी बेहतरीन सौगात : जोगाराम पटेल

- **संसदीय कार्य मंत्री ने चूरू में स्थानीय जनप्रतिनिधियों एवं कार्यकर्ताओं से की मुलाकात,**
- **जिले की विकास गतिविधियों को लेकर किया विचार- विमर्श**

चमकता राजस्थान

जयपुर!(खलील कुरैशी) 23 नवंबर। संसदीय कार्य मंत्री जोगाराम पटेल शनिवार को चूरू जिले के सर्किट हाउस में स्थानीयजनप्रतिनिधियों से रूबरू हुए और जिले में विकास गतिविधियों के बारे में जानकारी ली। पटेल ने कहा कि प्रदेश सरकार के कार्यकाल का एक वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष में प्रदेशवासियों को बेहतरीन सौगात मिलेगी। युवाओं को रोजगार क्षेत्र में नए अवसर मिलेंगे तथा सरकारी विभागों में रिक्तियों को भरा जाएगा। प्रदेश सरकार युवाओं के सुरक्षित भविष्य के लिए कृत संकल्पित है। हम सरकारी विभागों में कामकाज की गति को तीव्र करने के उद्देश्य से सहायक कर्मचारी एवं ड्राइवर की भर्ती कर रहे हैं। सरकार का पूर्ण प्रयास रहेगा कि मार्च तक सभी विभागों में सहायक कर्मचारी एवं ड्राइवर पदस्थापित किए जाएं।उन्होंने कहा कि स्थानीय जनप्रतिनिधि सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ समाज के अंतिम छोर पर बैठे व्यक्ति तक पहुंचाए। सरकार की मंशानुरूप प्रत्येक व्यक्ति तक विकास की राह आसान हो और लाभान्वितों से सकारात्मक फीडबैक सामने आएं।उन्होंने कार्यकर्ताओं से शासन-प्रशासन की गतिविधियों की जानकारी लेते हुए कहा कि आमजन को सुलभ सुविधाएं मुहैया करवाने के लिए कार्यकर्ता सक्रियता से काम करें। विधायक हरलाल सहारण ने चूरू विधानसभा क्षेत्र में चल रहे विकास कार्यों के बारे में रूबरू करवाया। इस अवसर पर पटेल ने चूरू जिले में पेयजल समस्या, कानून एवं सुरक्षा व्यवस्था, विभागीय गतिविधियों, राजस्व प्रकरणों, जिलेवासियों की आजीविका, रोजगार व आय के स्रोत तथा आमजन की समस्याओं के बारे में जानकारी ली। जिला कलक्टर सुराणा ने जिला प्रशासन की गतिविधियों, बजट घोषणाओं की क्रियान्विति और प्रदेश सरकार के एक वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष में जिला प्रशासन की तैयारियों के बारे में अवगत करवाया। उन्होंने कहा कि जिला प्रशासन प्रदेश सरकार की मंशानुरूप आमजन को सुविधाओं का समुचित लाभ मुहैया करवाने के लिए मुस्तैदी से कार्य कर रहा है। टीम के बेहतर सामंजस्य के साथ जिलेवासियों को सभी सेक्टरों में बेहतरीन सुविधाओं उपलब्ध करवाने के लिए जिला प्रशासन प्रतिबद्ध है।उन्होंने राज्य सरकार के निर्णयों एवं योजनाओं को जिले की जनता तक शत–प्रतिशत क्रियान्वित करते हुए लाभान्वित करने का आश्वासन दिया।

भरतपुर जिले में डीएसटी, थाना सेवर व उदयपुर एटीएस की कार्रवाई

चमकता राजस्थान

- **10-10 हजार के दो इनामी गिरफ्तार : गिरधरपुर टोल पर तोड़फोड़ व मारपीट के है आरोपी**

जयपुर/भरतपुर!(खलील कुरैशी) 23 नवंबर। जयपुर जिले की स्पेशल टीम थाना सेवर पुलिस एवं उदयपुर एटीएस की टीम द्वारा संयुक्त कार्रवाई कर गिरधरपुरा टोल पर तोड़फोड़ कर लूटपाट के मामले में तीन महीनों से अधिक समय से फरार चल रहे 10-10 हजार रुपए के इनामी दो आरोपियों लखन उर्फ टुंडा जाट पुत्र गुलाब सिंह (27) निवासी लखन पैंघोर थाना कुम्हेर एवं बबलू सिंह जाट पुत्र मोहकम सिंह (32) निवासी बैलारा थाना कुम्हेर को गिरफ्तार किया है।एसपी मृदुल कच्छावा ने बताया कि 9 अगस्त को सेवर थाना इलाके के गिरधरपुरा टोल पर बदमाशो ने तोड़फोड़ कर कर्मचारियों से मारपीट कर लूटपाट की थी। जिस पर मुकदमा दर्ज कर पूर्व में पुलिस ने दो इनामी आरोपियों भूपेंद्र सिंह उर्फ टिंकू जाट निवासी बैलारा व देवेंद्र उर्फ कलुआ जाट निवासी पैंघोर थाना कुम्हेर को गिरफ्तार किया था। घटना के आरोपियों पर उनके कार्यालय से 10-10 हजार का इनाम घोषित किया हुआ है।एसपी कच्छावा ने बताया कि अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक सतीश यादव व सीओ ग्रामीण आकांक्षा के सुपरविजन में घटना के आरोपियों लखन उर्फ टुंडा व बबलू सिंह को थाना सेवर के एएसआई रामबाबू, डीएसटी टीम डीग तथा एटीएस उदयपुर की टीम द्वारा आसूचना संकलन व मुखबिर की सूचना पर गिरफ्तार किया गया। जिनसे घटना में शामिल अन्य आरोपियों के बारे में पूछताछ की जा रही है।

मानद् संरक्षक स्व. रामचन्द्र यादव 11वीं पुण्यतिथि पर गायों को भेंट की गयी चारें की दो ट्राली

- **स्वर्गीय यादव शिक्षा के क्षेत्र में नवाचारों के सजग प्रहरी रहें हैं और उनके आदर्शों को युवाओं द्वारा सदा याद किया जायेगा:- डॉ. राजेंद्र यादव**

चमकता राजस्थान। मनोहरपुर (खलील कुरैशी)। श्री कृष्णा ग्रुप ऑफ एजुकेशन मनोहरपुर के मानद् संरक्षक स्व.श्री रामचंद्र यादव की 11 वीं पुण्यतिथि पर 'श्री कृष्णा ग्रुप ऑफ एजुकेशन' परिवार ने पुष्प अर्पित करते हुए उनके श्रेष्ठ व्यक्तित्व तथा शिक्षा में नवाचार लाने की प्रवृत्ति रखने वाले व्यक्तित्व की बात करते हुए उनके शिक्षा में अभूतपूर्व योगदान को स्मरण किया। इस अवसर पर गायों की सेवार्थ चारे की एक ट्राली कुण्डा धाम गोशाला में तथा एक ट्राली भूतनाथ वाटिका मनोहरपुर में भेंट की। इस अवसर पर समस्त विद्यार्थियों ने पुष्प अर्पित किया और उनके आदर्शों को अपनाने की शपथ ली।इस अवसर पर संरक्षक रामकरण बाडीगर, सचिव रामकिशन यादव, निदेशक डॉ. राजेंद्र यादव, प्रिंसीपल एम एल सर, प्रबंध निदेशक शेरसिंह , विनोद यादव, रमेश यादव, विनोद नायक, बाबूलाल यादव, पवन प्रजापत, रोहिताश बराला, सर्वेश शुक्ला, प्रकाश शेखावत, कपिल कुमावत, गोपाल अग्रवाल, संजय कुमावत, मुनाफ खान , शिवदान जींजवाडिया, राकेश यादव, राजेंद्र कुलदीप, अशोक प्रजापति , सुरेश यादव, रवि शर्मा, विकास कुमावत, धर्मसिंह बुनकर, कैलाश बेनीवाल, सीताराम बुनकर, मोना बेनीवाल, अशरफ खान, राजकुमारी शर्मा, दीपिका शर्मा, पूजा शर्मा, अंजू अग्रवाल, सीमा शर्मा, ऊषा कुमावत, चंद्रकांता यादव, वर्षा यादव, मनीष बेनीवाल, ममता शर्मा, अंजूलता शर्मा, मंजू प्रजापत, राकेश कड़वास, विनोद गुप्ता, प्रभु दयाल वर्मा, दानाराम बुनकर, राजेंद्र यादव, रवि शर्मा, गोपाल नायक, सीमा गुप्ता, बाबूलाल गुर्जर, विकास यादव, पुरुषोत्तम प्रजापत, पार्वती नायक, सुमित्रा देवी सहित अनेक कर्मचारी मौजूद रहे।

उपमुख्यमंत्री प्रेमचंद बैरवा ने किया पोस्टर विमोचन

'श्रीमद्भगवत गीता, सनातन जय घोष' पर राजस्थान विश्वविद्यालय में होगा व्याख्यान

चमकता राजस्थान

जयपुर! सनातन धर्मशास्त्र शिरोमणि श्रीमद्भगवत गीता को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सवो के माध्यम से हिंदुस्तान सहित यू एस, यूके, मॉरिशस, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया व श्रीलंका समेत कई देशों में प्रचारित एवं प्रसारित करने वाले अंतर्राष्ट्रीय संत महामंडलेश्वर गीता मनीषी ज्ञानानंद महाराज का एक दिवसीय प्रवास जयपुर में सुनिश्चित हुआ है। जयपुर आगमन पर महाराजश्री का सार्वजनिक व्याख्यान एवं अभिनंदन समारोह भी आयोजित होगा।प्रदेश के उपमुख्यमंत्री प्रेमचंद बैरवा ने महाराज श्री के राजस्थान आगमन पर आयोजित कार्यक्रमो पर बेहद प्रसन्नता जाहिर करते हुए प्रस्तावित व्याख्यान के पोस्टर का विमोचन किया इस अवसर पर आयोजन के संयोजक योगाचार्य योगी मनीष ने बताया कि जीओ गीता परिवार एवं सर्वमंगलाए सनातन धर्म फाउंडेशन द्वारा आगामी सोमवार 25 नवंबर को 4: 15 बजे राजस्थान विश्वविद्यालय के मानविकी पीठ सभागार में पूज्य गुरुदेव महामंडलेश्वर गीता मनीषी ज्ञानानंद जी महाराज के श्रीमुख से ₹श्रीमद्भगवत गीता सनातन जय घोष₹ विषय पर व्याख्यान एवं सार्वजनिक अभिनंदन समारोह आयोजित किया जा रहा है जिसमें जनप्रतिनिधियों, सनातन गीता प्रेमी संगठनों, योग प्रशिक्षण केंद्रों, आध्यात्मिक, धार्मिक, सामाजिक, शिक्षण संस्थानो के साथ-साथ विद्यार्थियों द्वारा महाराज श्री के प्रति श्रद्धा एवं कृतज्ञता अभिव्यक्ति स्वरूप सार्वजनिक अभिनंदन किया जाएगासमारोह की तैयारीयो हेतु दिल्ली से जीओ गीता के राष्ट्रीय महामंत्री प्रदीप मित्तल एवं कोटा से प्रदेश संयोजक किशन पाठक के नेतृत्व में अनेक गुरु भाई जयपुर आ रहे हैं। रविवार को समारोह स्थल मानवीकी पीठ सभागार, राजस्थान विश्वविद्यालय में आयोजन के संयोजक योगी मनीष, समन्वय समिति के संयोजक पूर्व वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी डी.पी. गुप्ता, फिल्म निर्देशक अशोक हिंदुस्तानी, श्री योग से योगाचार्य नीरज, सेल्यूट तिरंगा के प्रदेश अध्यक्ष एडवोकेट मदन मोहन पालीवाल, समाजसेवी के.के. शर्मा ₹कमलर₹, सेवा सुख संस्थान के संस्थापक चंद्रेश शर्मा ने तैयारीयो का जायजा लिया।

संक्षिप्त समाचार

उत्तर भारत में शुरू हुई कंपकंपा देने वाली ठंड, कश्मीर में शून्य से नीचे गिरा तापमान

नईदिल्ली/एजेंसी। उत्तर भारत के कई राज्यों में तापमान में तेजी से गिरावट के चलते कंपकंपा देने वाली ठंड पडऩा शुरू हो गई है।कश्मीर की घाटी में तापमान शून्य से नीचे माइनस में दर्ज किया जा रहा है। मौसम वैज्ञानिकों का अनुमान है कि इस साल पिछले साल की तुलना में भीषण ठंड पड़ेगी।दूसरी तरफ दक्षिण भारत के केरल में बारिश का दौर जारी है। प्रदेश के कई जिलों में आज हल्की बारिश की संभावना जताई है।

पहाड़ों में बर्फबारी के कारण मैदानी इलाकों के मौसम पर भी असर देखने को मिल रहा है। गुरुवार को श्रीनगर में इस सीजन की सबसे ठंडी रात गुजरी, जबकि कश्मीर के अधिकांश हिस्सों में तापमान शून्य से नीचे चला गया है।श्रीनगर में तापमान माइनस 1.2 डिग्री दर्ज किया गया। जम्मू-कश्मीर ने अगले 2 दिन में ऊंचाई वाले इलाकों में बारिश या बर्फबारी की संभावना है।हिमाचल प्रदेश में आज ऊंची चोटियों पर एक-दो स्थानों पर हिमपात की संभावना है।

दिल्ली में आज सुबह स्मॉग के साथ मध्यम कोहरा रहा। अधिकतम तापमान 28 डिग्री और न्यूनतम 12 डिग्री रह सकता है।24 और 25 नवंबर को अधिकतम तापमान 26-27 डिग्री और न्यूनतम 13 डिग्री के आस-पास रहने की संभावना है।राजस्थान के कई जिलों में न्यूनतम तापमान 9-15 डिग्री के बीच पहुंच गया है, जबकि उत्तर प्रदेश में आज कोहरे से राहत रहेगी। बिहार में आने वाले सप्ताह से कड़ाके की ठंड शुरू होने की संभावना जताई जा रही है।

सीएम चेहरे पर कोई विवाद नहीं: देवेंद्र फडणवीस

- **अभूतपूर्व जीत के लिए महाराष्ट्र की जनता का आभार**

मुंबई/एजेंसी। महाराष्ट्र चुनाव के नतीजों पर प्रतिक्रिया देते हुए महाराष्ट्र के डिप्टी सीएम देवेंद्र फडणवीस ने कहा कि प्रदेश की जनता ने हमें अभूतपूर्व जीत दी है. उन्होंने आगे कहा कि देश और प्रदेश की जनता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ हैं. उनके दिए नारे 'एक हैं तो सुरक्षित हैं' के अनुरूप सभी वर्गों और समुदायों के लोगों ने एकजुट होकर हमें वोट दिया. यह महायुति, सीएम एकनाथ शिंदे, डिप्टी सीएम अजित पवार और रामदास अठावले की जीत है, यह एकता की जीत है. विपक्ष की ओर से धर्म के आधार पर मतदाताओं के ध्रुवीकरण के प्रयासों को जनता ने नाकाम कर दिया. प्रदेश की जनता को हमारी सरकार की ओर से चलाई जा रही योजनाओं का लाभ बड़े पैमाने पर मिला है. जिसका परिणाम यह है कि जनता ने हमें बड़े बहुमत के साथ सेवा करने का एक और अवसर दिया है.

महाराष्ट्र के अगले सीएम के सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री के चेहरे पर कोई विवाद नहीं होगा. यह पहले दिन से तय था कि चुनाव के बाद तीनों पार्टियों के नेता एक साथ बैठेंगे और इस पर फैसला करें. फैसला सभी को मान्य होगा, इस पर कोई विवाद नहीं है. जो होगा उचित निर्णय होगा. देवेंद्र फडणवीस ने आगे कहा कि मैंने पहले कहा था कि मैं आधुनिक अभिमन्यु हूं और चक्रव्यूह तोडऩा जानता हूं. मुझे लगता है कि इस जीत में मेरा योगदान छोटा है, यह हमारी टीम की जीत है. लोगों ने एकनाथ शिंदे को असली शिवसेना के रूप में स्वीकार कर लिया है. वहीं जनता ने अपने जनादेश से अजित पवार की एनसीपी को असली माना है. हम इस जीत के लिए प्रदेश की जनता का आभार जताते हैं.

संजय राउत के बयान पर प्रतिक्रिया करते हुए उन्होंने तंज कसा कि झारखंड मुक्ति मोर्चा ने झारखंड में जीत हासिल की है. वहां चुनाव पूरी तरह से निष्पक्ष हुआ. वहां चुनाव आयोग ने अच्छा काम किया. वहां ईवीएम इतनी मजबूत थी कि उसे हैक नहीं किया जा सका और महाराष्ट्र में हमें बहुत बड़ी जीत मिली है. यहां ईवीएम पक्षपाती हो गई. यहां लोकतंत्र की हत्या कर दी गई है. कभी-कभी आत्मनिरीक्षण करने की जरूरत होती है.

उल्लेखनीय है कि महाराष्ट्र में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) भारी बहुमत की ओर अग्रसर है. वहीं झारखंड में जेएमएम-कांग्रेस गठबंधन ने बहुमत का आंकड़ा पार किया है और सत्ता में लगातार दूसरी बार लौटने में कामयाब रही है.

महाराष्ट्र में महायुति गठबंधन 226 सीटों पर आगे चल रही है. वहीं विपक्ष महाविकास अघाड़ी (एमवीए) 288 सदस्यीय विधानसभा में 54 सीटों पर आगे है. झारखंड में शुरू में काफी कड़ी टक्कर देखने को मिली लेकिन हेमंत सोरेन की झारखंड मुक्ति मोर्चा के नेतृत्व वाले गठबंधन ने 41 के बहुमत के आंकड़े को पार कर लिया है और 55 सीटों पर बढ़त बना ली. वहीं एनडीए 25 सीटों पर आगे चल रहा है.

"ऑपरेशन भौकाल" के तहत बाड़मेर डीएसटी व थाना कोतवाली पुलिस की बड़ी कार्रवाई

2 करोड़ की ड्रग पकड़ी : 987 ग्राम एमडी व 189 ग्राम अफीम का दूध बरामद, दो आरोपी गिरफ्तार

चमकता राजस्थान

जयपुर/बाड़मेर।(खलील कुरैशी) 23 नवम्बर। बाड़मेर जिले की स्पेशल टीम एवं थाना कोतवाली पुलिस की टीम ने अवैध मादक पदार्थों के विरुद्ध बड़ी कार्रवाई करते हुए शहर के शास्त्री नगर स्थित एक मकान में दबिश देकर किराए से रह रहे दो युवकों को गिरफ्तार कर कमरे से दो करोड़ रुपए कीमत की 987 ग्राम एमडी ड्रग व 189 ग्राम अफीम का दूध बरामद किया है। कमरे से पुलिस को दुपहिया व चौपहिया वाहनों की 11 अलग-अलग नंबर प्लेट व दो गाड़ियों की आरसी भी मिली है एसपी नरेन्द्र सिंह मीना ने बताया कि आईजी जोधपुर रेंज के निर्देश पर अवैध मादक पदार्थों की जब्ती के लिए चलाये जा रहे ''ऑपरेशन भौकाल'' के तहत कार्रवाई के लिए समस्त थानाधिकारियों व जिला विशेष

टीम को निर्देश दिये गये है। इसी क्रम में मुखबिर की सूचना पर डीएसटी व थाना कोतवाली पुलिस ने शहर के शास्त्री नगर मे हेमराज सोनी नाम के व्यक्ति के मकान मे दबिश दी।हेमराज सोनी के मकान में किरायेदार मनोहर लाल व भरत सिंह के कमरे की तलाशी ली गई, जिसमे 987 ग्राम एमडी ड्रग व 189 ग्राम अफीम का दूध मिला। जिसकी अनुमानित कीमत करीब 2 करोड़ रूपये आंकी गई है। मादक पदार्थ जब्त कर पुलिस ने आरोपी किरायेदार मनोहर लाल विश्नोई पुत्र सुजाना राम (19) निवासी सोमारड़ी थाना सेड़वा व भरत सिंह पुत्र विरध सिंह राजपूत (27) निवासी धांधलो की ढाणी थाना बाखासर को गिरफ्तार कर लिया।एसपी मीना ने बताया कि दोनों आरोपी पढाई के उद्देशय से किराये के कमरे में रहकर अवैध मादक पदार्थ की तस्करी मे लिप्त थे। जो यहॉ से छोटी-छोटी मात्रा में माल आगे सप्लाई करते थे। कमरे की तलाशी के दौरान मादक पदार्थों के माप तौल के लिए छोटा इलैक्ट्रीक कांटा, भारी मात्रा मे छोटी-छोटी प्लास्टीक की थैलिया व पॉउच तथा बिक्री रकम 7100 रूपये नकद, बाइक व फोर व्हीलर की अलग-अलग नम्बर की 11 नम्बर प्लेट, दो वाहनो की आरसी एवं तीन बन्द मोबाइल भी बरामद किये गए है।मीना ने बताया कि मकान मे साथ रहने वाले दो मित्र अशोक विश्नोई पुत्र रामकिशन व पीरा राम विश्नोई पुत्र रामकिशन निवासी माणकी अवैध मादक पदर्थो की सप्लाई करते थे। जबकि इन्हें मादक पदार्थ की सप्लाई देने वाले दो मुख्य तस्कर दिनेश विश्नोई पुत्र बाबुलाल निवासी रोहिला पूर्व थाना धोरीमना व भौमाराम विनोई निवासी चितरड़ी थाना बाखासर है। अवैध मादक पदार्थो की जब्ती के संबंध मे मकान मालिक हेमराज सोनी की भूमिका के संबंध मे गहन अनुसंधान किया जा रहा है।इस कार्रवाई में डीएसटी से प्रभारी हनुमाना राम, एएसआई अमीन खां, कांस्टेबल हनुमान राम, मालाराम, नारायणराम, सवाईसिंह, दिनेश कमाण्डो व संदीप कमाण्डो, थाना कोतवाली से उपनिरीक्षक लिच्छाराम, कांस्टेबल रामचन्द्र, दिनेश कुमार, रतन सिंह व कांस्टेबल चालक गिरधर सिंह शामिल थे। टीम के सदस्य कांस्टेबल हनुमाना राम की विशेष भूमिका रही, जिसकी विशेष पदोन्नति के प्रस्ताव भिजवाए जाएंगे।

जयपुर पुलिस-पब्लिक वॉलीबॉल लीग के द्वितीय चरण के मैचों का शुभारंभ

जयपुर शहर को अपराध एवं भय मुक्त बनाने में आमजन का सहयोग बहुत जरूरी है:- बीजू जॉर्ज जोसफ कमिश्नर जयपू

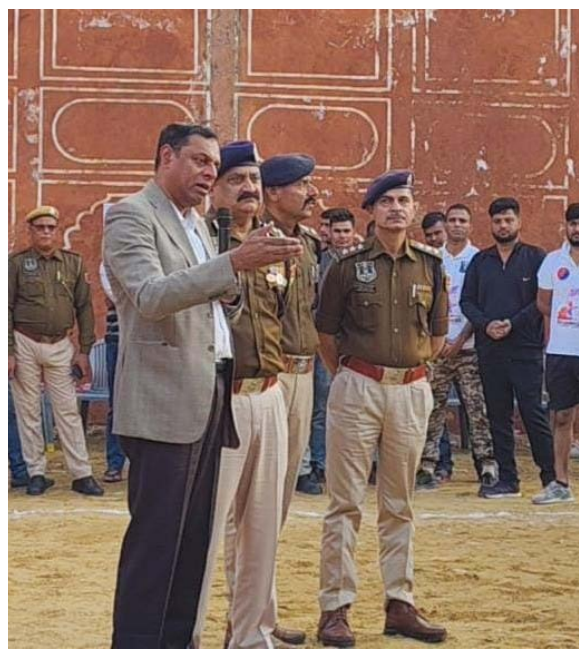

चमकता राजस्थान

जयपुर! (खलील कुरैशी) 23 नवम्बर। जयपुर पुलिस की अभिनव पहल पुलिस व आम जनता के बीच दूरियों को खत्म कर आमजन के बीच मेल मिलाप बढ़ाने के उद्देशय से शुरू की गई उत्तर जिले की वॉलीबॉल लीग के द्वितीय चरण के मैचों का शुभारंभ शनिवार को खंडेलवाल स्कूल ग्राउंड हीदाकीमोरी रामगंज में जयपुर पुलिस आयुक्त बीजू जॉर्ज जोसफ ने किया।पुलिस आयुक्त बीजू जॉर्ज जोसफ ने बताया कि जयपुर शहर को अपराध एवं भय मुक्त बनाने में आमजन का सहयोग बहुत जरूरी है।साथ ही उन्होंने कहा कि आमजन का पुलिस से अधिक से अधिक जुड़ाव शहर में कानून एवं शांति बनाने रखने में बहुत ही कारगर एवं उपयोगी है। इसी दिशा में जयपुर पुलिस लगातार प्रयासरत है।

अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक उत्तर दुर्ग सिंह ने बताया कि वॉलीबॉल लीग द्वितीय चरण (सर्किल स्तर) के मैचों में पुलिस एवं आमजन (पब्लिक) से संयुक्त खिलाड़ियों की टीमें बनायी गई। सर्किल स्तर के खेले गए मैचों में नाहरगढ़, विद्याधर नगर,ब्रह्मपुरी,गलता गेट एवं शास्त्री नगर की टीमें विजेता रही। लीग के मैचों में अतिरिक्त पुलिस आयुक्त द्वितीय रामेश्वर सिंह चौधरी अतिरिक्त पुलिस आयुक्त प्रशासन योगेश दाधीच एवं उत्तर जिले के आला पुलिस अधिकारी सहित थाना क्षेत्र के सीएलजी सदस्यों ,पुलिस मित्रों एवं सुरक्षा सखियों के साथ साथ आमजन ने खासा उत्साह के साथ भाग लिया।

महाराष्ट्र चुनाव में भाजपा की बड़ी जीत, अमित शाह ने फोन कर फडणवीस को दी बधाई

मुंबई/एजेंसी। केंद्रीय गृह मंत्री और भाजपा के वरिष्ठ नेता अमित शाह ने शनिवार को उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस को फोन किया और महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में पार्टी के शानदार प्रदर्शन के लिए उन्हें बधाई दी. निर्वाचन आयोग के नवीनतम आंकड़ों के अनुसार, भाजपा के नेतृत्व वाला 'महायुति' गठबंधन महाराष्ट्र में सत्ता बरकरार रखने की ओर अग्रसर है और 288 विधानसभा सीट में से 222 पर आगे है. भाजपा अब तक तीन सीट जीत चुकी है और अन्य 124 सीट पर बढ़त बनाए हुए है. फडणवीस के करीबी सूत्रों ने पुष्टि की कि शाह ने उन्हें फोन किया और पार्टी के मजबूत प्रदर्शन के लिए बधाई दी. इस बीच, देवेंद्र फडणवीस की मां सरिता फडणवीस ने 'महायुति' के प्रदर्शन पर खुशी जाहिर की. उन्होंने कहा, ''मैंने कभी किसी अफवाह पर विश्वास नहीं किया और जानती थी कि वह (देवेंद्र) अच्छा करेंगे. पार्टी की सफलता का श्रेय 'मुख्यमंत्री माझी लाडी बहिन' योजना और देवेंद्र के प्रयासों तथा लोकप्रियता को दिया जा सकता है...वह बहुत बुद्धिमान, होशियार एवं साहसी हैं और इसी वजह से उन्हें यह सफलता मिली है.''

महाराष्ट्र की जनता ने विचार की विरासत को दिया आशीर्वाद, परिवार की विरासत को किया खारिजः सुधांशु त्रिवेदी

नई दिल्ली/एजेंसी। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के सांसद सुधांशु त्रिवेदी ने महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के नतीजों में महायुति के शानदार प्रदर्शन पर खुशी जताई। सुधांशु त्रिवेदी ने शनिवार को न्यूज एजेंसी से बात करते हुए कहा कि अभी तक महाराष्ट्र के जो नतीजे दिख रहे हैं, वह शानदार तरीके से भारतीय जनता पार्टी और महायुति के पक्ष में हैं। भाजपा यहां पर अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करती दिखाई दे रही है। उन्होंने कहा कि मैं इसका मुख्य कारण मानता हूं कि सरकार द्वारा किए गए शानदार विकास के काम, भाजपा और सहयोगी संगठन के कार्यकर्ताओं की जी तोड़ मेहनत, हमारे प्रदेश नेतृत्व के शानदार कार्य और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की विश्वसनीयता जो जनता में है, उसी कारण से भाजपा गठबंधन को शानदार सफलता मिल रही है। मैं एक और बात कहना चाहूंगा कि हम शब्द प्रयोग करते हैं, विचार और परिवार। भाजपा सांसद सुधांशु त्रिवेदी ने कहा कि यह जो चुनाव था, इसमें इस बात का भी निर्णय होना था कि विचार की विरासत को जनादेश मिलेगा या परिवार की विरासत को। महाराष्ट्र की जनता ने बहुत साफ कर दिया है कि उन्होंने विचार की विरासत को आशीर्वाद दिया है, जो विचार को छोड़कर परिवार की विरासत दावा करते थे, उनको खारिज किया है। दूसरी तरफ महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के नतीजों को लेकर डिप्टी सीएम देवेंद्र फडणवीस ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर अपनी प्रतिक्रिया दी। उन्होंने एक्स पर लिखा, एक हैं तो 'सेफ' हैं। मोदी है तो मुमकिन है। महाराष्ट्र की 288 विधानसभा सीटों पर एक चरण में 20 नवंबर को वोट डाले गए थे। यहां पर महायुति गठबंधन में भारतीय जनता पार्टी ने 149 सीटों पर चुनाव लड़ा है, वहीं शिवसेना (शिंदे) ने 81 सीटों और अजित पवार की एनसीपी ने 59 सीटों पर प्रत्याशी उतारे थे।

अवकाश के दिन प्रशासनिक अधिकारियों ने किये औचक निरीक्षण

जिला कलक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी ने हरसोली, अणतपुरा-चिमनपुरा में की जनसुनवाई

चमकता राजस्थान

जयपुर!(खलील कुरैशी) 23 नवंबर। जिला कलक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी के निर्देश पर जिले के प्रशासनिक अधिकारियों ने शनिवार को अवकाश के दिन औचक निरीक्षण किये, साथ ही मौके पर जनसुनवाई भी की। जिला कलक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी ने स्वयं किशनगढ़-रेनवाल के हरसोली एवं चौमूं के अणतपुरा-चिमनपुरा में जनसुनवाई की। इस दौरान उन्होंने आमजन की परिवेदनाएं सुनीं। उन्होंने अधिकांश परिवेदनाओं का मौके पर ही निस्ताण किया। साथ ही, शेष परिवेदनाओं के समयबद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण निस्तारण के लिए संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया।इस दौरान जिला कलक्टर

ने क्षेत्र में विभागीय योजनाओं के क्रियान्वयन एवं कार्यप्रगति की समीक्षा की। उन्होंने अधिकारियों से भी योजनाओं एवं लाभांवितों की विस्तृत जानकारी ली। जिला कलक्टर मौजूदगी में भामाशाहों द्वारा पचकोड़ियों के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में जनसहयोग से 2 कम्प्यूटर के साथ-साथ विकास कार्य हेतु 41 हजार रुपये का आर्थिक सहयोग मौके पर ही प्रदान किया गया।

- **प्रशासनिक अधिकारियों ने किया पीएम श्री विद्यालयों एवं राजकीय छात्रावासों का निरीक्षण**
- **क्रय विक्रय सहकारी समितियों एवं ग्राम सेवा सहकारी समितियों में खरीद केंद्रों लिया जायजा**

जिससे विद्यार्थियों को विद्यालय में बेहतर शिक्षण सुविधाएं मुहैया करवाई जाएगी।वहीं, जिला कलक्टर के निर्देश पर उपखण्ड अधिकारियों ने पीएम विद्यालयों का निरीक्षण किया। इस दौरान अधिकारियों ने विद्यालय भवन निर्माण की गुणवत्ता, शिक्षण व्यवस्था, पुस्तकालय, कम्प्यूटर प्रयोगशाला, खेल मैदान, पेयजल, शौचालय सहित अन्य बुनियादी सुविधाओं की उपलब्धता की जानकारी एवं शिक्षा विभाग के अधिकारियों को दिशा निर्देश प्रदान करते हुए तमाम आवशयक सुविधाएं सुनिश्चित करने के लिए निर्देशित किया।वहीं, तहसीलदारों ने अपने क्षेत्र में संचालित कस्तूरबा गांधी राजकीय छात्रावास सहित सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग द्वारा संचालित राजकीय छात्रावासों में कार्मिकों की उपलब्धता, भोजन की गुणवत्ता, साफ-सफाई सहित अन्य सभी आवशयक व्यवस्थाओं एवं इंतजामों का जायजा लिया।नायब तहसीलदारों ने क्षेत्र में संचालित क्रय विक्रय सहकारी समितियों एवं ग्राम सेवा सहकारी समितियों का निरीक्षण किया एवं न्यूनतम समर्थन मूल्य उपज खरीद केंद्र पर पंजीयन की व्यवस्था का जायजा लिया। इस दौरान उन्होंने मौके पर मौजूद किसानों से संवाद किया एवं उनकी समस्याओं एवं प्रक्रियागत अवरोधों के निस्तारण के लिए संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया।अधिशासी अधिकारियों एवं खंड विकास अधिकारियों ने अपने क्षेत्र में पीएम विश्वकर्मा योजना की समीक्षा की एवं बैंक अधिकारियों को योजना के तहत प्राप्त लंबित आवेदनों का निस्तारण करने अधिक से अधिक पात्र अभ्यर्थियों को योजना के लिए जागरुक एवं प्रेरित कर लाभांवित करने के लिए निर्देशित किया।

संक्षिप्त खबरें

जमीन विवाद के निबटारे को लेकर जनता दरबार का आयोजन

अररिया। जिला प्रशासन के निर्देश पर जिले के सभी थाना और ओपी में जमीन विवाद के निबटारे को लेकर जनता दरबार का आयोजन किया गया,जिसमें जमीन विवाद से जुड़े मामलों में दोनों पक्षों को बुलाकर आपस में आम सहमति के आधार पर मामले का निबटारा किया गया। थाना में पुलिस अधिकारियों के साथ संबंधित प्रखंड के अंचलाधिकारी,राजस्व अधिकारी,अंचल निरीक्षक और कर्मचारियों की मौजूदगी में दोनों पक्षों की दलीलें सुनने के बाद आम सहमति पर मामले का निबटारा किया गया।डीएम अनिल कुमार और एसपी अमित रंजन के संयुक्त आदेश के तहत जिले के सभी थाना में भूमि विवाद के निबटारे को लेकर जनता दरबार का आयोजन किया गया।

मां सिद्धिदात्री काली मंदिर स्थापना दिवस पर सिमराहा में निकली शोभायात्रा

अररिया । जिले के सिमराहा बाजार स्थित श्रीश्री 108 मां सिद्धिदात्री काली मंदिर के स्थापना दिवस पर शानिवार को भक्तों ने भव्य शोभायात्रा निकाली। शोभायात्रा में सैकड़ों धर्मप्रेमी, समाजसेवी एवं श्रद्धालुगण भाग लेकर इस धार्मिक अनुष्ठान को सफल बनाया। यात्रा में शामिल श्रद्धालुगण मां काली की जयकारे पर नाचते गाते झूमते नजर आये। इस धार्मिक आयोजन से सारा वातावरण भक्तिमय हो गया। शोभायात्रा में शामिल धर्मप्रेमी संतोष गुप्ता ने बताया कि वर्षों से सिद्धीदात्री मां काली मंदिर की स्थापना दिवस समारोह में भव्य तरीके से शोभा यात्रा निकाली जाती है। इस वर्ष आठवीं स्थापना दिवस कार्यक्रम को लेकर पूरे मंदिर परिसर को भव्य तरीके से सजाया गया। शोभा यात्रा में संतोष गुप्ता, नवरतन गुप्ता, शंकर गुप्ता, बासुदेव गुप्ता, वार्ड सदस्य अखिलेश कुमार, शंकर भगत, मनोज उर्फ मुन्ना गुप्ता, बिरेन्द्र गुप्ता, धर्मेंद्र गुप्ता, सौरभ गुप्ता, शिव प्रसाद गुप्ता, छोटू गुप्ता, अजय गुप्ता, भोलू भगत, बिट्टू भगत, गोलू गुप्ता, विनय गुप्ता, शिवनाथ गुप्ता, प्रतीक गुप्ता, रुचि गुप्ता, रेणु देवी, गुंजा गुप्ता, गीता देवी, सीता देवी, रिचा भगत, पूजा भगत समेत सैकड़ों श्रद्धालुगण और धर्मप्रेमी भक्त शामिल थे।

पिकअप पर लदे 642 लीटर अंग्रेजी शराब के साथ दो तस्कर गिरफ्तार

अररिया। जिले की जोकीहाट थाना पुलिस ने शुक्रवार रात शराब तस्करों के विरुद्ध बड़ी कार्रवाई की है। जोकीहाट थाना पुलिस ने एक पिकअप गाड़ी पर लदे 642 लीटर अंग्रेजी शराब के खेप को बरामद किया। गुप्त सूचना पर पुलिस ने जोकीहाट से गुजरने वाले सड़क पर चेकपोस्ट लगाकर वाहनों की चेकिंग शुरू की।जिस क्रम में पिकअप पर लदे अंग्रेजी शराब की बड़ी खेप बरामद की गई। जोकीहाट थानाध्यक्ष राजीव कुमार झा को शुक्रवार देर शाम सूचना मिली कि पश्चिम बंगाल से जोकीहाट थाना क्षेत्र होते हुए सड़क मार्ग से बिहार में अवैध अंग्रेजी शराब की बड़ी खेप गुजरने वाली है। वाहन चेकिंग के क्रम में ही देर संध्या एक पिकअप वाहन से 642 लीटर अंग्रेजी शराब की बड़ी खेप बरामद किया गया। बरामद शराब एवं शराब तस्करी में प्रयुक्त पिकअप वाहन को जब्त करते हुए पुलिस ने दो शराब तस्कर मो.जुनैद पिता मो. यूनुस और गोल्डेन मालदार पिता स्व. कालीचरण मालदार को भी गिरफ्तार किया है। जिससे पुलिस पूछताछ कर रही है। बरामद शराब के बैकवर्ड फॉरवर्ड लिंकेज की जांच पड़ताल की जा रही है।

मरीज की मौत आपातकालीन विभाग में तोड़फोड़, हिरासत में 22

कोलकाता। बेहाला विद्यासागर अस्पताल में मरीज की मौत! मरीज के परिजनों पर जरुरी कालीन विभाग और मेन गेट पर तोड़फोड़ करने का आरोप है। एक नर्सिंग स्टाफ को भी कथित तौर पर बाथरूम में ले जाया गया और पीटा गया। सूचना मिलने पर पर्णश्री थाने की भारी पुलिस बल पहुंची और स्थिति को नियंत्रित किया। मारपीट और तोड़फोड़ में शामिल होने के आरोप में 22 गिरफ्तार। अस्पताल सूत्रों के अनुसार, ठाकुरपुकुर निवासी तीस वर्षीय शेख महमूद आलम को शुक्रवार रात करीब आठ बजे अस्पताल लाया गया। उन्हें दिल का दौरा पड़ा था। इलाज शुरू किया गया। अस्पताल लाए जाने के बाद महमूद को दोबारा दिल का दौरा पड़ा। 8:40 पर दूसरा सीपीआर दिया गया। कोई लाभ नहीं हुआ। 8:50 पर उनका निधन हो गया। अस्पताल के मुताबिक, कोर्ट की इजाजत के बिना सरकारी अस्पताल का मेडिकल रिकॉर्ड किसी को देना संभव नहीं है। आरोप है कि रात करीब 10:00 बजे करीब 150 लोग आपातकालीन विभाग में घुस गए और तोड़फोड़ की। बाहरी गेट में भी तोड़फोड़ की गयी। नर्सिंग स्टाफ को भी पीटा गया। घटना में तीन नर्सिंग स्टाफ घायल हो गए।

दीक्षा देने के नाम पर गुरु ने शिष्या से किया दुष्कर्म

कोलकाता। दीक्षा देने के नाम पर गुरु ने शिष्या से किया दुष्कर्म इस घटना से बीरभूम के दुबराजपुर में काफी उत्तेजना है। पीड़िता के पति की शिकायत पर आरोपी गुरु को गिरफ्तार कर लिया गया है। उसने दुष्कर्म की बात भी कबूल कर ली। लेकिन उन्होंने कहा कि उन्होंने महिला की सहमति से ऐसा किया। आरोपी गुरुदेव का नाम उज्ज्वल दास है। इसी सप्ताह वह दुबराजपुर ब्लॉक के जशपुर पंचायत के एक गांव में दीक्षा देने गये थे। उसी गांव के रहने वाले एक शख्स दुल्हन से रेप का आरोप लगा है। महिला और उसका पति दीक्षा लेने गए थे। सबसे पहले पति को दीक्षा दी जाती है।

मुख्यमंत्री ने निर्माणाधीन बिहार अभियंत्रण एवं बिहार स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय का किया निरीक्षण

निर्माण कार्य बेहतर ढ़ंग से व तेजी से करायें

एजेंसी

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने मीठापुर में निमार्णाधीन बिहार अभियंत्रण विश्वविद्यालय तथा बिहार स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान मुख्यमंत्री ने कहा कि इस परियोजना के तहत विश्वविद्यालय के बनाये जा रहे मुख्य भवन, प्रशासनिक एवं शैक्षणिक भवन, परीक्षा एवं मूल्यांकन भवन, सभागार, स्टॉफ क्वाटर सहित सभी संरचनाओं का निर्माण कार्य बेहतर ढंग से और तेजी से करायें। मुख्यमंत्री ने कहा कि निर्माण कार्य ऐसा हो कि परिसर देखने में अच्छा लगे। उन्होंने कहा कि मीठापुर के इस क्षेत्र में चंद्रगुप्त प्रबंधन संस्थान, आर्यभट्ट ज्ञान विश्वाविद्यालय, निफ्ट, चाणक्या लॉ यूनिवर्सिटी एवं मौलाना मजहरूल हक अरबी एवं फारसी विश्वविद्यालय जैसे प्रमुख शैक्षणिक संस्थान बनाये गए हैं। यह पूरा क्षेत्र काफी अच्छा हो गया है। इन दोनों विश्वविद्यालय का निर्माण कार्य पूर्ण हो जायेगा तो यह क्षेत्र और भी अच्छा दिखेगा। निरीक्षण के दौरान विज्ञान, प्रावैधिकी एवं तकनीकी शिक्षा विभाग की सचिव डॉ प्रतिमा एस वर्मा तथा भवन निर्माण विभाग के सचिव कुमार रवि ने परियोजना के संबंध में रेखाचित्र के माध्यम से विस्तृत जानकारी दी। साथ ही विकास आयुक्त सह स्वास्थ्य विभाग के अपर मुख्य सचिव प्रत्यय अमृत ने प्रस्तुतीकरण एवं रेखाचित्र के माध्यम से बिहार स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय के निर्माण कार्य से संबंधित विस्तृत जानकारी दी। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार द्वारा बिहार के बालक एवं बालिकाओं को उच्च स्तर की तकनीकी शिक्षा प्रदान करने के लिए 27 जुलाई, 2022 को बिहार अभियंत्रण विश्वविद्यालय की स्थापना की गई तथा इसके भवन के निर्माण के लिए मीठापुर, पटना में पांच एकड़ भूमि आवंटित की गई। मुख्य भवन चार मंजिल का होगा। इसका कुल निर्मित क्षेत्रफल 1,11,732 वर्गफीट है। इसके भूतल पर डीन कार्यालय, रजिस्ट्रार का कार्यालय, कैफेटेरिया एवं अन्य कार्यालय, प्रथम तल पर कुलपति कार्यालय, मीटिंग हॉल तथा मूल्यांकन केन्द्र बनाया जा रहा है। द्वितीय तल पर कार्यालय कक्ष, मूल्यांकन केन्द्र, भंडारगृह आदि तृतीय तल पर 05 अभिलेखागार, भंडारगृह आदि तथा चतुर्थ तल पर मूल्यांकन केन्द्र एवं 02 बड़े बहुउद्देशीय हॉल बनाया जा रहा है। साथ ही इस परिसर में 01 अतिथि गृह का भी निर्माण किया जा रहा है, जिसमें 08 कमरे तथा 04 सुइट रूम का निर्माण किया जाना है। यहां 01 केयर टेकर आवास का भी निर्माण किया जा रहा है।

राज्य में गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा शिक्षा (मेडिकल एजुकेशन) उपलब्ध कराने के उद्देश्य से महत्वाकांक्षी योजना के रूप में सात निश्चय-2 योजना के अंतर्गत स्थापित बिहार स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय के नये भवन निर्माण कार्य किया जा रहा है। भवन का कुल क्षेत्रफल 27567 वर्गमीटर है। परियोजना के दो भाग हैं- प्रथम भाग मुख्य विश्वविद्यालय भवन, जिसका कुल क्षेत्रफल 12,645 वर्ग मीटर है, जिसके अंतर्गत प्रशासनिक सह शैक्षणिक भवन, परीक्षा कक्ष, औषधालय, बहुउद्देशीय मंच, प्रतीक्षालय कक्ष, सूचना केन्द्र, नामांकन शाखा, कुलाधिपति कक्ष, प्रशिक्षण सह स्थानन शाखा इत्यादि हैं तथा दूसरे भाग उपभवन, जिसका कुल क्षेत्रफल 14922 वर्ग मीटर है, जिसके अंतर्गत कुलपति आवास, विश्वविद्यालय अतिथि गृह तथा बहुउद्देशीय सभागार की व्यवस्था की गई है।

बिहार विधानसभा की चार सीटों पर हुए उपचुनाव में राजग की जीत

एजेंसी

पटना। बिहार विधानसभा की चार सीटों पर हुए उपचुनाव में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) की जीत हुई है। इसके बाद मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के घर पर गठबंधन दल के नेताओं का आने का सिलसिला शुरू हो गया है। सबसे पहले भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष दिलीप जायसवाल और डिप्टी सीएम सम्राट चौधरी मुख्यमंत्री आवास पहुंचे हैं। लोजपा (आर) के भी कई नेताओं का सीएम आवास में आना हुआ है। इन नेताओं में संजय झा और मनीष वर्मा शामिल हैं। बिहार विधानसभा की चार सीटों हुई मतगणना में सबसे चौंकाने वाला परिणाम बेलागंज से सामने आया है। यहां राजद ने 34 साल बाद यह सीट गंवा दी है। बेलागंज विस सीट से जदयू उम्मीदवार मनोरमा देवी ने जीत हासिल की है। इमामगंज विस सीट पर केंद्रीय मंत्री जीतनराम मांझी का कमाल बरकरार रहा है। जीतनराम मांझी की बहू दीपा मांझी ने इमामगंज से जीत दर्ज की है। रामगढ़ विस सीट पर भाजपा के अशोक सिंह ने परचम लहराया है। तरारी विधानसभा सीट की बात करें तो यहां से भाजा उम्मीदवार और सुनील पांडे के बेटे विशाल प्रशांत ने परचम लहराया है।

34 साल बाद राजद का किला ध्वस्त

बेलागंज विधानसभा सीट से जदयू उम्मीदवार मनोरमा देवी ने राजद के 34 साल के किले को ध्वस्त कर दिया है। मनोरमा देवी को 73,334 वोट मिला। उन्होंने 21,391 मतो से जीत दर्ज की। बेलागंज में दूसरे नबंर पर राजद उम्मीदवार विश्वनाथ कुमार सिंह रहे। उन्हें 51,943 वोट मिले।

इमामगंज सीट पर बहू ने रखी ससुर की लाज

इमामगंज विधानसभा सीट पर दीपा मांझी ने 5 हजार 945 मतों से जीत हासिल की। दीपा मांझी को 53,435 वोट मिले। इस सीट से मांझी की प्रतिष्ठा दांव पर लगी थी यानी बहू दीपा मांझी ने जीत हासिल कर ससुर की प्रतिष्ठा बचा ली है। दूसरे स्थान पर राजद प्रत्याशी रौशन कुमार मांझी रहे। उन्हें 47,490 वोट मिले। इमामगंज में जीतनराम मांझी का कब्जा था और उनके सांसद चुने जाने के बाद इस सीट पर विधानसभा का उपचुनाव कराया गया।

भाजपा के प्रशांत ने माले के गढ़ तरारी में लहराया भगवा

तरारी विधानसभा क्षेत्र में भाजपा ने बाहुबली पूर्व विधायक सुनील पांडेय के बेटे विशाल प्रशांत को उम्मीदवार बनाया था। ये सीट भाकपा-माले के विधायक सुदामा प्रसाद के सांसद बन जाने के कारण खाली हुई थी। यहां से महागठबंधन में शामिल माले ने राजू यादव को उम्मीदवार बनाया था। विशाल प्रशांत ने अपने विरोधी राजू यादव को 10 हजार 507 मतों से परास्त कर दिया। प्रशांत को 78 हजार 564 मत मिले जबकि राजू यादव को 68 हजार 57 मत प्राप्त हुए। भाजपा ने चुनाव से पहले सुनील पांडेय और उनके बेटे विशाल प्रशांत को पार्टी में शामिल कराया था और उन्हें अपना उम्मीदवार बना दिया था।

रामगढ़ भी नहीं बचा पाई राजद

रामगढ़ विधानसभा सीट पर उपचुनाव में भाजपा उम्मीदवार अशोक कुमार को कुल 62,257 वोट मिले। उन्होंने निकटम प्रतिद्वंद्वी से 1,362 मतों से जीत दर्ज की। आखिरी राउंड तक मुकाबले में बने रहने वाले बसपा उम्मीदवार को कुल 60,895 मत मिले।

मोदी -नीतीश राज में बिहार का हो रहा चौमुखी विकास : उपेंद्र कुशवाहा

एजेंसी

नवादा। राष्ट्रीय लोक मोर्चा के प्रमुख पूर्व केंद्रीय मंत्री और राज्यसभा सदस्य उपेन्द्र कुशवाहा बिहार संवाद यात्रा पर शनिवार को नवादा पहुंचे। यहां कार्यकताओं ने उनका गरमजोशी से स्वागत किया। कार्यकताओं ने चांदी का मुकुट पहनाया। बाद में मौर्या सभागार में कार्यकताओं को संबोधित किया। उन्होंने आगामी बिहार विधानसभा चुनाव की तैयारियों में अभी से ही जुट जाने का आह्वान कार्यकताओं से किया।

उन्होंने एनडीए सरकार की उपलब्धियों को गिनाया। कहा कि पहले संगठन को मजबूत बनाएं। सदस्यता अभियान को तेज कर लक्ष्य को हासिल करें। विकास की चर्चा करते हुए कहा कि सड़क, बिजली, स्वास्थ्य, कृषि सहित सभी क्षेत्रों में तेज गति से काम हो रहा है। आज बिहार राज्य की किसी भी जिले से तीन चार घंटे में पटना पहुंचा जा सकता है। 2005 से पहले बिहार का बुरा हाल था। तब बिजली एक दो घंटे रहती थी, आज एनडीए सरकार में 18 से 22 घंटे लगातार बिजली मिलती है। खेती - किसानी पर निर्भर लोगों की मुश्किलें कम हुई है। डबल इंजन की सरकार के कारण बिहार में विकास संभव हो पा रहा है। 2025 का बिहार विधानसभा चुनाव पूरी मजबूती से एनडीए लड़ेगी और अधिक से अधिक सीटों पर जीतेगी। उन्होंने कहा कि नवादा में केंद्रीय विद्यालय तकनीकी कारणों से नहीं खुल सका है। कार्यक्रम की अध्यक्षता पार्टी के जिलाध्यक्ष राजेंद्र कुशवाहा ने किया। मौके पर पार्टी नेता डॉ. सुधीर कुमार, डॉ. मनोज कुमार, सत्येंद्र प्रसाद साहा, रविंद्र प्रसाद गुप्ता, दिलीप प्रसाद, डॉ.बसंत प्रसाद, उमाशंकर प्रसाद, बेबी कुशवाहा, अशोक मंडल आदि उपस्थित थे।

जल संसाधन मंत्री विजय कुमार चौधरी ने अनुकंपा के आधार पर 37 कर्मियों को दिया नियुक्ति पत्र

एजेंसी

पटना। बिहार सरकार के जल संसाधन विभाग के अंतर्गत अनुकंपा के आधार पर निम्न वर्गीय लिपिक एवं कार्यालय परिचारी के पद पर नियुक्त कुल 37 कर्मियों को जल संसाधन मंत्री विजय कुमार चौधरी ने शनिवार को नियुक्ति पत्र वितरित किया।

इनमें निम्न वर्गीय लिपिक के पद पर कुल 14 अभ्यर्थियों जबकि कार्यालय परिचारी के पद पर कुल 23 अभ्यर्थियों की नियुक्ति की गई है। सिंचाई भवन, पटना के सभागार में आयोजित नियुक्ति पत्र वितरण समारोह में जल संसाधन विभाग के प्रधान सचिव संतोष कुमार मल्ल, अपर सचिव संजीव कुमार सिन्हा, मुख्य अभियंता (मुख्यालय) मिथिलेश कुमार दिनकर एवं अन्य वरीय अधिकारी मौजूद थे। समारोह को संबोधित करते हुए जल संसाधन मंत्री विजय कुमार चौधरी ने कहा कि बिहार सरकार अपने कर्मियों की असामयिक मृत्यु की घड़ी में उनके शोकाकुल परिवार के साथ खड़ी रहती है और अनुकम्पा के आधार पर उनके परिजन को फिर से काम करने का मौका देती है। नवनियुक्त कर्मियों को बधाई एवं शुभकामना देते हुए उन्होंने कहा कि विभाग के अनुशासन का पालन करते हुए आप सभी अपने दायित्वों का कुशलता पूर्वक निर्वहन करें। उन्होंने विश्वास जताया कि नई नियुक्तियों से विभागीय कार्यों के निष्पादन की गति तेज होगी। जल संसाधन मंत्री ने कहा कि नीतीश सरकार देश में रोजगार का पर्याय बन गई है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के निर्देश पर राज्य सरकार के सभी विभागों में बड़े पैमाने पर नई नियुक्तियां की जा रही है और मुख्यमंत्री खुद इसकी प्रगति की नियमित अनुश्रवण कर रहे हैं। इस मौके पर प्रधान सचिव संतोष कुमार मल्ल ने कहा कि जल संसाधन विभाग विपदा की घड़ी में अपने कर्मियों के परिजनों के साथ खड़ा है।

उपचुनाव में छह सीटों पर जीत से ममता उत्साहित, अभिषेक ने भी की टिप्पणी

संवाददाता

कोलकाता। पश्चिम बंगाल की छह विधानसभा सीटों पर हुए उपचुनावों में तृणमूल कांग्रेस ने बड़ी जीत दर्ज की है। छः में से पांच सीटों पर तृणमूल के प्रत्याशियों की जीत घोषित हो चुकी है। तालडांगरा में मतगणना जारी है, लेकिन इस सीट पर भी तृणमूल के प्रत्याशी बढ़त बनाए हुए हैं। जब उपचुनावों का परिणाम लगभग स्पष्ट हो गया, तब मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने जनता का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि यह जीत तृणमूल को जनता के लिए और अधिक जोश के साथ काम करने का उत्साह प्रदान करेगी। वहीं, तृणमूल के राष्ट्रीय महासचिव अभिषेक बनर्जी ने भी जनता का धन्यवाद करते हुए सोशल मीडिया पर भाजपा को 'जमींदार' कहकर निशाना साधा।

सोशल मीडिया पर पोस्ट करते हुए ममता बनर्जी ने लिखा, मेरे दिल से मां-माटी-मानुष को प्रणाम। आपका यह आशीर्वाद हमें और सक्रिय होकर काम करने की प्रेरणा देगा। हम सब साधारण लोग हैं। यही हमारी पहचान है। इसके साथ ही उन्होंने भाजपा पर कटाक्ष करते हुए कहा कि हम जमींदार नहीं हैं। हम जनता के पहरेदार हैं। जनता का आशीर्वाद हमेशा हमारे दिल को छूता रहेगा।

अभिषेक बनर्जी ने भी सोशल मीडिया पर उपचुनाव में तृणमूल की जीत को ऐतिहासिक बताते हुए लिखा, छह सीटों पर तृणमूल कांग्रेस के उम्मीदवारों की जीत के लिए शुभकामनाएं। बंगाल को अपमानित करने के लिए मीडिया, हाईकोर्ट के कुछ हिस्सों और जमींदारों द्वारा रची गई साजिशों को तृणमूल ने नाकाम कर दिया है। उन्होंने मदारीहाट की जनता को खासतौर पर धन्यवाद देते हुए कहा, मदारीहाट की जनता को विशेष धन्यवाद, जिन्होंने हमें पहली बार उनकी सेवा करने का मौका दिया। लोकतांत्रिक तरीके से बंगाल-विरोधियों को हराने के लिए मैं पूरे पश्चिम बंगाल की जनता के प्रति नतमस्तक हूं।

दरअसल पश्चिम बंगाल की छह सीटों–कूचबिहार के सिताई, अलीपुरद्वार के मदारीहाट, पश्चिम मेदिनीपुर के मेदिनीपुर, बांकुड़ा के तालडांगरा और उत्तर 24 परगना के हाड़ोआ व नैहटी में 13 नवंबर को उपचुनाव हुए थे। शनिवार सुबह से मतगणना शुरू हुई और दोपहर तक पांच सीटों पर तृणमूल कांग्रेस के प्रत्याशियों की जीत की घोषणा हो गई।

भ्रष्टाचार जिले जिले में एजेंट, किराए में लिया जाता था बैंक अकाउंट

टैब भ्रष्टाचार में गिरफ्तारियों की संख्या 32 हो गयी

संवाददाता

कोलकाता। टैब कांड की तह तक जाने के लिए पुलिस जांच तेज कर रही है। पिछले 24 घंटे में 5 नई गिरफ्तारियां हुई हैं। टैब घोटाले में अब तक गिरफ्तारियों की संख्या बढ़कर 32 है। राज्य पुलिस ने अब तक 1,220 खाते फ्रीज कर दिए हैं। अब तक 67 लाख 76 हजार 828 रुपये फ्रीज किये गये हैं। पुलिस की सख्ती का नतीजा है कि विभिन्न जिलों में फैले गिरोह के नेटवर्क को धीरे-धीरे ध्वस्त किया जा रहा है। नतीजतन, पुलिस सूत्रों से पता चला है कि टैब मनी गायब होने के मामले न के बराबर हैं।

टैब मामले की जांच कर रहे अधिकारियों ने बताया कि टैब जालसाजों के अलग-अलग जिलों में एजेंट हैं। ये एजेंट अलग-अलग तरीकों से बैंक खातों तक पहुंच बनाते थे। इसके बदले एजेंटों को कमीशन मिलता था। तय कमीशन के आधार पर एजेंटों से अनुबंध किया जाता था। पूर्वी बर्दवान जिला पुलिस ने किशनगंज से रबींद्रप्रसाद सिंह नाम के कारोबारी को गिरफ्तार किया है। रवीन्द्रप्रसाद की जेरॉक्स की दुकान है। यह व्यक्ति एक एजेंट के रूप में काम करता था। किशनगंज में दो युवकों से बैंक खाते जुटाये। रवीन्द्र प्रसाद से पूछने पर पुलिस को पता चला कि किसी को प्रत्येक अकाउंट के लिए 500 रुपये तो किसी को 300 रुपये कमीशन के तौर पर दिये गये थे। पुलिस ने यह भी कहा कि हुगली ग्रामीण पुलिस ने चोपड़ा से दो लोगों को गिरफ्तार किया है।

11वीं-12वीं के छात्रों के टैब मनी गायब होने का यह पहला मामला है। हालांकि, घटना सामने आने के बाद से ही पुलिस की सक्रियता सक्रिय थी। इससे जहां छूटा हुआ पैसा वापस आ रहा है, वहीं वंचित छात्रों को भी पैसा वापस मिल रहा है। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने गुरुवार को 2 करोड़ लड़के-लड़कियों को दिए गए 1600 करोड़ रुपये के टैब में से 2 करोड़ रुपये की धोखाधड़ी का मामला सामने आया है। शुक्रवार को राज्य पुलिस ने जानकारी दी कि मालदह से 1 व्यक्ति को गिरफ्तार किया गया है। मालदह पुलिस ने पूर्वी मेदिनीपुर से भी दो लोगों को गिरफ्तार किया है। कोलकाता पुलिस अब तक 122 अकाउंट फ्रीज कर चुकी है। पुलिस के मुताबिक, विभिन्न बैंकों से बात कर रुके हुए 3 लाख 6 हजार 673 रुपये वापस करने की प्रक्रिया शुरू हो गई है।

राज्य सरकार 11वी-12वी छात्रों की पढ़ालिखा सुबिधा केलिए तरुण स्वप्न प्रकल्प माध्यम से रुपये का अनुदान प्रदान करती है। आरोप है कि कई छात्रों के खाते में पैसे जमा नहीं हुए। कहीं-कहीं एक छात्रों का पैसा दूसरे खाते में जाने की शिकायतें मिली हैं। प्रदेश भर में दो हजार से ज्यादा छात्रों से अलग-अलग तरीके से ठगी की गई। जांचकताओं का दावा है कि उन्हें छात्रों के पैसों के पीछे बड़ी साजिश के निशान मिले हैं। कई लोगों को पुलिस पहले ही गिरफ्तार कर चुकी है। पता चला है कि टैब मामले में अब तक 32 लोगों की गिरफ्तारी हो चुकी है। इतना ही नहीं, पुलिस सूत्रों ने यह भी बताया कि 1,220 बैंक खाते फ्रीज कर दिए गए हैं। 70 लाख से ज्यादा रुपए जब्त किए गए हैं। इसमें से 122 अकाउंट को कोलकाता पुलिस ने सीज कर दिया है। उत्तरी दिनाजपुर से चोपड़ा का नाम बार-बार टैब-कांड में सामने आया है। वहां से कई आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस के मुताबिक पूरे घटनाक्रम की जड़ चोपड़ा ही है। यहीं से टैब के पैसे की योजना बनाई गई थी। हालांकि, सिलीगुड़ी, मालदा से भी कई गिरफ्तारियां हुई हैं। गिरफ्तार किए गए लोगों में चाय श्रमिक, निर्माण श्रमिक, स्कूल शिक्षक, शिक्षा कार्यकर्ता शामिल हैं।

जल संसाधन मंत्री विजय चौधरी ने एसओपी की समीक्षा में दिए निर्देश

एजेंसी

पटना। जल संसाधन मंत्री विजय कुमार चौधरी ने जल संसाधन विभाग द्वारा तैयार ह्यायोजनाओं के गुणवत्ता प्रबंधन के लिए मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी) की समीक्षा कर कई निर्देश दिये। सिंचाई भवन सभागार में शनिवार को आयोजित समीक्षा बैठक में प्रधान सचिव संतोष कुमार मल्ल तथा मुख्यालय के वरीय अधिकारी मौजूद थे।

एसओपी में योजनाओं के गुणवत्ता प्रबंधन के लिए बिंदुवार मापदंड तय करने के लिए दिशा-निर्देश दिये गए हैं। मंत्री ने इसकी विस्तृत समीक्षा करते हुए कहा कि योजनाओं में गुणवत्ता सुनिश्चित करना मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की शीर्ष प्राथमिकताओं में शामिल है। हमें विभागीय एसओपी के हर बिंदु पर गंभीरता से विचार-विमर्श करने के बाद ही इसे अंतिम रूप देना चाहिए, ताकि भविष्य में जल संसाधन विभाग की योजनाओं में मानक के अनुरूप पूर्ण गुणवत्ता और पारदर्शिता सुनिश्चित करने में किसी भी स्तर पर कोई कठिनाई नहीं हो। जल संसाधन मंत्री ने विभागीय अधिकारियों को निर्देश दिया कि जल संसाधन विभाग की सभी योजनाओं में गुणवत्तापूर्ण सामग्री का उपयोग और मानक संचालन प्रक्रिया एवं कार्यप्रणाली का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए हर जरूरी कदम उठाएं। उन्होंने कहा कि एसओपी के अनुरूप गुणवत्ता प्रबंधन के सभी प्रावधानों का पालन सुनिश्चित कराएं और सभी कार्यों को समयबद्ध ढंग से पूरा कराएं।

संक्षिप्त खबरें

यमुनानगरः हेरोइन समेत एक युवक काबू

यमुनानगर। एंटी नारकोटिक्स सेल की टीम ने 20 ग्राम हेरोइन के साथ एक युवक को गिरफ्तार किया। आरोपी के खिलाफ केस दर्ज कर कोर्ट में पेश किया जहां से उसे न्यायिक हिरासत में भेज दिया। आरोपी पर पहले भी इसी प्रकार के दो मामले दर्ज हैं जो कोर्ट में विचाराधीन है। शनिवार को यह जानकारी देते हुए सेल के इंचार्ज जसविंदर लालर ने बताया कि दुर्गा गार्डन में एक युवक छोटी लाइन पर हेरोइन बेचने काम करता है। गुप्त सूचना के आधार पर टीम का गठन किया गया। टीम ने मौके पर जाकर वहां घूम रहे युवक को गिरफ्तार किया। मौके पर ड्यूटी मजिस्ट्रेट एईटीओ को बुलाया गया। जिसके सामने पकड़े गए युवक की तलाशी ली तो उसके पास से 20 ग्राम हेरोइन बरामद हुई।

एनएच-9 पर दूध का टैंकर व ट्रक भिड़े

रोहतक। नेशनल हाईवे नंबर-9 पर गांव चुलियाणा मोड़ के समीप एक ट्रक व दूध टैंकर के बीच टक्कर हो गई। जिससे दोनों वाहनों के चालकों की मौत हो गई। घटना के बाद सांपला पुलिस मौके पर पहुंची और शवों को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। पुलिस ने इस संबंध में मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। बताया जा रहा है कि दिल्ली की तरफ दूध लेकर जा रहा टैंकर डिवाइडर तोड़कर दूसरी साइड से आ रहे ट्रक के साथ टकरा गया। हादसे के चलते एक तरफ सड़क पर जाम लग गया। पुलिस के अनुसार भिवानी निवासी अमित ट्रक में पाइप भरकर सिकंदराबाद से राजस्थान के नोख ले जा रहा था।

कबाड़ में आग से तीन सिलैंडर फटे, तीन लोग बुरी तरह झुलसे

बाड़मेर। बालोतरा में जसोल थाना क्षेत्र के मुंगड़ा रोड पर इंडियन गैस एजेंसी के गोदाम के पास रखे कबाड़ में अचानक आग लग गई। धीरे-धीरे आग गैस सिलेंडरों तक पहुंच गई और एक मिनट के भीतर तीन सिलेंडर फट गए। धमाके इतने जबरदस्त थे कि उनकी गूंज शहर के अलग-अलग कोनों तक सुनाई दी। गोदाम में खड़ी सिलेंडरों से भरी वैन आग की चपेट में आते-आते बची। हादसे में तीन लोग बुरी तरह झुलस गए। करीब 30 मिनट बाद आग पर काबू पाया जा सका।

तस्करों को नशा सप्लाई करने वाला काबू

फरीदाबाद। नशा तस्करों को नशा उपलब्ध करवाने वाले आरोपी को अपराध शाखा बदरपुर बॉर्डर की टीम ने गिरफ्तार किया है। पुलिस प्रवक्ता ने बताया कि अपराध शाखा बदरपुर बॉर्डर की टीम ने आरोपी दिवाकर सिंह को भगत सिंह कॉलोनी से काबू करके आरोपी से 490 ग्राम गांजा बरामद किया गया था। जिसके खिलाफ थाना सिटी बल्लबगढ़ में नशा तस्करी की धाराओं में मामला दर्ज किया गया था। आरोपी ने बताया कि यह गांजा को देव नाम के व्यक्ति से दो हजार रुपये में खरीदा है। मामले में आगामी कार्रवाई करते हुए अपराध शाखा टीम ने आरोपी देव कुमार को गुडियर कंपनी के सामने से गिरफ्तार किया है।

रेलवे ट्रैक पर टूटी स्टेयरिंग

जबलपुर। स्लीमनाबाद थाना क्षेत्र के सलैया रेलवे फाटक क्रमांक 1042 सलैया फाटक में रेलवे ट्रैक पर ट्रक फंस गया, जिसे भारी मशक?कत के बाद बाहर निकाला गया है। इस मामले में रेलवे जबलपुर की ओर से जानकारी दी गई कि जब सलैया रेलवे फाटक को ट्रक द्वारा पार किया जा रहा था, तभी अचानक से तेज आवाज आई और स्टेयरिंग बीच ट्रैक पर टूट गई। जिससे रेलवे यातायात सहित पानउमरिया कटनी सड़क मार्ग अवरुद्ध हो गया।

सिलेंडर फटने से छह पुलिस कर्मी झुलसे

सिद्धार्थनगर। जनपद के बांसी कस्बे में तहसील के पास एक व्यवसायिक भवन में स्थित कैफे में आग लग गई।आग बुझाते समय सिलेंडर फटने से बांसी कोतवाल सहित छह पुलिस कर्मी झुलस गये हैं। कठिन परिश्रम के बाद आग बुझाने में सफलता मिल सकी है। घायलों को इलाज के लिए सिद्धार्थनगर मेडिकल कालेज में भर्ती कराया गया है। पुलिस अधीक्षक प्राची सिंह ने मेडिकल कालेज पहुंचकर घायलों की जानकारी ली। जनपद के बांसी कस्बे में तहसील के पास नंदलाल ज्वेलर्स का भवन है।इसी में कैफे तथा एचडीएफसी बैंक एवं ज्वैलरी सहित कई अन्य दुकाने हैं। जिसमें से कैफे में अचानक आग लग गई।

यूपी के दो गौमांस तस्कर गिरफ्तार

हरिद्वार। हरिद्वार की गौवंश संरक्षण स्क्वाड टीम तथा भगवानपुर पुलिस ने संयुक्त कार्रवाई करते हुए एक सेंट्रो कार से गौ मांस बरामद कर दो गौ तस्करों को गिरफ्तार किया है। भगवानपुर पुलिस को सूचना प्राप्त हुई की सिकरौदा तिराहे पर खड़ी एक सेंट्रो कर से गौ मांस की तस्करी की जा रही है। पुलिस ने तत्काल मौके पर जाकर कार में रखे 50 किलो गौ मांस के साथ कार मे मौजूद दो लोगों को गिरफ्तार किया।

ट्रॉली से टकराई कार, चार घायल

राजगढ़। ब्यावरा-सिरोंज राजमार्ग पर सुठालिया थाना क्षेत्र में ग्राम मोठबड़ली जोड़ के समीप सड़क पर रेत से भरे खड़े ट्रेक्टर-ट्रॉली से कार टकरा गई, हादसे में कार सवार चार लोग घायल हो गए, पुलिस द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार ब्यावरा- सिरोंज राजमार्ग पर ग्राम मोठबड़ली के समीप सड़क पर खड़े रेत से भरे ट्रेक्टर-ट्रॉली से कार टकरा गई।

भारतीय संविधान पूरी दुनिया का मार्गदर्शक : ओम बिरला

- देश के लोकतांत्रिक मूल्यों को सुदृढ़ करने में सहायक होगा
- संविधान दिवस 26 नवंबर को मनाया जाएगा

सोनीपत। एजेंसी

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने भारतीय संविधान को दुनिया का मार्गदर्शक बताते हुए कहा कि यह हमारी राष्ट्रीय गौरवशाली विरासत है। शनिवार को ओपी जिंदल ग्लोबल यूनिवर्सिटी में संविधान संग्रहालय के उद्घाटन के दौरान उन्होंने कहा कि भारतीय संविधान कानूनी दस्तावेज होने के साथ साथ सामाजिक परिवर्तन का माध्यम भी है। उन्होंने कहा कि संविधान दिवस 26 नवंबर को मनाया जाएगा, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की पहल से 2015 में आरंभ हुआ। यह दिवस सभी शिक्षण संस्थानों में विशेष कार्यक्रमों के माध्यम से संविधान के प्रति जागरूकता बढ़ाने का अवसर है। श्री बिरला ने संविधान संग्रहालय को नई पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बताया और कहा कि यह देश के लोकतांत्रिक मूल्यों को सुदृढ़ करने में सहायक होगा। श्री बिरला ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के विचारों को याद करते हुए कहा कि पूरी दुनिया गांधी जी के आदर्शों को अपना रही है। उन्होंने कहा कि संविधान ने समानता की नींव रखी, और यह वसुधैव कुटुंबकम की भारतीय संस्कृति को आगे बढ़ाता है।

उन्होंने इस संग्रहालय के निर्माण के लिए सांसद और विश्वविद्यालय के कुलपति नवीन जिंदल का आभार व्यक्त किया। केंद्रीय कानून मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने संविधान को स्वतंत्रता, एकता, और समाजवाद का प्रतीक बताया। उन्होंने भारत को मदर ऑफ डेमोक्रेसी बताते हुए कहा कि हमारे संविधान निमार्ताओं ने समानता और स्वतंत्रता के विचारों को प्राथमिकता दी। उन्होंने संग्रहालय निर्माण के लिए विश्वविद्यालय की सराहना की।

सांसद नवीन जिंदल ने कहा कि भारतीय संविधान ने देश को लोकतांत्रिक मूल्य प्रदान किए हैं। संग्रहालय संविधान निर्माण, उसके विकास और देश के विकास में इसकी भूमिका को प्रदर्शित करेगा। विश्वविद्यालय परिसर में चार दिवसीय सेमिनार का आयोजन भी किया गया है। इस अवसर पर भाजपा जिला अध्यक्ष जसवीर दोदवा, उपायुक्त डॉ. मनोज कुमार, डीसीपी ईस्ट परवीना पी. और विश्वविद्यालय के कुलपति सी. राजकुमार सहित कई अन्य भी उपस्थित रहे।

सीएसआर फंड आने पर स्टूडेंट्स को उपलब्ध कराए जाएंगे स्वेटर और जूते : दिलावर

जयपुर। एजेंसी

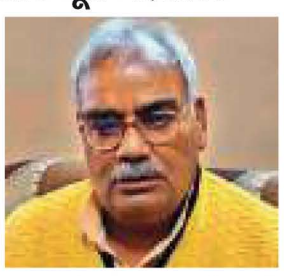

राजस्थान के सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले स्टूडेंट्स को सर्दी में स्वेटर और जूते के लिए थोड़ा और इंतजार करना पड़ सकता है। शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने कहा है कि फिलहाल शिक्षा विभाग स्टूडेंट्स को फ्री स्कूल ड्रेस ही देगा। अगर हमारे पास पर्याप्त सीएसआर (कॉरपोरेट सोशल रिस्पांसिबिलिटी) फंड आएगा, तब स्टूडेंट्स को स्वेटर और जूते भी उपलब्ध कराए जाएंगे।

उन्होंने पूर्व कांग्रेस सरकार पर भी निशाना साधा। महात्मा गांधी इंग्लिश मीडियम स्कूलों की बदहाली के लिए पूर्व सरकार को जिम्मेदार ठहराया। शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने कहा कि राजस्थान के शिक्षा विभाग द्वारा स्टूडेंट्स को फ्री स्वेटर और जूते (शूज) देने की घोषणा नहीं की गई है। शिक्षा विभाग द्वारा जो यूनिफॉर्म स्टूडेंट्स को दी जाती है। उसके साथ हम सीएसआर एक्टिविटी के तहत स्वेटर और जूते (शूज) स्टूडेंट्स को देने की कोशिश करेंगे। शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने कहा कि कांग्रेस की पूर्व सरकार ने काफी पाप किए हैं। यहां बिल्डिंग नहीं थी, वहां उन्होंने स्कूल खोल दिए। जहां इंग्लिश मीडियम में पढ़ाने वाले नहीं थे। वहां उन्होंने इंग्लिश मीडियम स्कूल का बोर्ड लगा दिया। यह कांग्रेस ने राजस्थान के स्टूडेंट के साथ सबसे बड़ी शत्रुता की है। जहां बिल्डिंग नहीं थी, टीचर नहीं थे। फिर भी उस स्कूल को इंग्लिश मीडियम बना दिया। पूर्व कांग्रेस सरकार ने हिंदी मीडियम स्कूलों से आधे टीचर इंग्लिश मीडियम स्कूलों में भेज दिए। इससे न हिंदी मीडियम स्कूल वाले स्टूडेंट्स पढ़ पाए और न ही इंग्लिश मीडियम स्कूल वाले स्टूडेंट्स की पढ़ाई हो पाई। इससे राजस्थान के स्टूडेंट्स का बहुत बड़ा नुकसान हुआ है।

काठमांडू महानगरपालिका ने ओली की पार्टी पर लगाया एक लाख रुपये का जुर्माना

काठमांडू। एजेंसी

काठमांडू की महानगरपालिका ने प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली की पार्टी पर एक लाख रुपये का जुर्माना लगाया है। यह जुमार्ना ओली की पार्टी द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम वाले स्थल पर गंदगी फैलाने के मामले में लगाया गया है। इस कार्यक्रम में प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली भी शरीक हुए थे। इस कार्यक्रम के तुरंत बाद ही मेयर बालेन शाह की तरफ से ओली की पार्टी नेकपा एमाले पर जुमार्ना लगाए जाने के लिए लिखित पत्र भेज दिया गया। इसे प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली और मेयर बालेन शाह के बीच कुछ समय से जारी शीतयुद्ध के रूप में भी देखा जा रहा है।

दरअसल, शनिवार को काठमांडू के दरबरमार्ग में सत्तारूढ़ दल एमाले की तरफ से एक शक्ति प्रदर्शन का कार्यक्रम रखा गया था। इस सम्मेलन की वजह से सार्वजनिक स्थल पर काफी गंदगी फैलने के कारण महानगरपालिका की तरफ से जुमार्ना लगाया गया है। काठमांडू महानगरपालिका की तरफ से एमाले पार्टी के अध्यक्ष यानि केपी शर्मा ओली के नाम जारी पत्र में सार्वजनिक स्थान पर गंदगी फैलाने के कारण महानगर के स्वच्छता नियम के मुताबिक एक लाख रुपये का जुमार्ना अदा करने को कहा गया है। शनिवार को ही प्रधानमंत्री ने अपनी पार्टी द्वारा आयोजित शक्ति प्रदर्शन कार्यक्रम को संबोधित किया था। काठमांडू में राजदरबार के मुख्य द्वार के आगे मंच बनाकर उसके सामने वाली सड़क पर करीब दस हजार कार्यकर्ताओं को उतारा गया था।

युवक ने पेट्रोल डालकर लगाई आग

जालौन। एट थाना क्षेत्र के ग्राम अमीटा में जमीन बंटवारे को लेकर एक युवक ने अपने बड़े भाई के घर के सामने पेट्रोल डालकर आत्महत्या कर ली। मृतक की पत्नी जेठ पर हत्या का आरोप लगा रही है। बताया गया है कि तीन दिन पहले भी मृतक युवक ने कीट नाशक दवा का सेवन कर लिया था। कोंच सर्किल के एट थाना क्षेत्र के ग्राम अमीटा निवासी वृंदावन के छोटे बेटे पुष्पेंद्र कुशवाहा उर्फ छोटे (35) ने शुक्रवार की शाम अपने बड़े भाई हरगोविंद उर्फ पप्पू के घर के सामने खुद के ऊपर पेट्रोल डाल कर आग लगा ली। आग से झुलसते युवक को देख गांव में हड़कंप मच गया और युवक बुरी तरह चीखने लगा। जलता हुआ युवक अपने घर पहुंचा और घर में चीखपुखार मच गई। लोग आग बुझाकर उसे लेकर कोंच सीएचसी के लिए निकले लेकिन देर रात इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। दोनों भाईयों में जमीन बंटवारे को लेकर विवाद चल रहा था। यह भी बताया गया कि मृतक युवक ने तीन दिन पहले भी जमीन के बंटवारे को लेकर कीट नाशक दवा खाकर आत्महत्या का प्रयास किया था।

एलन मस्क ने नेपाल के प्रधानमंत्री से स्टारलिंक संचालन की अनुमति मांगी

काठमांडू। एजेंसी

सैटेलाइट के जरिए दुनिया भर में इंटरनेट उपलब्ध कराने की योजना में रहे एलन मस्क ने नेपाल में भी इसके संचालन के प्रयास शुरू कर दिए हैं। इसके लिए खुद मस्क ने नेपाल के प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली से व्यक्तिगत रूप से आग्रह किया है। एलन मस्क ने शुक्रवार देर रात प्रधानमंत्री ओली से वीडियो कॉन्फ्रेंस के जरिए इस विषय पर बातचीत की। इस बारे में जानकारी साझा करते हुए प्रधानमंत्री ओली ने एक्स पर कहा कि एलन मस्क और उनके बीच नेपाल में स्टारलिंक के जरिए इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध कराने पर बातचीत हुई। ओली ने कहा कि सैटेलाइट के जरिए पूरे विश्व में इंटरनेट की सुविधा प्रदान करने वाले एलन मस्क की टीम ने नेपाल में स्टारलिंक के प्रयोग का डेमो भी दिखाया। मस्क ने नेपाल के प्रधानमंत्री से नेपाल में स्टारलिंक के प्रयोग की अनुमति देने का आग्रह किया है। स्टारलिंक की ग्लोबल लाइसेंसिंग एंड मार्केटिंग डायरेक्टर रेबेका स्किल हन्टर ने बताया कि मस्क ने प्रधानमंत्री ओली को स्टारलिंक की तरफ से दिए जाने वाले सुविधा और सहूलियत के बारे में जानकारी दी। उन्होंने प्रधानमंत्री ओली से स्टारलिंक के नेपाल में रजिस्ट्रेशन को लेकर कुछ कानूनों में बदलाव करने का भी आग्रह किया। हालांकि प्रधानमंत्री ने इस बारे में कोई भी जवाब नहीं दिया।

प्रेमी की खातिर महिला ने अपने दो बच्चों को मार डाला, गिरफ्तार

ग्रेटर नोएडा। बदलापुर थाना क्षेत्र के खेड़ा धरमपुर गांव में एक महिला ने अपने दो बच्चों को गला दबाकर मार डाला और खुद भी आत्महत्या करने की कोशिश की लेकिन समय रहते पुलिस ने उसे बचा लिया । अब पुलिस ने उस महिला को गिरफ्तार कर लिया है। खास बात यह है कि इस महिला ने यह कदम अपने पति के साथ बेवफाई करते हुए प्रेमी के खातिर उठाया। ग्रेटर नोएडा पुलिस के मुताबिक हापुड़ निवासी सोनम नामक एक महिला ने साहिल नामक एक मुस्लिम युवक से घर वालों की मर्जी के खिलाफ शादी की थी। जिसके चलते उसके मायकेवालों ने उससे सम्बंध तोड़ दिए थे। इस बीच साहिल और सोनम के दो बच्चे पैदा हुए थे जिम 6 वर्ष की एक लड़की और चार वर्ष 4 वर्ष का एक लड़का था। पुलिस के मुताबिक 2021 में उसका पति साहिल एक व्यक्ति की हत्या करने के आरोप में जेल चला गया। पति के जेल जाने के बाद वह अकेली पड़ गई।

अनियंत्रित कार पेड़ से टकराई, चार की मौत

बिजनौर। नहटौर थाना क्षेत्र में एक तेज रफ्तार स्कॉर्पियो कार अनियंत्रित होकर पेड़ से टकरा गई। हादसे में कार सावर एक ही परिवार की दो महिलाओं सहित चार लोगों की मौत हो गई, जबकि तीन लोग गम्भीर घायल हो गए। पुलिस ने घायलों को सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया और शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। कार में सवार परिवार नजीबाबाद क्षेत्र से घर वापस लौट रहा था। जानकारी के अनुसार शुक्रवार की देर रात थाना क्षेत्र के गांव नसीरपुर निवासी सुल्तान (35) अपनी पत्नी गुलअफ्सा, पुत्री अनादिया (आठ दिन), अलिशा (06) वर्ष, पुत्र शाद (05) बहन चांद बानो और भांजी अदिबा (14) के साथ नजीबाबाद थाना क्षेत्र में गया था। शुक्रवार देर रात करीब 10:30 बजे वह अपने परिवार के साथ स्कॉर्पियो से घर लौट रहा था। जैसे ही उसकी स्कॉर्पियो कार नहटौर कोतवाली मार्ग स्थित ऑक्सफोर्ड स्कूल के पास पहुँची तो अनियंत्रित होकर पेड़ से टकरा गई। हादसे में सुल्तान की पत्नी गुलअफ्सा, दोनों पुत्रियां अनादिया, अलिशा और बहन चांद बानो की मौके पर मौत हो गई।

समाजवादी पार्टी का पीडीए प्रेम फर्जी : केशव प्रसाद

लखनऊ। एजेंसी

उत्तर प्रदेश में विधानभा उपचुनाव की मतगणना के बीच उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने समाजवादी पार्टी पर निशाना साधा है। केशव प्रसाद मौर्य ने पत्रकारों से बातचीत में कहा कि समाजवादी पार्टी का पीडीए (पिछड़ा, दलित, अल्पसंख्यक) प्रेम फर्जी है। उन्होंने कहा कि चुनाव की मतगणना हो रही हैं। उपचुनाव में नौ विधानसभा सीटों पर बढ़त है। सपा फर्जी जीत का दावा कर रही थी। इसीलिए जनता ने इनको नकार दिया है। 27 के सत्ताधीश पर केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि 27 के सत्ताधीश ही नहीं वह 47 के सत्ताधीश भी नहीं बनेंगे। ईवीएम पर रोना सपा और कांग्रेस का फैशन है। झारखंड और महाराष्ट्र में भी भाजपा जीत रही है। उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने पत्रकारों से बातचीत करते हुए कहा कि उत्तर प्रदेश विधानसभा उपचुनाव भाजपा भारी मतों से जीत रही है। प्रदेश की नौ में से 08 सीट भाजपा जीत रही है उन्होंने कहा कि भाजपा महाराष्ट्र में प्रचण्ड बहुमत से सरकार बनाने जा रही है। वहीं झारखण्ड के रूझानों पर उन्होंने कहा कि अभी मतगणना चल रही है।

किसानों को नहीं मिल पा रहा फ्री बिजली योजना का लाभ

लखनऊ। एजेंसी

किसानों को फ्री बिजली योजना का लाभ न ले पाने और केबल कनेक्शन पर भी किसानों के एस्टीमेट में ट्रांसफार्मर चार्ज किए जाने को लेकर उपभोक्ता परिषद ने नाराजगी जताई और पावर कारपोरेशन के प्रबंध निदेशक और निदेशक कामर्शियल से मुलाकात कर चर्चा की। उपभोक्ता परिषद ने उम्मीद जताई कि किसानों को काल्पनिक बकाया से छुटकारा मिलेगा और फ्री बिजली योजना का लाभ मिल सकेगा।

उपभोक्ता परिषद ने पावर कापोर्रेशन प्रबंधन के सामने उदाहरण के तौर पर टेस्ट केस के रूप में सिरसागंज में काल्पनिक बकाए का प्रपत्र सहित प्रतापगढ में तीन हॉर्स पावर के 40 मीटर केबल कनेक्शन पर भी 10 केवीए के ट्रांसफार्मर के एस्टीमेट के प्रपत्र को प्रबंधन के सामने रखा। उपभोक्ता परिषद ने कहा कि किसानों द्वारा नए निजी नलकूप का कनेक्शन लेने के लिए जब वितरण खंडों में पोर्टल के माध्यम से कनेक्शन मांगा जा रहा है तो उन्हें 40 मीटर की परिधि में भी केबल कनेक्शन पर वितरण ट्रांसफार्मर का एस्टीमेट थमाया जा रहा है, जबकि विद्युत नियामक आयोग द्वारा बनाई गई कास्ट डाटा बुक में स्पष्ट प्रावधान है कि 40 मीटर के अंदर केबल कनेक्शन देना अनिवार्य होगा। इन दोनों गंभीर मामले पर आज उत्तर प्रदेश राज्य विद्युत उपभोक्ता परिषद के अध्यक्ष व राज्य सलाहकार समिति के सदस्य अवधेश कुमार वर्मा ने शक्ति भवन में पावर कारपोरेशन के प्रबंध निदेशक पंकज कुमार व निदेशक कमर्शियल निधि नारंग व निदेशक वितरण जी डी द्विवेदी से मुलाकात की और उन्हें बताया कि उत्तर प्रदेश के अनेकों जनपदों में किसानों के दो गंभीर मामले पर स्थानीय स्तर पर उन्हें न्याय नहीं दिया जा रहा है।

उपभोक्ता परिषद अध्यक्ष ने पावर कॉरपोरेशन के एमडी व निदेशक कमर्शियल को उदाहरण के तौर पर टेस्ट केस के रूप में सिरसागंज में किसानों पर काल्पनिक बकाया पर स्थानीय स्तर पर किए गए पत्राचार की प्रति सहित प्रतापगढ में तीन हॉर्स पावर के निजी नलकूप कनेक्शन पर भी 10 केवीए के ट्रांसफार्मर एस्टीमेट में चार्ज करने के मामले को पेश किया।

पर्यटन | 'देखो अपना देश-पीपल्स चॉइस-2024' अभियान को उत्तर प्रदेश का पर्यटन विभाग एक भव्य आयोजन

देखो अपना देश : आपकी पसंद से निखरेगा देश का पर्यटन

- जनप्रतिनिधि, अधिकारी, कर्मचारी और आम नागरिक भाग ले सकते हैं
- विभागीय पोर्टल पर जाकर अपने पसंदीदा स्थलों की जानकारी साझा कर सकते हैं

मीरजापुर। एजेंसी

भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय द्वारा चलाए जा रहे 'देखो अपना देश-पीपल्स चॉइस-2024' अभियान को उत्तर प्रदेश का पर्यटन विभाग एक भव्य आयोजन में बदल रहा है। इस अभियान के तहत 25 नवंबर तक राज्य के नागरिक अपने पसंदीदा पर्यटन स्थलों को वोट कर सकते हैं। पर्यटन विभाग के निदेर्शों के अनुसार, हर जिले में अभियान चलाया जा रहा है, जिसमें जनप्रतिनिधि, अधिकारी, कर्मचारी और आम नागरिक भाग ले सकते हैं। नागरिक क्यूआर कोड स्कैन कर या विभागीय पोर्टल पर जाकर अपने पसंदीदा स्थलों की जानकारी साझा कर सकते हैं। इसके साथ ही, वे सेल्फी प्वाइंट पर ली गई तस्वीरें पोर्टल पर अपलोड कर सकते हैं।

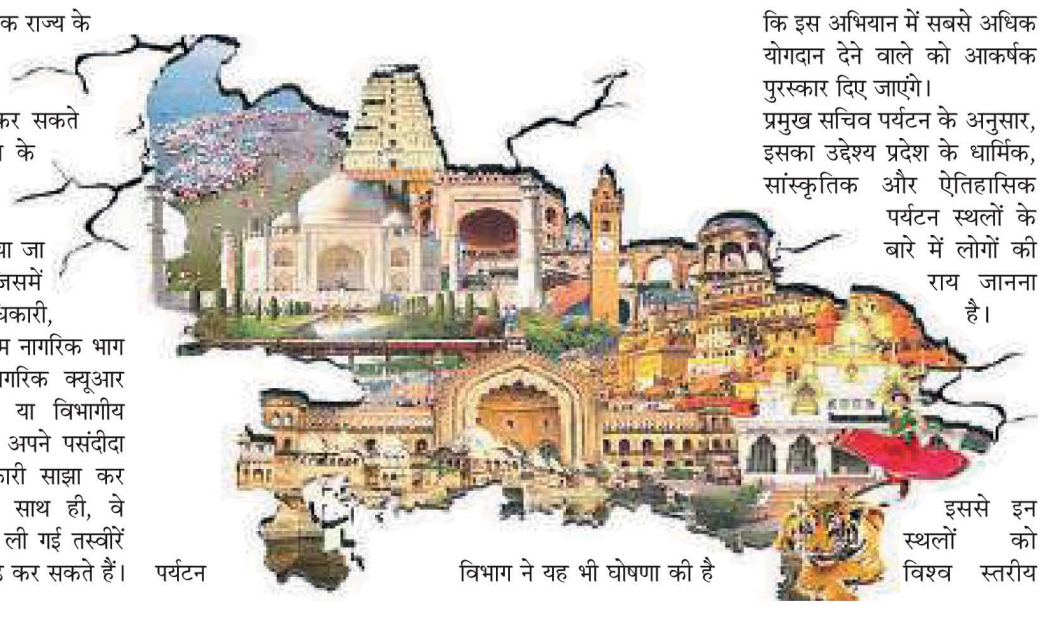

पर्यटन विभाग ने यह भी घोषणा की है कि इस अभियान में सबसे अधिक योगदान देने वाले को आकर्षक पुरस्कार दिए जाएंगे।

प्रमुख सचिव पर्यटन के अनुसार, इसका उद्देश्य प्रदेश के धार्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों के बारे में लोगों की राय जानना है।

इससे इन स्थलों को विश्व स्तरीय पर्यटन स्थलों के रूप में विकसित करने की योजना बनाई जा सकेगी।

प्रभारी पर्यटन अधिकारी शक्ति प्रताप सिंह ने कहा कि हम मीरजापुर में इस अभियान को सफल बनाने के लिए पूरी कोशिश कर रहे हैं। लोगों की सक्रिय भागीदारी से न केवल पर्यटन स्थलों की पहचान को मजबूती मिलेगी, बल्कि स्थानीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उत्तर प्रदेश का नाम भी रोशन होगा। यह अभियान न केवल प्रदेश के पर्यटन स्थलों को बढ़ावा देगा बल्कि राज्य की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहरों को नई पहचान भी दिलाएगा।

केदारनाथ की जनता ने भाजपा पर जताया भरोसा, विपक्ष को सिखाया सबक : महेंद्र

देहरादून। एजेंसी

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के प्रदेश अध्यक्ष महेंद्र भट्ट ने केदारनाथ उपचुनाव में पार्टी की जीत पर बधाई देते हुए कहा कि केदारघाटी की जनता का यह विश्वास नजीर के रूप में है। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष महेंद्र भट्ट ने कहा कि भाजपा सरकार के विकास पर जनता ने एक बार फिर विश्वास जताया है।

पार्टी और सरकार उस भरोसे को बनाए रखेगी। उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने अनर्गल बयानबाजी करके केदारनाथ की यात्रा को प्रभावित करने का प्रयास किया और झूठे विषयों को लेकर जनता के बीच गई। उपचुनाव में जनता ने कांग्रेस को बड़ा झटका देकर सबक सिखाया है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी व भाजपा संगठन के प्रति केदारनाथ की जनता ने जो विश्वास जताया है वह विश्वास एक नजीर के रूप में है। राज्य में आगामी होने वाले निगम और अन्य चुनावों में भी भाजपा इसी प्रकार जीत दर्ज करेगी।

संक्षिप्त खबरें

फीबा एशिया कप : कतर से हार के बाद भारत की क्वालीफिकेशन संभावना कम

चेन्नई। भारतीय पुरुष बास्केटबॉल टीम की फीबा एशिया कप 2025 में जगह बनाने की संभावनाओं को झटका लगा जब उसे शुक्रवार को चेन्नई के नेहरू इंडोर स्टेडियम में ग्रुप ई क्वालीफायर मैच में निचली रैंकिंग वाली कतर के खिलाफ 53-69 से हार का सामना करना पड़ा। भारतीय कप्तान मुईन बेक हफीज ने भारत के लिए सबसे ज्यादा 17 अंक बनाए, जबकि माइक लुईस और टायलर जेम्स ली हैरिस ने कतर के लिए 17-17 अंक हासिल किये। खेल की शुरूआत दोनों टीमों के बीच हर छोर पर कई शॉट के आदान-प्रदान से हुई, लेकिन कतर के मोहम्मद अब्बासर के ड्राइविंग लेअप के माध्यम से पहला अंक दर्ज होने में लगभग दो मिनट लग गए। हफीज ने लगातार तीन-पॉइंटर्स के साथ जवाब दिया। अनुभवी अमज्योत सिंह और साहिज प्रताप सिंह सेखों ने तीन-पॉइंट लाइन के पीछे से गेंद को घुमाकर घरेलू टीम की गति को बनाए रखा।

हैरी केन की हैट्रिक की बदौलत बायर्न म्यूनिख ने स्टबोर्न ऑग्सबर्ग को 3-0 से हराया

बर्लिन। हैरी केन की हैट्रिक की बदौलत बायर्न म्यूनिख ने शुक्रवार रात बुंडेसलीगा के 11वें दौर के पहले मैच में स्टबोर्न ऑग्सबर्ग पर 3-0 से जीत दर्ज की। बायर्न ने मैच में आक्रामकर शुरूआत की और 13वें मिनट में वह गोल के काफी करीब पहुंच गया था, लेकिन लियोन गोरेत्जका का एक बेहतरीन शॉट गोल पोस्ट के बगल से निकल गया, जबकि पांच मिनट बाद जोशुआ किमिच ने नजदीक से प्रयास किया, लेकिन उन्हें भी सफलता नहीं मिली। ऑग्सबर्ग का डिफेंस काफी अच्छा रहा और उन्होंने बायर्न के कई मौकों को असफल किया। गोलकीपर नेडिल्को लाब्रोविक ने 27वें मिनट में हैरी केन और जमाल मुसियाला के लगातार प्रयासों को विफल किया। मध्यांतर तक दोनों ही टीमें गोल करने में असफल रहीं। मैच के 63वें मिनट में मैड्स पेडरसन को हैंडबॉल के लिए दंडित किया गया और केन ने पेनल्टी को गोल में बदलकर बायर्न को 1-0 से आगे कर दिया।

आईएसयू ग्रैंड प्रिक्स कप ऑफ चाइना के पहले दिन जापानी फिगर स्केटर्स ने बढ़त बनाई

चोंगकिंग। जापानी फिगर स्केटर्स ने आईएसयू ग्रैंड प्रिक्स कप ऑफ चाइना के पहले दिन शुक्रवार को अपना दबदबा कायम रखा, जिसमें शुन सातो ने पुरुषों के शॉर्ट प्रोग्राम में शीर्ष स्थान हासिल कर जीपी फाइनल में जगह बनाई, जबकि उनकी हमवतन मोने चिबा ने महिलाओं के वर्ग में मामूली बढ़त हासिल की। लेडीज इन लैवेंडर में अपने शानदार प्रदर्शन में, अच्छी फॉर्म में चल रहे सातो ने क्वाड लुट्ज, क्वाड टो-ट्रिपल टो, ट्रिपल एक्सल और लेवल-फोर स्पिन लगाकर सीजन का सर्वश्रेष्ठ 98.75 अंक हासिल किया और कजाकिस्तान के मिखाइल शैदोरोव और फ्रांस के एडम सियाओ हिम फा को पीछे छोड़ा।

आईएसएल की अंतरराष्ट्रीय ब्रेक के बाद वापसी, पंजाब एफसी के सामने होगा नॉर्थईस्ट यूनाइटेड

नई दिल्ली। पंजाब एफसी और नॉर्थईस्ट यूनाइटेड एफसी के बीच मुकाबले के साथ इंडियन सुपर लीग (आईएसएल) 2024-25 की अंतरराष्ट्रीय ब्रेक से वापसी हो रही है। दोनों टीमें आज शाम नई दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में भिड़ेंगी। ये दोनों टीमें पिछले साल प्लेऑफ के लिए क्वालीफाई नहीं पाई थीं, जिसमें हाईलैंडर्स सातवें और पंजाब एफसी आठवें स्थान पर रही। हालांकि, इस बार दोनों ने सीजन की मजबूत शुरूआत की है। नॉर्थईस्ट यूनाइटेड एफसी आठ मैचों में तीन जीत, तीन ड्रा और दो हार से 12 अंक लेकर तालिका में तीसरे स्थान पर है। वहीं, पंजाब एफसी छह मैचों चार जीत और दो हार से 12 अंक लेकर तालिका में छठे स्थान पर है।

पर्थ टेस्ट : दूसरी पारी में भारत की मजबूत शुरुआत

भारत ने बिना नुकसान के बनाए 172 रन

- कुल बढ़त 218 रनों की हुई, यशस्वी जायसवाल शतक से 10 रन दूर

पर्थ। एजेंसी

यहां पर्थ में खेले जा रहे पहले टेस्ट मैच के दूसरे दिन दूसरी पारी में सलामी बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल और केएल राहुल ने भारत को शानदार शुरूआत दिलाई है। दोनों ने बेहतरीन अर्धशतकीय पारी खेलते हुए भारत को अच्छी स्थिति में पहुंचा दिया है। दिन का खेल खत्म होने पर भारत ने बिना किसी नुकसान के 172 रन बना लिये हैं। यशस्वी जायसवाल शतक से केवल 10 रन दूर हैं और 90 रन बनाकर नाबाद हैं, जबकि केएल राहुल ने भी शानदार अर्धशतक लगाते हुए 62 रन बनाकर नाबाद हैं। भारत की कुल बढ़त 218 रनों की हो गई है। ऑस्ट्रेलिया को 104 रनों पर समेटने के बाद भारत को यशस्वी जायसवाल और केएल राहुल ने शानदार शुरूआत दिलाई। दोनों ने ऑस्ट्रेलियाई गेंदबाजों को विकेट के लिए तरसा दिया। हालांकि पिच भी पहली पारी की अपेक्षा दूसरी पारी में सपाट दिखी, जिसका भारतीय बल्लेबाजों ने पूरा फायदा उठाया। अब तक दोनों के बीच पहले विकेट के लिए 172 रनों की साझेदारी हो चुकी है।

ऑस्ट्रेलिया की पहली पारी 104 रनों पर सिमटी, भारत को 46 रन की बढ़त

इससे पहले जसप्रीत बुमराह के नेतृत्व में तेज गेंदबाजों के शानदार प्रदर्शन की बदौलत भारत ने ऑस्ट्रेलिया को पहली पारी में 104 रनों पर समेट दिया है। बुमराह ने 5 विकेट लिए। इसी के साथ पहली पारी के आधार पर भारत को 46 रनों की बढ़त मिली गई है। भारतीय टीम पहली पारी में केवल

नीतीश रेड्डी ने सर्वाधिक 41 रन बनाए

इससे पहले मैच में भारतीय कप्तान जसप्रीत बुमराह ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया। भारतीय बल्लेबाजों ने एक बार फिर निराश किया और पूरी टीम केवल 150 रनों पर सिमट गई। भारत की तरफ से नीतीश रेड्डी ने सर्वाधिक 41 रन बनाए। नीतीश के अलावा ऋषभ पंत ने 37 और केएल राहुल ने 26 रन बनाए। ऑस्ट्रेलिया की तरफ से जोश हेजलवुड ने 4, मिचेल स्टॉर्क, पैट कमिंस और मिचेल मॉर्श ने 2-2 विकेट लिए।

150 रनों पर सिमट गई थी। पहली पारी में ऑस्ट्रेलिया के लिए मिचेल स्टॉर्क ने सर्वाधिक 26 रन बनाए। स्टॉर्क के अलावा एलेक्स कैरी ने 21, ट्रैविस हेड ने 11 और मेकस्विनी ने 10 रन बनाए। भारत की तरफ से जसप्रीत बुमराह ने 5, हर्षित राणा ने 3 और मोहम्मद सिराज ने 2 विकेट लिए।

भारत ने स्पेशल ओलंपिक्स एशिया पैसिफिक में जीते 25 पदक

- अंकित और निरुपम ने डिवीजन 5 और 8 में रजत पदक भी जीते

नई दिल्ली। एजेंसी

भारत ने थायागराज स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स और आरक्यूब मोनाड में संपन्न हुई पहली स्पेशल ओलंपिक्स एशिया पैसिफिक बोचे और बॉलिंग प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन करते हुए कुल 25 पदक हासिल किए हैं। भारतीय बॉलिंग दल ने 14 पदकों का योगदान दिया, जिसमें चार स्वर्ण, छह रजत और चार कांस्य शामिल हैं, जबकि बोचे टीम ने 11 पदकों में एक स्वर्ण, चार रजत और छह कांस्य अपने नाम किए।

महिला बॉलिंग टीम का प्रदर्शन खासतौर पर प्रभावशाली रहा, जिसने भारत के चार स्वर्ण पदकों में से तीन पर कब्जा किया। श्रद्धा पटेल, नेहा सिंह, शिमरन पुजारा और सुसरी संगीता नायक की चौकड़ी ने टीम इवेंट के फाइनल में मलेशिया को हराकर स्वर्ण पदक जीता।

इसके बाद श्रद्धा और शिमरन ने नेहा और सुसरी संगीता नायक को डबल्स इवेंट के फाइनल में हराकर टूर्नामेंट का अपना दूसरा स्वर्ण पदक जीता। सिंगल्स इवेंट में नेहा ने फाइनल में श्रद्धा को हराकर डिवीजन 3 का स्वर्ण पदक जीता और टूर्नामेंट में तीन पदक अपने नाम किए। सुसरी और शिमरन ने भी डिवीजन 1 और 2 में कांस्य पदक जीतकर अपने तीसरे-तीसरे पदक हासिल किए। पुरुष वर्ग में, एकमात्र स्वर्ण प्रकाश वाघेला ने डिवीजन 6 सिंगल्स में इभानन साहू को फाइनल में हराकर जीता। दोनों ने पहले डिवीजन 3 डबल्स में कांस्य जीता था, जबकि अंकित और निरुपम डे की जोड़ी ने डिवीजन 2 में कांस्य जीता। अंकित और निरुपम ने डिवीजन 5 और 8 में रजत पदक भी जीते। इन चारों खिलाड़ियों ने मिलकर टीम इवेंट में रजत पदक हासिल किया, जहां फाइनल में उनका सामना उज्बेकिस्तान से हुआ।

टी20 शतक लगाने वाले पहले खिलाड़ी बने तिलक वर्मा

राजकोट। एजेंसी

भारत के बल्लेबाज तिलक वर्मा ने हैदराबाद के लिए मेघालय के खिलाफ सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी के उद्घाटन मैच में अपने विस्फोटक शतक के बाद एक ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल कर ली है। वह पुरुष या महिला क्रिकेट में लगातार तीन टी 20 शतक लगाने वाले पहले क्रिकेटर बन गए हैं। उन्होंने 2007 में शुरू हुए टूर्नामेंट के इतिहास में सर्वोच्च व्यक्तिगत स्कोर भी दर्ज किया। मैच के दौरान तिलक ने सिर्फ 67 गेंदों में 14 चौकों और 10 छक्कों की मदद से 151 रन बनाए। उनके रन 225.37 के स्ट्राइक रेट से आए। 22 वर्षीय तिलक ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ घर से बाहर लगातार दो शतक, सेंचुरियन में 107 और जोहान्सबर्ग में नाबाद 120 रन बनाकर टूर्नामेंट में प्रवेश किया।

वह द्विपक्षीय श्रृंखला में 'प्लेयर ऑफ द सीरीज' बने, उन्होंने चार मैचों में 140.00 की औसत और लगभग 199 के स्ट्राइक रेट से 280 रन बनाए। वह टी20 क्रिकेट में 150 से अधिक का स्कोर बनाने वाले पहले भारतीय पुरुष खिलाड़ी भी बने।

सीरीज के लिये आस्ट्रेलिया की महिला टीम घोषित

सिडनी। एजेंसी

ऑस्ट्रेलिया ने भारत और न्यूजीलैंड के खिलाफ पांच से 23 दिसंबर तक होने वाली एकदिवसीय श्रृंखला के लिए 13 सदस्यीय टीमों की घोषणा की है। ऑस्ट्रेलिया दिसंबर की शुरूआत में तीन मैचों की एकदिवसीय श्रृंखला के लिए भारत की मेजबानी करेगा, जिसके बाद महीने के अंत में टीम एक और तीन एकदिवसीय सीरीज के लिये न्यूजीलैंड का दौरा करेगी। ऑस्ट्रेलिया की नियमित कप्तान एलिसा हीली घुटने की चोट से उबरने के कारण भारत श्रृंखला में नहीं खेलेंगी, लेकिन न्यूजीलैंड के खिलाफ श्रृंखला के लिए फिट हो जाएंगी। उनकी अनुपस्थिति में ताहलिया मैकग्राथ टीम की कप्तानी करेंगी। क्वींसलैंड की 21 वर्षीय बल्लेबाज जॉर्जिया वोल को पहली बार भारत सीरीज टीम में शामिल किया गया है। वोल मौजूदा महिला बिग बैश लीग और महिला राष्ट्रीय क्रिकेट लीग में शीर्ष रन बनाने वालों में से एक हैं और दोनों टूर्नामेंटों में उनके नाम चार अर्धशतक हैं।

क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया के राष्ट्रीय चयनकर्ता शॉन फ्लेगलर ने कहा, ह्ल हमने अगले साल की एशेज श्रृंखला और आईसीसी महिला विश्व कप को ध्यान में रखते हुए इन दो आगामी दौरों के लिए एक अनुभवी टीम चुनी है। जॉर्जिया वोल ने गर्मियों की मजबूत शुरूआत की है और कई वर्षों में अपनी क्षमता दिखाई है। फ्लेगलर ने कहा, ह्ल वह शीर्ष क्रम में फोएबे लीचफील्ड के साथ एक रोमांचक साझेदारी बनाएंगी, जो उनके लिए एक मजबूत भारत टीम के खिलाफ अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट का स्वाद चखने का एक शानदार अवसर होगा।

ऑस्ट्रेलियाई टीम :-
ताहलिया मैक्ग्रा (कप्तान), डार्सी ब्राउन, एशले गार्डनर, किम गार्थ, अलाना किंग, फोएबे लिचफील्ड, सोफी मोलिनेक्स, बेथ मूनी, एलिसे पेरी, मेगन शुट्ट, एनाबेल सदरलैंड, जॉर्जिया वेयरहैम, जॉर्जिया वॉल्यूम।

न्यूजीलैंड वनडे के लिए ऑस्ट्रेलियाई टीम :-
एलिसा हीली (कप्तान), डार्सी ब्राउन, एशले गार्डनर, किम गार्थ, अलाना किंग, फोबे लीचफील्ड, ताहलिया मैकग्राथ, सोफी मोलिनेक्स, बेथ मूनी, एलिसे पेरी, मेगन शुट्ट, एनाबेल सदरलैंड, जॉर्जिया वेयरहैम।

ब्लास्टर्स के गढ़ में धावा बोलने को तैयार चेन्नइयन एफसी

कोच्चि। एजेंसी

दक्षिण भारतीय प्रतिद्वंद्वियों के बीच रोमांच चरम पर होगा, जब केरला ब्लास्टर्स एफसी और चेन्नइयन एफसी रविवार शाम इंडियन सुपर लीग (आईएसएल) 2024-25 मुकाबले के लिए यहां जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में भिड़ेंगी। चेन्नइयन एफसी आठ मैचों में तीन जीत, तीन ड्रा और दो हार से 12 अंक लेकर तालिका में चौथे स्थान पर है। केरला ब्लास्टर्स एफसी आठ मैचों में दो जीत, दो ड्रा और चार हार से आठ अंक लेकर तालिका में 10वें स्थान पर है। चेन्नइयन एफसी ने 16 गोल किए हैं, जो किसी भी सीजन में आठ मैचों के बाद उनका सबसे बड़ा स्कोर है। मरीना माचान्स ने प्रति मैच विपक्षी टीम के बॉक्स के अंदर औसतन 25.3 टच किए हैं। चेन्नइयन एफसी ने फरवरी 2024 में केरला ब्लास्टर्स एफसी के खिलाफ पिछले मैच 1-0 से जीता था, जो कि ब्लास्टर्स के खिलाफ अपने पिछले सात मुकाबलों के बाद आई थी। केरला ब्लास्टर्स ने अपने पिछले 15 घरेलू मैचों में से प्रत्येक में गोल किया है। आगामी मैच में एक गोल लीग के इतिहास में किसी भी टीम द्वारा घर पर सबसे लंबे समय तक गोल करने के बराबर होगा। केरला ब्लास्टर्स ने आईएसएल 2024-25 में सबसे अधिक पेनल्टी (5) गंवाई हैं, जबकि चेन्नइयन ने चार पेनल्टी दी हैं।

केरला ब्लास्टर्स एफसी के स्वीडिश हेड कोच माइकल स्टाहरे ने कहा कि उनकी टीम को कुछ रक्षात्मक दिक्कतों को दुरुस्त करने की जरूरत है। उन्होंने कहा, ह्लहमने काफी गोल (16) खाए हैं और हमें इस समस्या का समाधान खोजने की जरूरत है। अगर हमने बहुत सारे गोल-स्कोरिंग अवसर भी गंवाएं होते तो स्थिति और भी खराब होती। स्कॉटिश हेड कोच ओवेन कॉयल ने चेन्नइयन एफसी के समर्थकों के प्रति आभार व्यक्त किया जो केरला ब्लास्टर्स एफसी के खिलाफ मैच के लिए कोच्चि की यात्रा करेंगे।

उन्होंने कहा केरला ब्लास्टर्स एफसी के खिलाफ अवे मैच के लिए कुछ सौ फैंस आएंगे।

कैलिफोर्निया गोल्डन ईगल्स और मैरीलैंड मावेरिक्स ने जीत के साथ किया यूएसपीएल सीजन 3 का आगाज

फ्लोरिडा (यूएसए)। कैलिफोर्निया गोल्डन ईगल्स और मैरीलैंड मावेरिक्स ने शानदार जीत दर्ज करते हुए यूनाइटेड स्टेट्स प्रीमियर लीग (यूएसपीएल) सीजन 3 की धमाकेदार शुरूआत की है। फ्लोरिडा के ब्रोवार्ड काउंटी स्टेडियम में आयोजित यूएसपीएल सीजन 3 के शुरूआती मैच में कैलिफोर्निया गोल्डन ईगल्स ने कैरोलिना ईगल्स को 29 रनों से हराया, जबकि मैरीलैंड मावेरिक्स ने सीजन के दूसरे गेम में अटलांटा ब्लैककैप्स को 6 विकेट से हराकर जीत दर्ज की। पहले बल्लेबाजी करते हुए, गोल्डन ईगल्स ने नौमान अनवर के 64 और उन्मुक्त चंद के 63 रन की बदौलत 20 ओवर में 2 विकेट पर 197 रन का विशाल स्कोर खड़ा किया। जवाब में कैरोलिना ईगल्स की ओर से शायन जहांगीर ने रन गति को बढ़ाने का प्रयास तो किया, लेकिन टीम लक्ष्य का पीछा करने में असफल रही। नौमान अनवर को उनकी शानदार पारी के लिए प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया। दूसरे मैच में मैरीलैंड मावेरिक्स ने अटलांटा ब्लैककैप्स पर 6 विकेट से जीत दर्ज की। पहले गेंदबाजी करते हुए मावेरिक्स ने एहसान आदिल के 5 विकेट की बदौलत ब्लैककैप को 19 ओवरों में 128 रनों पर रोक दिया। इसके लिए आदिल को प्लेयर ऑफ द मैच की ट्रॉफी से नवाजा गया। जवाब में मावेरिक्स ने 18 गेंद शेष रहते लक्ष्य को हासिल करते हुए जीत के साथ अपने अभियान की शुरूआत की।

व्यापार

वाणिज्य सचिव बर्थवाल ने टीईपीए के कार्यान्वयन के लिए नॉर्वे का किया दौरा

नई दिल्ली। एजेंसी

वाणिज्य सचिव सुनील बर्थवाल ने वरिष्ठ अधिकारियों के साथ भारत और चार देशों के यूरोपीय ब्लॉक ईएफटीए सदस्य देशों के बीच मुक्त व्यापार समझौते को शीघ्र लागू करने पर चर्चा के लिए नॉर्वे का दौरा किया। इस यात्रा का उद्देश्य 100 अरब डॉलर के निवेश के शीघ्र कार्यान्वयन को बढ़ावा देना है।

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय ने शनिवार को एक बयान में बताया कि वाणिज्य सचिव बर्थवाल ने वरिष्ठ अधिकारियों के साथ 22 नवंबर को नॉर्वे का दौरा किया। बर्थवाल के इस दौरे का उद्देश्य व्यापार एवं आर्थिक भागीदारी समझौते (टीईपीए) के उद्देश्यों को आगे बढ़ाना है। इसके साथ ही भारतीय वस्तुओं एवं सेवाओं के निर्यात के लिए ईएफटीए देशों में बड़े बाजार को खोलना और 100 अरब डॉलर के निवेश के शीघ्र कार्यान्वयन को बढ़ावा देना था।

मंत्रालय ने बताया कि टीईपीए के रूप में नामित इस समझौते पर मार्च में आधिकारिक तौर पर हस्ताक्षर किए गए थे। हालांकि, इसे लागू करने की तारीख को अभी तक अंतिम रूप नहीं दिया गया है। ईएफटीए के सदस्यों में आइसलैंड, लिकटेंस्टीन, नॉर्वे और स्विट्जरलैंड हैं।

वाणिज्य मंत्रालय के मुताबिक इस यात्रा का उद्देश्य भारतीय वस्तुओं और सेवाओं के निर्यात के लिए ईएफटीए देशों में बड़े बाजार को खोलना और निवेश को शीघ्र लागू करने के लिए दबाव बनाना था।

डीआरआई ने 3496 ग्राम कोकीन के साथ एक को गिरफ्तार किया

मुंबई/नई दिल्ली। एजेंसी

राजस्व खुफिया निदेशालय (डीआरआई) ने एक बड़ी कार्रवाई में मुंबई एयरपोर्ट पर 3496 ग्राम कोकीन के साथ एक संदिग्ध को गिरफ्तार किया है। इस कोकीन का अवैध बाजार में अनुमानित मूल्य करीब 34.96 करोड़ रुपये है। वित्त मंत्रालय ने शनिवार को जारी बयान में बताया कि एक राजस्व आसूचना निदेशालय (डीआरआई) ने 22 नवंबर को मुंबई के छत्रपति शिवाजी महाराज अंतरराष?ट्रीय हवाई अड्डे पर सिएरा लियोन से आने वाले एक लाइबेरिया के नागरिक को पकड़ा।

यात्री के ट्रॉली बैग की जांच के दौरान डीआरआई अधिकारियों ने पाया कि यह असामान्य रूप से भारी था, जिसकी गहन जांच में दो पैकेट मिले, जिनमें एक सफेद पाउडर जैसा पदार्थ था, जिसे

ट्रॉली बैग के नकली तल में बड़ी चालाकी से छिपाया गया था। डीआरआई के अनुसार फील्ड परीक्षणों से पुष्टि हुई कि यह पदार्थ कोकीन था, जिसका कुल वजन 3496 ग्राम था, जिसका अनुमानित अवैध बाजार मूल्य करीब 34.96 करोड़ रुपये है। उस यात्री को गिरफ्तार कर लिया गया है। एजेंसी ने कहा कि आगे की जांच जारी है। डीआरआई नशीले पदार्थों की तस्करी के सिंडिकेट को खत्म करने और हमारे नागरिकों को नशीले पदार्थों के खतरे से सुरक्षित रखने के लिए प्रतिबद्ध है।

आसियान-भारत वस्तु व्यापार समझौता समिति की बैठक नई दिल्ली में संपन्न

नई दिल्ली। एजेंसी

आसियान-भारत वस्तु व्यापार समझौता (एआईटीआईजीए) संयुक्त समिति की छठी बैठक राजधानी नई दिल्ली में संपन्न हो गई। बैठक में नेताओं ने 2025 तक वार्ता पूरी करने के लिए शीघ्र समीक्षा प्रक्रिया का आग्रह किया। ये बैठक नई दिल्ली के वाणिज्य भवन में आयोजित की गई थी। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय ने शनिवार को जारी एक बयान में कहा कि एआईटीआईजीए संयुक्त समिति की 21 से 22 नवंबर तक चली दो दिवसीय बैठक की सह-अध्यक्षता भारत के वाणिज्य मंत्रालय के अतिरिक्त सचिव राजेश अग्रवाल और मलेशिया के निवेश, व्यापार तथा उद्योग मंत्रालय की उप-महासचिव (व्यापार) मस्तूरा अहमद मुस्तफा ने की। बैठक में भारत और सभी 10 आसियान सदस्य देशों ब्रुनेई, कंबोडिया, इंडोनेशिया, लाओस, मलेशिया, म्यांमार, फिलीपींस, सिंगापुर, थाईलैंड और वियतनाम के प्रतिनिधि शामिल हुए।

मंत्रालय के मुताबिक एआईटीआईजीए समीक्षा वार्ता के इस दौर से पहले दो उच्च स्तरीय बैठकें हुई थीं, जिसमें सितंबर 2024 में 21वीं आसियान-भारत आर्थिक मंत्रियों की बैठक और अक्टूबर 2024 में 21वीं आसियान-भारत शिखर बैठक शामिल हैं। ये दोनों बैठक वियनतियाने लाओस में हुई थी।

उल्लेखनीय है कि आसियान एक समूह के तौर पर भारत के प्रमुख व्यापार भागीदारों में से एक है, जिसकी भारत के वैश्विक व्यापार में करीब 11 फीसदी हिस्सेदारी है। वित्त वर्ष 2023-24 में द्विपक्षीय व्यापार 121 अरब डॉलर था, जो अप्रैल-अक्टूबर 2024 के दौरान 5.2 फीसदी की वृद्धि के साथ 73 अरब अमरीकी डॉलर तक पहुंच गया। एआईटीआईजीए की समीक्षा आसियान क्षेत्र के साथ व्यापार को स्थायी तरीके से बढ़ाने की दिशा में एक कदम आगे होगी।

संक्षिप्त समाचार

बसेड़ी में बिजली चोरी रोकने गई टीम पर हमला, एक कर्मचारी गंभीर रूप से घायल

चमकता राजस्थान/धौलपुर रामदास तरण। जिला धौलपुर के बसेड़ी थाना क्षेत्र में शनिवार को बिजली चोरी रोकने गई विद्युत निगम की टीम पर कुछ स्थानीय आरोपियों ने हमला कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप कई बिजली कर्मी घायल हो गए। इनमें से एक कर्मचारी, श्रीकांत शर्मा, को सिर में गंभीर चोट आई, जिसे इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया। घटना के बारे में जानकारी देते हुए विद्युत निगम के जेईएन राहुल उपाध्याय ने बताया कि फीडर इंचार्ज लोकेश मीणा के नेतृत्व में एफआरटी टीम मदर डेयरी के पास स्थित एक ट्रांसफॉर्मर पर लगे अवैध जंपर को हटाने के लिए पहुंची थी। टीम जैसे ही जंपर हटाने की कार्रवाई कर रही थी, तभी लाखन सिंह और उसके दोनों बेटों ने लाठी-डंडों से अचानक हमला कर दिया। मारपीट में गंभीर रूप से घायल हुए कर्मचारी श्रीकांत शर्मा को बसेड़ी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। अन्य कर्मचारियों को भी हल्की-फुल्की चोटें आई हैं। घटना के बाद, फीडर इंचार्ज लोकेश मीणा ने थाने में नामजद आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज कराया है।मारपीट की घटना के बाद विद्युत निगम के कर्मचारी जेईएन के साथ थाने पहुंचे और पुलिस को पूरी जानकारी दी। निगम कर्मचारियों की शिकायत पर पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है और जांच प्रक्रिया शुरू कर दी है। पुलिस का कहना है कि आरोपियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

नेट थिएटर पर नाटक का मंचन

समाज की संरचनाओं पर सवाल खड़े करता नाटक डकैत चूहे

चमकता राजस्थान/जयपुर । नेट थिएट कार्यक्रमों की श्रृंखला में आज प्रोग्रेसिव फोरम संस्था की ओर से बच्चों में छपी नैतिक शिक्षाएं और समाज मे कमजोरो तबके के शोषण और सामाजिक संरचनाओं

पर सवाल करता नाटक डकैत चूहे के मंचन ने दर्शकों को झक झोर दिया । नेट थिएट के राजेंद्र शर्मा राजू ने बताया कि वरिष्ठ रंगकर्मी सरताज नारायण माथुर द्वारा प्रोड्यूस नाटक में आशीष पाठक द्वारा लिखित और डॉ.गिरीश कुमार यादव द्वारा निर्देशित रंगकर्मी दिव्यांश शिवनानी ने भावपुर्ण एवं सशक्त अभिनय से नाटक को जीवंत किया ।

● कथाकार

आशीष पाठक की कहानी एक भावनात्मक दृश्य से शुरू होती है, जहाँ दादी (नानी) बच्चों को पारंपरिक लोक कथाएँ सुनाती हैं। उनके शब्दों में छिपी नैतिक शिक्षाएँ मन को मोह लेती हैं। लेकिन यह परंपरा आज के युग में डिजिटल स्क्रीन और सोशल मीडिया के कारण पीछे छूट गई है, जिससे मानवीय जुड़ाव और सांस्कृतिक जड़ों से दूरी बढ़ गई है। दूसरे भाग में, एक कहानीकार हाशिए पर पड़े लोगों की आवाज बनता है और एक गरीब ग्रामीण परिवार की भ्रष्टाचार और सामाजिक असमानता से लड़ाई की कहानी सुनाता है। यह कथा अन्याय, लालच और सत्ता द्वारा कमजोरों के शोषण को उजागर करते हुए समाज की संरचनाओं पर सवाल खड़े करती है और दर्शकों को सच्चाई उजागर करने और बदलाव लाने की कहानियों की शक्ति पर विचार करने के लिए प्रेरित करती है। नाटक में कैमरा मनोज स्वामी, संगीत सरगम भटनागर और प्रकाश व्यवस्था सावन जांगिड़ की राही । मंच व्यवस्था गरिमा सिंह राजावत, श्वेता चोलागाई, और गिरीश ने संभाली।

बिना विधिक प्रक्रिया के दत्तकग्रहण दण्डनीय: धौलपुर में पालना गृह की अपील

चमकता राजस्थान। धौलपुर रामदास तरुण। धौलपुर, 23 नवम्बर 24 को दत्तकग्रहण केवल हिन्दू एडॉप्शन एंड मेंटिनेंस एक्ट और किशोर न्याय (बालकों की देखरेख और संरक्षण) अधिनियम 2015 के तहत विधिक प्रक्रिया से ही किया जा सकता है। यदि कोई व्यक्ति या संस्था बिना विधिक अनुमति के बच्चों को दत्तकग्रहण देती है, तो यह एक दण्डनीय अपराध है।अधिनियम की धारा 80 के अनुसार, बिना विधिक प्रक्रिया के दत्तकग्रहण कराने पर तीन साल तक का कठोर कारावास और एक लाख रुपये तक का जुर्माना हो सकता है। यदि दत्तकग्रहण के दौरान किसी प्रकार की खरीद-फरोख्त की जाती है, तो यह अपराध और भी गंभीर हो जाता है, जिसमें सात साल तक के कठोर कारावास और एक लाख रुपये तक जुर्माना लगाया जा सकता है। इसके अलावा, यदि किसी व्यक्ति को अवांछित या अनाथ बच्चा मिलता है, तो उसे 24 घंटे के भीतर बाल कल्याण समिति, पुलिस या पंजीकृत बाल देखरेख संस्थान को सूचित करना आवश्यक है। यदि ऐसा नहीं किया जाता है, तो यह धारा 34 के तहत अपराध माना जाएगा, जिसके लिए छह महीने तक की सजा और दस हजार रुपये जुर्माना हो सकता है। सहायक निदेशक, जिला बाल संरक्षण इकाई, विश्व देव पांडेय ने बताया कि जिले में राजकीय मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य संस्थान, राजकीय जिला चिकित्सालय बाड़ी और शिशु गृह धौलपुर में पालना गृह की व्यवस्था की गई है, जहां परित्यक्त बच्चों को सुरक्षित तरीके से छोड़ा जा सकता है। पालना गृह में छोड़े गए बच्चों के माता-पिता के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की जाती है।इसलिए, जनसामान्य से अपील की गई है। कि वे बिना विधिक प्रक्रिया के बच्चों को दत्तकग्रहण में देने या लेने का झांसा न लें और इस प्रकार के मामलों की तुरंत सूचना पुलिस या प्रशासन को दें। इसके अलावा, जो व्यक्ति या दंपत्ति विधिक प्रक्रिया के तहत बच्चा गोद लेना चाहते हैं, वे केंद्रीय दत्तकग्रहण संसाधन प्राधिकरण (उअफश) की वेबसाइट पर जाकर ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। वर्तमान में बच्चों की संख्या कम होने के कारण आवेदकों को दो से तीन साल तक इंतजार करना पड़ सकता है, लेकिन यह पूरी प्रक्रिया विधिक और सुरक्षित होती है।

भजनलाल सरकार के जनहित विकास की भागीरथी की वजह से ही विधानसभा उपचुनाव राजस्थान में भाजपा ने जीत की गंगा बहाई: के के जोशी मण्डल अध्यक्ष श्रीनगर

चमकता राजस्थान रघुनंदन पारीक श्रीनगर

अजमेर /नसीराबाद। भाजपा श्रीनगर मंडल पर विधानसभा उपचुनाव में ऐतिहासिक जीत पर कार्यकर्ताओं द्वारा मीठा मुंह करा कर दी शुभकामनाएं

आज भाजपा श्रीनगर मंडल पर मंडल अध्यक्ष के के जोशी के नेतृत्व में राजस्थान में हुए उपचुनाव एवं महाराष्ट्र में भाजपा के ऐतिहासिक जीत पर खुशी जहर करते हुए कार्यकर्ताओं ने एक दूसरे का मुंह मीठा करा कर शुभकामनाएं दी।

मंडल अध्यक्ष जोशी ने इस अवसर

पर कहा कि राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा द्वारा क्षेत्र में ऐतिहासिक विकास कार्य कराए गए जो कि जनहित के लिए बहुत उपयोगी साबित हुए चाहे चाहे वह ईसीआरपी के तहत लिए गए निर्णय हो या युवाओं के लिए रीट जैसी परीक्षा के गुनहगारों को सलाखों के पीछे पूछ कर आगामी जो भी परीक्षाएं हैं उनके लिए युवाओं के लिए रास्ते खोलने भजनलाल सरकार के इस काम से प्रभावित होकर जनता ने भारी मतों से राजस्थान में पांचो सीटे भाजपा की झोली में डाली है।।मंडल अध्यक्ष जोशी ने कहा कि भाजपा सरकार का विजन केंद्र सरकार एवं राजस्थान सरकार की योजनाओं को अंतिम छोर तक बैठे हुए व्यक्तियों को लाभ पहुंचाना है जिसमें संगठन का प्रत्येक कार्यकर्ता हमेशा अपनी सक्रिय भूमिका निभाते हुए कार्य कर रहा है।

कार्यकर्ताओं ने एक दूसरे का मीठा मुंह करा कर धरातल पर लोगों को केंद्र एवं राज्य सरकार की योजनाओं के लाभान्वित कार्यक्रम चर्चा पर विचार विमर्श किया।

इस अवसर पर भाजपा श्रीनगर मंडल के ओबीसी मोर्चा जिला उपाध्यक्ष रामकरण यादव मंडल महामंत्री महावीर मेघवंशी पूर्व पंचायत समिति सदस्य धर्मेंद्र यादव बबलू कुमावत प्रभु राम साहू कन्हैयालाल आचार्य मोहन मेघवंशी नोरत आचार्य सत्यनारायण जांगिड़ सभी भाजपा कार्यकर्ता क्षेत्रवासी उपस्थित थे।

महाराष्ट्र व राजस्थान में जीत का जश्न मनाया

प्रधानमंत्री मोदी की जनकल्याणकारी योजनाओं की वजह से भाजपा जीती है: सूर्य प्रकाश शर्मा

चमकता राजस्थान

रघुनंदन पारीक श्रीनगर / अजमेर। किशनगढ। शनिवार को भारतीय जनता पार्टी में महाराष्ट्र व राजस्थान में बहुत अच्छे मार्जिन से जीते इसलिए भारतीय जनता पार्टी किसान मोर्चा के प्रदेश मीडिया प्रभारी सूर्य प्रकाश शर्मा के नेतृत्व में भाजपा कार्यकर्ताओं ने लड्डू बांटकर व ढोल धमाकों के साथ डांस करके जश्न मनाया।

इस मौके पर सूर्य प्रकाश शर्मा ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व राजस्थान में भजन लाल शर्मा एवं अजमेर जिले मोदी सरकार के केंद्रीय मंत्री भागीरथ चौधरी की जो जनकल्याणकारी योजनाएं है एवं इनके कार्यो की वजह से भाजपा की सरकार बन रही है और जो एक ही धर्म

के प्रति झुकाव कांग्रेस पार्टी का इसकी वजह से उसका पतन हो रहा है।

जिस प्रकार मोदी सरकार के केंद्रीय मंत्री भागीरथ चौधरी अपनी जिम्मेदारी भी ईमानदारी से निभा रहे है और भाजपा के प्रचार करने के लिए सभी जगह गये ओर जीत का परचम लहराया इसी प्रकार भाजपा का प्रत्येक कार्यकर्ता इसी तरह अपना काम ईमानदारी से करते है।

इस मौके पर पार्षद मनीष टेलर, अभिषेक छिपा, मनीष शर्मा, जीतू जोशी, उत्तम सोलंकी, रामजीलाल जाट, प्रदीप सोलंकी, अंकित काकानी, निक्की शर्मा, शुभम गहलोत, सुरेंद्र गोरा, दीपक शर्मा, बंटी बन्ना, वल्लभा जांगिड़, दिनेश मोयल, राकेश वैष्णव, सहित अन्य मौजूद थे।

जियो ने जोड़े सबसे अधिक 'एक्टिव सब्सक्राइबर': ट्राई

वायरलाइन ब्रॉडबैंड के ग्राहकों की संख्या हुई 4 करोड़ 36 लाख के पार

चमकता राजस्थान

नई दिल्ली, 23 नवंबर, 2024: भारतीय दूरसंचार नियामक प्राधिकरण (ट्राई) के नवीनतम आंकड़ों के मुताबिक, रिलायंस जियो 'एक्टिव सब्सक्राइबर' जोड़ने के मामले में सबसे आगे है। सितंबर में जियो ने करीब 17 लाख 'एक्टिव सब्सक्राइबर' जोड़े। समान अवधि में भारती एयरटेल ने 13 लाख तो वोडाफोन आइडिया (वीआई) ने 31 लाख के करीब ग्राहक गंवा दिए। 'एक्टिव सब्सक्राइबर' जोड़ने के मामले में जियो लगातार दूसरे महीने नंबर वन बना हुआ है। एयरटेल और वोडा आइडिया के

'एक्टिव सब्सक्राइबर' नंबर गिरने के कारण पूरे उद्योग में सक्रिय ग्राहकों की संख्या में गिरावट देखी गई, सितंबर माह में यह 15 लाख घटकर 106 करोड़ के करीब आ गई।

ट्राई के आंकड़े बताते हैं कि वायरलाइन ब्रॉडबैंड यानी फाइबर व अन्य वायरलाइन से जुड़े ग्राहकों की कुल संख्या 4 करोड़ 36 लाख पार कर गई है। सितंबर माह के दौरान इसमें 7 लाख 90 हजार नए ग्राहकों का इजाफा हुआ। सबसे अधिक ग्राहक रिलायंस जियो ने जोड़े। जियो ने सितंबर में 6 लाख 34 हजार ग्राहकों को अपने नेटवर्क से जोड़ा तो वहीं एयरटेल मात्र 98 हजार ग्राहक ही जोड़ पाया। समान अवधि में बीएसएनएल ने 52 हजार वायरलाइन ब्रॉडबैंड ग्राहक खो दिए।

प्रयागराज एक्सप्रेस में पकड़ा गया फर्जी रेलवे अधिकारी, एसी कोच में कर रहा था फ्री सफर

● टिकट चेकिंग स्टाफ की सतर्कता से हुआ खुलासा, आरोपी को जीआरपी के सुपुर्द किया गया

चमकता राजस्थान। आगरा संवाददाता। गाड़ी संख्या 20403 प्रयागराज एक्सप्रेस में टिकट चेकिंग स्टाफ ने एक फर्जी रेलवे अधिकारी को पकड़ा, जो बिना टिकट एसी कोच में यात्रा कर रहा था। यह कार्रवाई मंडल रेल प्रबंधक आगरा तेज प्रकाश अग्रवाल और वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक अमित आनंद के मार्गदर्शन में की गई। इस घटना में ट्रेन टिकट निरीक्षक मुकेश मीना और राजेश मीना को मथुरा जंक्शन से यात्रा कर रहे एक यात्री पर संदेह हुआ। यह यात्री अपने आप को रेलवे बोर्ड का अधिकारी बताकर फर्जी आईडी कार्ड दिखा रहा था और एसी कोच में मुफ्त यात्रा कर रहा था। टिकट निरीक्षकों ने जब आरोपी से आईडी कार्ड की मांग की, तो वह संकोच करने लगा और अपनी पहचान स्पष्ट नहीं कर पाया। इस पर चेकिंग टीम को संदेह हुआ और उन्होंने आरोपी से गहरे सवाल किए। जब आरोपी अपनी कहानी सही तरीके से नहीं बता सका और आईडी कार्ड दिखाने से इनकार कर दिया, तब टीम को यह सुनिश्चित हो गया कि वह फर्जी अधिकारी है। इसके बाद आरोपी को तत्काल जीआरपी के हवाले कर दिया गया।

जीआरपी ने आरोपी से पूछताछ शुरू कर दी है और यह पता लगाने की कोशिश की जा रही है कि वह कब से इस फर्जीवाड़े को अंजाम दे रहा था और इस तरह के धोखाधड़ी के मामलों में उसकी क्या भूमिका रही है। आरोपी के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाएगी। उसे इटावा रेलवे स्टेशन पर राजकीय सुरक्षा बल को सौंपा जाएगा, जहां उसके खिलाफ मुकदमा दर्ज कर उसे न्यायिक प्रक्रिया के तहत सजा दिलवाने के लिए कदम उठाए जाएंगे। रेलवे अधिकारियों ने इस घटना को एक सख्त संदेश माना है। और जनता से अपील की है कि वे ऐसी गतिविधियों की सूचना तुरंत रेलवे सुरक्षा बल को दें। इस प्रकार की धोखाधड़ी से रेलवे को वित्तीय नुकसान होता है। और यात्रियों की सुरक्षा भी खतरे में पड़ सकती है।

हुकुमचंद स्कूल व धौला दांता स्कूल के बीच हुआ फाइनल मुकाबला

हुकुमचंद पब्लिक स्कूल ने जीती हुकुमचंद मेमोरियल ट्रॉफी

चमकता राजस्थान /

रघुनंदन पारीक /श्रीनगर/ अजमेर , पुष्कर। हुकुमचंद पब्लिक सीनियर सेकंडरी विद्यालय अजमेर के द्रोणाचार्य खेल परिसर में दिनांक 20 नवंबर से चल रहे, हुकुमचंद मेमोरियल क्रिकेट कप के आज अंतिम दिवस पर फाइन मेंल मैच हुकुमचंद पब्लिक सीनियर सेकंडरी विद्यालय अजमेर एवं राजकीय धौला दाता विद्यालयके बीच खेला गया, जिसमें हुकुमचंद पब्लिक सीनियर सेकंडरी विद्यालय के खिलाड़ियों ने मेमोरियल ट्रॉफी जीती एवं राजकीय धोलादांता, न्यारा के

विद्यार्थियों ने रनरअप ट्रॉफी जीती। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्रीमान पृथ्वी सिंह जी गॉड, वीर पार्षद एवं विशिष्ट अतिथि विद्यालय निदेशक डॉ. दिनेश चंद्र शर्मा जी रहे । कार्यक्रम में विद्यालय सचिव डॉ.वेद प्रकाश विद्यार्थी जी ,उपनिदेशक मृत्युंजय शर्मा जी एवं विद्यालय प्रधानाचार्या श्रीमती हेमलता पाठक , हुकुमचंद पब्लिक स्कूल, हिंदी मीडियम प्रधानाचार्या श्रीमती रत्ना गौड जी उपस्थिति रही। हुकुमचंद पब्लिक सीनियर सेकंडरी विद्यालय के आशीष सैनी ने लगातार तीन छक्के हुए चार विकेट लेकर मैन ऑफ द मैच का खिताब अपने नाम किया।मैन ऑफ द मैच की सीरीज के विजेता हुकुमचंद सीनियर सेकेंडरी स्कूल के छात्र कुलदीप मीणा रहे और अमेजिंग खिलाड़ी जसमीत बुमराह दौला डाटा विद्यालय से रहे । कार्यक्रम के अंत में प्रधानाचार्य हेमलता पाठक जी ने खेल प्रशिक्षकों श्रीमान सोनू गहलोत जी , श्रीमान हनुमान राम चैधरी जी एवं विद्यार्थियों को बहुत बधाई दी एवं सभी अतिथियों को धन्यवाद ज्ञापित किया।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक अभय सिंह चौहान के लिए एम बी प्रिंटर्स, सी 74 सुदर्शन पूरा, जयपुर से मुद्रित एवं 1ए देवी नगर विस्तार, देवी नगर गली नं. 6 जयपुर 302019 से प्रकाशित। सम्पादक : अभय सिंह चौहान,
मोबाइल : 9314505000 (पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार) संपादक : खलील कुरैशी, मोबाइल : 7891542929